

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड १५

सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा

जल-पाँजि

मूल साहित्यकार

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड १५

जल-पाँजि

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय . खण्ड १५

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड — १५

जलपाँजि

सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय विवरण

शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड : १५

आलोचनाक विषय : जल-पाँजि — सम्पूर्ण उपन्यासक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल पोथीक अधिकार-सूचना : © गजेन्द्र ठाकुर/ प्रीति ठाकुर, २०१३/२०२६

कॉपीराइट : © प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर

संस्करण : २०२६

पुस्तकाकार : ६ × ९ इंच

सर्वाधिकार सुरक्षित।

भूमिका

‘जल-पाँजि’क आरम्भमे नदीक जल, पुरान पाँजि आ दिन-दिनक दैनिकी तीन पृथक लेखन-पद्धतिक रूपमे उपस्थित अछि। नदी भूगोल बदलैत अछि; पाँजि वंश आ सामाजिक सम्बन्धक निरन्तरता देखबैत अछि; दैनिकी घटनाक समयक सीमा निश्चित करबाक यत्न करैत अछि। पहिल पाँच अध्यायमे उपन्यास एही तीनूक भीतरक अन्तरकैँ कथानकक मूल तनाव बनबैत अछि। एतय कथाक प्रश्न केवल के बचल आ के डुबल नहि, बल्कि के अभिलेखमे जगह पाओल, ककर कथन विश्वसनीय मानल गेल, आ कोन रिक्ति केकर इच्छासँ उत्पन्न भेल—ई अछि।

पहिल तीन अध्याय दिनाङ्कित, विवरणप्रधान आ रामानुग्रह मिश्रक आत्मवृत्तान्तक निकट अछि। चारिम अध्याय ‘कोसी — १’मे एकाएक नदीक प्रथमपुरुष स्वर आबि जाइत अछि; पाँचम अध्याय फेनु रामानुग्रहक अनिश्चित पठनमे घुसैत अछि। एहि फेरबदलसँ मनुष्यक बनाओल समय-सारिणी आ भूआकृतिक प्रक्रियाक दीर्घ समय आमने-सामने आबैत अछि। नदी आ पाँजि दुनू अविराम रूपान्तरित होइत अछि, मुदा दुनूक परिवर्तनक कारण, चिन्ह आ साक्ष्य एक नहि।

पाठकक नजरिसँ ई आरम्भ एक अन्वेषणक बीज अछि, निर्णय नहि। कोसीक तटबन्धमे टूटनक समाचार, भीजल गट्टरक आगमन, पाँजी-पद्धतिक सात नियम आ तीन नामक अधूर कड़ी—चारू बात आरम्भिक साक्ष्य अछि। पाँचम अध्याय समाप्त होइत काल कोनो अपराध अथवा षड्यन्त्र प्रमाणित नहि भेल अछि। एहि अनिश्चितताक संरक्षणे उपन्यासक पहिल कलात्मक उपलब्धि अछि।

एहि खण्डमे उपन्यासक सम्पूर्ण अड़तालीस अध्यायक स्वतंत्र साहित्यिक विवेचन, अध्याय-समूहसभक तुलनात्मक अध्ययन आ अन्तमे समेकित आलोचनात्मक मूल्याङ्कन प्रस्तुत अछि।

अनुक्रमणिका

अध्याय १ — कुसहा.....	८
अध्याय २ — पोथीक गट्टर.....	१२
अध्याय ३ — पँजीकारक विधि.....	१५
अध्याय ४ — कोसी — १.....	१९
अध्याय ५ — तीन नाम.....	२२
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय १-५.....	२६
अध्याय ६ — मोहनक फोन.....	३०
अध्याय ७ — कैम्प.....	३३
अध्याय ८ — मेटाओल पाँति.....	३६
अध्याय ९ — धरती हिलल.....	३९
अध्याय १० — साक्षी एक: पुरोहित.....	४२
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ६-१०.....	४६
अध्याय ११ — साक्षी दुइ: भौजी.....	५०
अध्याय १२ — कोसी — २.....	५४
अध्याय १३ — साक्षी तीन: हरवाह.....	५६
अध्याय १४ — साक्षी चारि: पँजीकार.....	६०
अध्याय १५ — जे लिखल नहि गेल.....	६४
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ११-१५.....	६८
अध्याय १६ — १९३४क बाढ़ि.....	७३
अध्याय १७ — सन्धि.....	७६
अध्याय १८ — नक्शा.....	७९
अध्याय १९ — कोसी — ३.....	८२
अध्याय २० — भीतरका गाम.....	८४
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय १६-२०.....	८८
अध्याय २१ — दुइ मिथिला.....	९२
अध्याय २२ — विवाह.....	९५

अध्याय २३ — अकाल १९६६.....	१८
अध्याय २४ — इन्जीनियर बाबू.....	१०१
अध्याय २५ — चुप्पी.....	१०४
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय २१-२५.....	१०७
अध्याय २६ — कोसी — ४.....	११०
अध्याय २७ — अनुराधाक स्वर-सन्देश एक.....	११४
अध्याय २८ — देह आ जाति.....	११८
अध्याय २९ — स्वर-सन्देश दुइ.....	१२२
अध्याय ३० — हड्डी.....	१२५
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय २६-३०.....	१२९
अध्याय ३१ — मोहनक स्वीकार.....	१३३
अध्याय ३२ — जकर नाम नहि.....	१३६
अध्याय ३३ — मस्कट.....	१३९
अध्याय ३४ — कोसी — ५.....	१४२
अध्याय ३५ — हम सभ.....	१४४
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ३१-३५.....	१४७
अध्याय ३६ — गाम जे खाली भेल.....	१५०
अध्याय ३७ — स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच.....	१५३
अध्याय ३८ — पँजीकारक ग्राहक.....	१५६
अध्याय ३९ — कोसी — ६.....	१५९
अध्याय ४० — काठमाण्डू आ मधेस.....	१६१
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ३६-४०.....	१६५
अध्याय ४१ — घुरब.....	१६९
अध्याय ४२ — तीन पीढ़ी एक कोठली.....	१७२
अध्याय ४३ — कोसी — ७.....	१७५
अध्याय ४४ — प्रति-पाँजि.....	१७७
अध्याय ४५ — जे बाँचल.....	१८०
तुलनात्मक अध्ययन · अध्याय ४१-४५.....	१८३

अध्याय ४६ — नाम लिखब.....	१८६
अध्याय ४७ — मृत्यु आ पोथी.....	१८९
अध्याय ४८ — कोसी — द.....	१९३
तुलनात्मक अध्ययन . अध्याय ४६-४८.....	१९७
सम्पूर्ण उपन्यासक समेकित मूल्याङ्कन.....	२००

अध्याय १ — कुसहा

मूल उपन्यास, पृष्ठ १-५ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

१८ अगस्त २००८क प्रातःसँ साँझ धरि कथा अगुआ रामानुग्रह मिश्रक दैनिकी चलैत अछि। पहिल दू प्रविष्टि दूधक घटल परिमाण आ पूर्वक कोठलीक भीजल देबालसँ सम्बन्धित अछि। महान बाढिक भयावह नामसँ पहिने घरक अति सामान्य लेख प्रस्तुत करब रचनाक एक सूक्ष्म कालगत युक्ति अछि। घटना जखन घटि रहल होइत अछि, तखन अनुभव ओकर सम्पूर्ण महत्त्व पहिने सँ नहि जानैत। कथावाचक अपन पछिला ज्ञानक सहायतासँ आरम्भिक समयकें कृत्रिम रूपें नाटकीय नहि बनबैत। 'कुसहा' शीर्षक पाठककें जे ऐतिहासिक संकेत दैत अछि, दैनिकी ओकरा क्रमशः प्राप्त करैत अछि। एहि भेदसँ पाठकक ज्ञान आ पात्रक तत्काल ज्ञानक बीच अर्थपूर्ण दूरी बनैत अछि।

६ बजि ४० मिनटसँ आरम्भ भेल समय-लेखन ८ बजि ५ मिनटक लिपिकक फोन आ ८ बजि २३ मिनटक मोहनक फोनसँ एक नब स्तरपर पहुँचैत अछि। विरपुर दिसक लिपिक 'ऊपर'क अस्पष्ट समाचार दैत अछि, मोहन जल संसाधन विभागक 'दफ्तरमे' होयबाक उत्तर। कथावाचक पूछि रहल छथि जे 'ऊपर' कतय अछि आ 'दफ्तर' कोन ठाम अछि। शब्दक भौगोलिक अर्थ आ प्रशासनिक अर्थक ई टकराव साधारण संवादमे शासनक अस्पष्ट उत्तरदायित्वकें दृश्य बनबैत अछि। एक लोक लेल ऊपर नदीक उर्ध्वप्रवाह, दोसर लेल राजधानी, तेसर लेल अधिकारीक पदानुक्रम। शब्द एक, किन्तु अधिकारक स्रोत अनेक।

मोहनक कथनमे बारहम किलोमीटरक आसपास कटानक उल्लेख पहिने अस्पष्ट रहैत अछि; पछाति पाँच अगस्तसँ सूचना होयबाक बात अबैत अछि। ई सूचना रामानुग्रह सुनैत छथि, मुदा हम समीक्षा मे एकरा स्वतंत्र ऐतिहासिक तथ्य नहि बनबैत छी। उपन्यासक भीतर ई मोहनक कथन अछि, जाहिसँ अधिकारीक ज्ञान आ पिता समक्ष ओकर सम्प्रेषणक अन्तर पढल जा सकैत अछि। कथावाचक जे समयसँ सूचना चलि रहल छल, तकर लिखित

साक्ष्य माँगैत छथि। पितृ-चिन्ता आ प्रमाण-जिज्ञासा एक्कहि वार्तालापमे मिलैत अछि, मुदा दुनूक प्रयोजन सदैव एक नहि।

१ बजिक तीन फोनमे मजूर, बोल्टर आ निर्देशक प्रतीक्षा प्रस्तुत अछि।

रामानुग्रह एहि फोनक समय लिखैत छथि, किन्तु फोन करनिहारसभक नाम नहि। अपनहि प्रविष्टिक एहि कमी पर हुनकर पछिला असुविधा महत्त्वपूर्ण अछि: नाम नहि रहलासँ उत्तरदायित्व व्यक्तिसँ सरकि पद-व्यवस्था दिस जाइत अछि। ई आत्मालोचना कथावाचककें निष्कलङ्क सर्वज्ञाता नहि बनबैत; उलटे लिखनिहारक चयनसँ प्रमाणक रूप बदलि जाइत अछि, से देखबैत अछि। एतय लेखनक नैतिक प्रश्न घटनाक वर्णनक भीतर सँ जन्म लैत अछि, बाहर सँ उपदेशक रूपमे नहि।

दिनक मध्य समयमे कथा ध्वनिक विचित्र संरचना रचैत अछि। १० बजि ४१ मिनट पर बाँसक झुरमुटसँ मोट रस्सी ढील होयबाक जकाँ आवाज; ११ बजि २ मिनट पर मोहनक अधूर 'बाबूजी, सुनू—'; फेर फोनक कटब; २ बजि १० मिनट पर मस्जिदक अधूर घोषणा आ २ बजि १८ मिनट पर मन्दिरक असामयिक घंटा। दृश्य पूर्ण नहि देखाइत, संकेत ध्वनिक माध्यमसँ पहुँचैत अछि।

कथावाचकक दैनिकी आवाजकें लिखित वाक्यमे बदलबाक प्रयत्न करैत अछि, किन्तु ध्वनिक जे अंश नहि सुनल गेल ओकरा कल्पनासँ भरैत नहि। एहि संयमसँ संकट मूर्त होइत अछि।

कुसहाक नाम दैनिकीमे १२ बजि १६ मिनट पर 'पूर्वी तटबन्ध' आ प्रश्नचिह्नक संग आवैत अछि। १ बजि २७ मिनट पर मोहनक 'कटि गेल' कथनक पछाति वस्तु पहिने अस्पष्ट, फेर 'बान्ह' स्पष्ट होइत अछि; टूटनक परिमाण तखनहुँ अनिश्चित अछि। कतहुँ घटना भयावह निर्णायक घोषणासँ नहि, बल्कि अनेक अधूर सूचनाक जमा होयबासँ बनैत अछि। सत्यक ई क्रमिक उद्घाटन पाठककें दैनिकी पढ़बाक अभ्यास सिखबैत अछि: समय लिखल होयब आ बात निश्चित होयब एक बात नहि।

१९६३क सर्वे-सूचीक खोज एहि अध्यायकें तत्काल आपदासँ पुरान नदी-पथ आ गामक ऐतिहासिक अभिलेख दिस घुमबैत अछि। सेवानिवृत्त अभियन्ता पुरान धारक सूची पुछैत छथि; रामानुग्रह एक परिवारक पाँजिसँ गामक नाम जोड़ि देखैत छथि। एतय पाँजि वंश-पत्र मात्र नहि रहि भूमि आ प्रवासक परोक्ष स्मृति बनैत अछि। मुदा नक्सा आ पाँजि केँ एक मानि देल नहि जाएत। दुनू कागज पृथक संस्थागत उद्देश्यसँ तैयार भेल छल, आ एहि अन्तर्क कारणे जाँच आवश्यक बनैत अछि।

तीन बजे पछाति सूची-संस्कृतिक नैतिक उलटफेर देखाइत अछि। रामानुग्रह अपन भूमिक कागज, बैंकक पासबुक, राशन-कार्ड, सन्तानक प्रमाणपत्र आ बीमा-पत्र सँ अलग पुरान पाँजि सम्हारैत छथि। चारि बजि दू मिनट पर सहायक कर्मचारी जनबैत अछि जे 'जिनका हटेबाक अछि' हुनक सूची बनि रहल अछि। जखन प्राणरक्षाक सूची बनैत अछि, तखन नाम लिखबाक कार्य भविष्य-निर्णायक होइत अछि। पाँजीकारक अपन कागज बचेबाक आग्रह आ बाहर निकलैत लोकक तात्कालिक आवश्यकता एक-दोसरक सामने अछि। वृद्धक वस्तु-आसक्ति सामाजिक निरपेक्षता नहि; परिवार, स्मृति आ जीविकाक समेकित भय अछि।

अन्तिम प्रविष्टिमे पोथी 'सुरक्षित मानल' गेल अछि। पछिला समयक कथावाचक 'सुरक्षित' शब्द पर लाल स्याहीसँ रेखा खींचैत छथि, शब्द काटैत नहि। ई कलात्मक समापन अत्यन्त सटीक अछि: पुनर्पाठ पूर्व कथनकेँ नहि मेटबैत, ओकर निश्चितता बदलैत अछि। पाठक बुझैत अछि जे दैनिकी स्थिर लिखित वस्तु होइतो समयक संग संशोधित होइत अछि। एतय वक्रोक्ति लाल रेखाक भीतर अछि, जकर अर्थ घटना पूर्ण भेलापर बदलि जाइत अछि।

एहि अध्यायक सीमा सेहो नोट करबाक अछि। मिनट-मिनटक प्रविष्टि कभी-कभी संवेदनात्मक विस्तारकेँ बाधित करैत अछि; पड़ोसी, लिपिक, अधिकारी सभक आवाज दस्तावेजी कार्यक अधीन रहैत अछि। मुदा ई एकर उद्देश्य-

नियन्त्रित सीमा अछि: उपन्यास पहिल अध्यायमे व्यक्तिक भयक सीधा विलाप नहि, लिखित सूचनाक टूटन देखबैत अछि। सामाजिक आ भावात्मक गहराइ अगिला अध्यायमे भोला सहनीक प्रवेशसँ बढबाक संकेत एतहि उपस्थित अछि।

अध्याय २ — पोथीक गट्टर

मूल उपन्यास, पृष्ठ ६-११ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

दोसर अध्याय १९ अगस्त २००८क दैनिकीसँ आरम्भ होइत अछि, मुदा पहिल अध्यायक निरन्तर मिनटवार अनुशासन टूटि गेल अछि। बिहानक समय नहि लिखल, कतहु चारि अँगुर रिक्ति; तकर बाद अत्यल्प वाक्य—एक गट्टर आएल। ई रिक्ति अल्पशब्दी कथनक अलंकार मात्र नहि। बाढिक अगिला दिन रामानुग्रहक समय-लेखन सेहो क्षतिग्रस्त अछि। पहिल अध्यायमे घटना अपूर्ण सुनाइत छल; एतय समयक अभिलेख स्वयं अधूर अछि।

भोला सहनीक आगमन अध्यायक पहिल मानवीय निर्णायक घटना अछि। ओ नाव चलबैत अछि; ओकर बाबू विवाह-सम्बन्धक लेल पँजीकारक घर आएल छलाह, मुदा मूल-ग्राम अभिलेखमे नहि लिखल गेल। एहि सूक्ष्म पुरान जानकारीसँ भोलाक सामाजिक उपस्थिति आ पाँजिमे ओकर अपूर्ण उपस्थिति अलग-अलग बनैत अछि। भोला दरबज्जा पर भीजल बोरा आनैत अछि।

रामानुग्रह प्रश्न करैत छथि—कतय भेटल, ककर घरसँ उठाओल? भोलाक उत्तर जे कात्हि जतय घर छल आ आब 'घर नहि छल' विनाशक दृश्यकें विस्तारक बदला तीक्ष्ण अनुपस्थितिमे देखबैत अछि। घरक नष्ट होयबासँ गामक नामक अर्थ सेहो हिलि जाइत अछि।

जूटक बोरा, बाँसक फट्टी, लाल भीजल कपड़ा, कारी सूत, ताड़पत्र, हस्तनिर्मित आ मशीनक कागज, कौड़ी, तामाक सिक्का, अधकटल टिकट, मृत्युक तिथि आ अपूर्ण विवाह-लेख—एहि सूचीसँ वस्तुक एक असाधारण आख्यान बनैत अछि।

सत्ताइस ताड़पत्र आ चवालीस हस्तनिर्मित पन्नाक गिनती देल गेल, मुदा सटल पातक कारण संख्या पर प्रश्नचिह्न राखल गेल। यथार्थवादी विवरण एतय प्रमाणक विश्वसनीयता उत्पन्न करैत अछि, साथहि ओहि विश्वसनीयताक सीमा सेहो जनबैत अछि। गिनती अंतिम सत्य नहि, देखल अवस्थाक प्रारम्भिक दर्जा अछि।

सूचीमे 'एक पन्ना पूर्ण रिक्त', 'एक पन्ना पर केवल श्री', 'एक पन्ना पर सम्बन्ध', नाम बिना तिथि आ तिथि बिना नाम जेकाँ वस्तु-कण एहि उपन्यासक व्यापक शिल्पकें घनत्व दैत अछि। मानव-जीवनक निरन्तरता यहाँ आधा बचल चिह्न सभक सहायतासँ पढ़ल जाइत अछि। जल स्याही पसरबैत अछि, मुदा कतहु पुरान लेखनीक दबाव बचि जाइत अछि। कागजक देह आ मानवीय स्मृतिक देहक बीच ई समीपता ध्वनिक कार्य करैत अछि: जे पढ़ाइत नहि, सेहो जीवनक कोनो अवशिष्ट चिन्ह होइत अछि। तथापि पाठ क्षतिग्रस्त चिह्नकें स्वतः जीवनीक प्रमाण नहि मानैत।

रामानुग्रहक वस्तु-संरक्षणक प्रक्रिया विलम्बित क्रियाक रूपमे लिखल अछि। भीजल पन्ना बलसँ नहि खोलब, धूपसँ बचाएब, हवा नियंत्रित करब, पीढ़ा पर ईंट आ बाँसक चचरी रखब, कपड़ाक तह बदलब—ई सभ ठोस क्रिया कथा के गति धीमी करैत अछि। बाहर लोकक पलायन जारी अछि, भीतर पँजीकारक सावधान पठन। एहि विरोधमे संवेदनशीलता अछि, मुदा तनाव सेहो: कोनो पुरान पातक जीवन बचेबाक यत्न मानव-संकटक समानान्तर चलैत अछि। कथाकार एहि प्रयासकें निःशर्त महिमामण्डित नहि करैत; भोला प्रश्न करैत अछि जे 'बाँचत?' आ उत्तरमे 'कागज?' पूछलासँ वस्तु आ लोकक अर्थ टकराइत अछि।

भोला गट्टरक आगमनक साक्षी छथि कि नहि, ई प्रश्न कथामे महत्त्वपूर्ण अछि। रामानुग्रह ओकरा 'प्राप्तिक साक्षी' मानैत छथि, न कि गट्टरमे लिखल प्रत्येक बातक साक्षी। साक्ष्यक अधिकार-क्षेत्रक ई परिभाषा नव्य न्यायक प्रमाणविचारक निकट जाँचल जा सकैत अछि: प्रत्यक्ष देखल घटना, दोसरक कहल बात आ कागजमे दर्ज पुरान सूचना अलग प्रमाण-प्रकार अछि। भोला वस्तु आनने अछि, लेकिन ओकर स्वामित्व प्रमाणित नहि; प्राप्ति आ स्वामित्वकें एक करब हेत्वाभास होयत। उपन्यास एकर व्यावहारिक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

दोसर महत्त्वपूर्ण रचना पिता-पुत्रक वार्तालाप अछि। मोहन गट्टरक गामक नाम सुनि चुप भऽ जाइत अछि, रामानुग्रह १९६३क सूचीसँ मेलक बात नहि कहैत छथि, आ मोहन तटबन्धक सूचना नहि दैत अछि। वृद्ध कथावाचक एतय तत्कालक अभिलेख आ पछातिक बोध अलग रखैत छथि। 'दूटा पृथक अभिलेख'क सङ्केत पात्रक मनक समानान्तर पाँति बनबैत अछि। तथापि मोहनक मौनक कारण एखन सिद्ध नहि। पाठककेँ सम्भावना भेटैत अछि, अभियोग नहि।

अध्यायक अन्तमे लाल स्याहीक पाँति, तीन अधपढल नाम आ अगिला वंश-पाँतिक भीजल उज्जर ठाम दृश्य बनैत अछि। पहिले जल-क्षतिक अनुमान करैत छथि, मुदा 'प्रतीत' शब्द जोड़ैत छथि। ई शब्दक भार अत्यन्त पैघ अछि। कथा एक सहज व्याख्याक संग ओकर प्रमाणगत आरक्षण राखैत अछि। एही सँ उपन्यासक आगामी रहस्य जादुई चमत्कार पर नहि, अभिलेखक अपूर्णता पर आधारित बनैत अछि।

एहि अध्यायक आलोचनात्मक सीमा वस्तु-सूचीक अत्यधिक विस्तारमे देखि सकैत छी: बहुत वस्तुक क्रमिक गणना कतिपय पाठक लेल प्रवाह रोकि सकैत अछि। किन्तु लेखक ओहि विस्तारकेँ संरचनात्मक साधन बनौने छथि—यदि नामक गिनती त्रुटिपूर्ण होए, वंशक निष्कर्ष खतरनाक बनि सकैत अछि। एक टूटल तुलसीदल 'मूलतः एक' कहि सुधारल जाएब वस्तु, संख्या आ अर्थक सम्बन्धक लघु रूपक अछि। एहि सूक्ष्म निरीक्षणसँ पोथीक गट्टर केवल कथानकक सामग्री नहि, पढबाक नैतिक अनुशासन बनि जाइत अछि।

अध्याय ३ — पँजीकारक विधि

मूल उपन्यास, पृष्ठ १२-१७ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

तेसर अध्याय उपन्यासक भीतर एक प्रकारक आत्मविधान प्रस्तुत करैत अछि। रामानुग्रह अपरिचित गट्टर पढ़बाक पहिने अपन सात नियम लिखैत छथि— पहिचान, मूल, ग्राम, अधिकार, सम्बन्ध, साक्ष्य आ अभिलेख। पद्धति पहिने तय करबाक एहि प्रयत्नक कारण कथावाचक स्वयं स्पष्ट करैत छथि:

मनोनुकूल पाँतिकेँ प्रमाण आ बाधक पाँतिकेँ जल-क्षति मानि लेनाइ पँजीकारक काज नहि। एहि अंशमे उपन्यास पाठकक सामने अनुसन्धायक निष्पक्षताक कसौटी राखैत अछि। नियम पुस्तकक भीतर पात्रक निर्माण अछि; एकरा बाहरी इतिहासक अक्षरशः संहिता मानब उचित नहि।

पहिचानक विवेचनमे ‘वाचस्पति मिश्र’ नामक तीन पुरुषक उदाहरण अत्यन्त सफल अछि। नाम एक सन, किन्तु पिता हरिनाथ, हरिनारायण आ हरिहर। नामक समानता लोकक समानता नहि। ई दृष्टान्त अगले ‘तीन नाम’ अध्यायक प्रत्यक्ष पठनक तैयारी करैत अछि। व्यक्तिकेँ केवल उपनामसँ चिन्हि लेब तर्कक दृष्टिसँ अनुचित सामान्यीकरण होयत। नाम, पिता, पितामह, मातृपक्ष आ गामक युग्मित परीक्षणक आग्रह लेखकीय अनुसन्धानक अनुशासनकेँ कथा-कर्ममे बदलबैत अछि।

मूलक विवेचन गोत्र आ विशिष्ट वंशारम्भक बीच भेद रखैत अछि। पुरान पातक वर्तनीकेँ अपन मनसँ ‘सुधारि’ नहि देबाक बात अभिलेखीय व्याख्याक महत्त्वपूर्ण सीमा अछि। समाजमे एक अक्षरक भिन्नता विवाह-सम्बन्धक निर्णय बदली सकैत अछि। कथाकार भाषाक रूपभेदकेँ भूल कहि हटेबाक बदला स्रोत, काल आ लिखनिहारक संग जोड़ि पढ़ैत छथि। एहि बिन्दुपर शब्दक निखार आ मूल उद्धरणक संरक्षणक बीच आवश्यक अन्तर स्पष्ट होइत अछि।

ग्रामक सूत्र उपन्यासक भौगोलिक बुद्धिकेँ एक नयाँ क्षेत्र दैत अछि। वंशक ग्राम, वर्तमान निवास, विस्थापनक ग्राम आ राजस्वक ग्राम सब एक नहि।

नदीक मार्ग, प्रशासनिक सीमारेखा आ लोकस्मृतिक सीमा अलग गतिक होइत

अच्छि। 'एखन कतय' आ 'तखन कतय'क प्रश्नक भेद इतिहासक कागज पर कालक प्रामाणिकता माँगैत अच्छि। ई विचार पहिल अध्यायक १९६३क सूची आ गट्टरमे भेटल अनाम गामक संग जोड़ैत अच्छि। एहि आधारपर विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि समय, नदी-भूगोल, वंश आ राजस्व-अभिलेखक अलग पाँति एकठाम रखि तुलना करैत अच्छि; एक स्रोतकें दोसरक प्रतिरूप नहि बनवैत।

अधिकारक खण्डमे विवाह-योग्यता आ अभिलेखक अनुमोदनक प्रश्न अच्छि। अपूर्ण साक्ष्यमे निर्णय स्थगित करब अपमान नहि, एहन आत्मसंयम पात्र व्यक्त करैत छथि। मुदा अधिकारक सामाजिक राजनीति केवल विवाहक नियमधरि सीमित नहि, से बादमे हुनका स्वयं बुझाईत अच्छि: केकर नाम प्रविष्टि पाबि रहल अच्छि? एहि प्रश्नसँ अधिकार ज्ञान-व्यवस्थाक अधिकार सेहो बनैत अच्छि। नियम जखन सामाजिक वैधताक द्वार हो, तखन नियमक संरचनासँ बहिष्करणक सम्भावना उत्पन्न होइत अच्छि।

सम्बन्धक खण्डमे पितृक्रमक साथ मातृपक्षक जाँचक आग्रह विशेष उल्लेखनीय अच्छि। गुरु पूछैत छलाह—'माए कतय गेली?' कथावाचकक अपन पूर्व चूक स्वीकारल गेल अच्छि। पाँजि पुरुषक नामसँ भरल होयब मातृवंशक अप्रासंगिकताक प्रमाण नहि। ई वाक्य उपन्यासमे स्त्रीक कम अभिलेखन आ सामाजिक अपरिहार्यताक बीच विरोध खोलैत अच्छि। तथापि वर्तमान पाँच अध्यायमे स्त्री-पात्रक स्वतंत्र आवाज एखन अत्यल्प अच्छि; ई प्रारम्भिक कलात्मक सीमा कथानकक आगामी विस्तार लेल प्रश्न छोड़ैत अच्छि।

साक्ष्यक खण्डमे पुरान पाँति, पछिला प्रमाणित अभिलेख, जीवित साक्षीक कथन आ बाहरी कागज—चारि स्रोतकें स्वयंसिद्ध समान भार नहि देल गेल अच्छि। लिखित अभिलेखकें अचूक मानबाक प्रवृत्तिक विरुद्ध ई महत्त्वपूर्ण चेतावनी अच्छि। प्रत्यक्ष ज्ञान, स्मृतिजनित कथन आ दस्तावेजक परस्पर मिलान आवश्यक अच्छि। 'हम सुनने रही' कें 'हम देखलहुँ' नहि बनाउ, ई कथावाचकक सूत्र अनुमान आ प्रत्यक्षक सीमा स्पष्ट करैत अच्छि। जँ पुरान

पाँति गलत हो तँ ओकर प्राचीनता सत्यक पर्याप्त हेतु नहि। एहि सीमाक पहिचान सत्य-अनुसन्धानकेँ कठिन, मुदा विश्वसनीय बनबैत अछि।

अभिलेखक सातम नियम पुरान लेख काटि नष्ट नहि करबाक, संशोधन अलग लिखबाक आ जल, दीमक, हाथ आ इच्छासँ भेल क्षतिक भेद करबाक अछि। ई नियम अपनहि पहिने लिखल 'नष्ट प्रतीत' पर प्रश्न उठबैत अछि। तखन रामानुग्रह दैनिकीमे कारण फेर जाँचबाक चिह्न जोड़ैत छथि। स्वयं पर अपन नियम लागू करबाक घटना नियमक वास्तविक मूल्य सिद्ध करैत अछि। बिना ई आत्मपरीक्षा सात नियम एक सुन्दर भाषण भऽ रहि सकैत छल; आत्मसमीक्षासँ ओ चरित्रक नैतिक संघर्ष बनि जाइत अछि।

गुरुक आठम मौखिक नियम, ग्राहकक इच्छा आ अभिलेखक कथनक अन्तर, अध्यायक सबसँ कठिन आत्मस्वीकृतिक भूमिका बनबैत अछि। रामानुग्रह बुझैत छथि जे अपन इच्छा सेहो निरपेक्ष नहि। अपन कुल, भय, लाभ आ पारिवारिक सम्बन्ध हुनका प्रभावित करि सकैत अछि। तँ अपन वंशक अभिलेख अकेले नहि लिखबाक चेतावनी निःस्वार्थ आचरणक घोषणासँ पैघ अछि: ई निष्पक्षता लेल संस्थागत जाँचक आवश्यकता स्वीकारैत अछि। न्याय-पद्धति जँ केवल अन्यक भूल पकड़य आ स्वयंकेँ मुक्त मानय, तँ ओकर वैधता कमजोर होइत अछि।

पछिला अंशमे वृद्ध आगन्तुक अपन पुरखा-गामक अधिकार पूछैत छथि; नाम नहि भेटल। रामानुग्रहक उत्तरक सीमा निश्चित अछि—एखन पढ़ल भागमे नाम नहि भेटल। 'नहि भेटल' सँ 'नहि छल'क छल्लाँग रोकी देब नकारात्मक साक्ष्यक उचित प्रयोग अछि। मुदा सामाजिक अन्तर्विरोध कायम अछि: जकर स्मृति सशक्त अछि, ओकरा लिखित प्रवेश चाही; जकर दस्तावेज अधूर अछि, ओकर स्थिति स्थगित। पद्धति स्वतः न्यायपूर्ण परिणामक आश्वासन नहि दैत। एहि अनिश्चितताक स्वीकारे अध्यायकेँ ग्रन्थक सबसँ विचारशील अध्यायसभमे एक बनबैत अछि।

रचनागत दृष्टिसँ सात क्रमांकित सिद्धान्तक लम्बा विवेचन कथा-गतिकेँ जानि-बुझि कऽ विराम दैत अछि। ई विराम औपचारिक भाषणक जोखिम लैत अछि, किन्तु पन्ना सुखेबाक क्रिया, अनिश्चित खरोंच, आगन्तुकक प्रश्न, मोहनक रातिक फोन आ गुरु-स्मृति ओकरा दृश्यसभक संग बाँधैत अछि। परिणामतः नियम केवल बताओल नहि, जाँचल जाइत अछि। अन्तिम विचार—लिखल बातक विधि आ जानि-बुझि नहि लिखल बातक विधि अलग होयब—आगाँक अज्ञात अन्वेषणक धरातल निश्चित करैत अछि।

अध्याय ४ — कोसी — १

मूल उपन्यास, पृष्ठ १८-१९ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

चारिम अध्यायमे रामानुग्रहक दिनाङ्कित वाक्य एकाएक हटि जाइत अछि आ कोसी स्वयं 'हम' कहि बाजैत अछि। एहि स्वरमे न तिथि अछि, न क्रमशः विरामक परम्परागत व्यवस्था, न जाँचक प्रश्नचिह्न। लगभग एक सतत प्रवाह जकाँ गद्य बहैत अछि। एहि औपचारिक परिवर्तनक उद्देश्य नदीकें मनुष्यक दैनिकी जकाँ बयान देनाइ नहि, नदीक प्रक्रियात्मक समय आ मानवीय अभिलेखक समयक भेद प्रदर्शित करब अछि। पहिल तीन अध्याय मनुष्यक कागज व्यवस्थित करैत अछि; चारिम अध्याय कागजक बाहरक पदार्थ-गतिकें कथनक स्थान दैत अछि।

नदी अपन बहबकें निर्धारित बाटपर चलबासँ अलग बतबैत अछि। बालू उठेनाइ, बालू छोडनाइ, कछेर काटनाइ, नव कछेर बनबेनाइ, पुरान धारक रेखा माटिक भीतर रहि जाएब—ई सब क्रियाक समुच्चय अछि। एतय नदी भौगोलिक नक्शाक स्थिर रेखा नहि, भू-रचनाक परिवर्तनीय शक्ति बनैत अछि। 'पुरान धार' मनुष्यक भाषिक नाम अछि; नदीक देहमे ओ पुरान चलनक पदचिह्न। एही कारण पहिल अध्यायक १९६३क सर्वे-सूची आ दोसरा अध्यायक गाम-स्मृति चारिम अध्यायमे भौतिक आधार भेटैत अछि।

बाँध, तटबन्ध, बोल्डर, तारक जाली, खूँटा आ प्रशासनिक रजिस्टरक लगातार सूची पहिल अध्यायक मजूर-बोल्डर-निर्देशक फोनक प्रतिध्वनि अछि। किन्तु नदीक दृष्टिमे ई वस्तु नियंत्रणक भाषिक घोषणा नहि, ऊँचाइ, ढलान, भीजल माटि आ जल-दबावक भौतिक शर्त बनैत अछि। 'भंग' आ 'मार्ग' मनुष्य लेल पृथक अर्थ रखैत अछि, नदी लेल नहि—एहन कथन प्राकृतिक प्रक्रिया आ मानवीय आपदाक नामकरणक बीच तीक्ष्ण अर्थभेद बनबैत अछि। नदीक अपरिवर्तित नैतिक निष्पक्षता नहि; लोकक क्षति वास्तविक अछि, मुदा नदीक कथात्मक स्वर ओ क्षतिक सामाजिक कारणक स्वयं निर्णय नहि दैत।

हल जोतबाक रेखा, पोखरिक मेड़, चूल्हक राख, विवाह-मडवाक खूँटा, मृतकक राख, कागजक स्याही, काठ आ हड्डी—सभ नदीक स्पर्शमे आबैत अछि। एहि संचयनसँ भूमि आ स्मृति प्रतीक मात्र नहि रहि वस्तुगत इतिहास बनैत अछि। नदी वस्तुकेँ कखनो ढाकैत अछि, कखनो उजागर करैत अछि। पुनः भेटल नामक आधा अक्षर पाठकेँ भीजल पाँजिक पन्ना मोन पाड़ैत अछि। इएह अन्तरपाठीय आत्मसङ्गति उपन्यासक आन्तरिक रूपक-पद्धतिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

कथा जातिक प्रश्न सेहो सटीक ठाम उठबैत अछि। नदी कहैत अछि जे ओकर जल जाति नहि पूछैत; जाति कछेर, कूप, भोजनक पाँति आ विवाहक कागज पर पूछल जाइत अछि। एतय पानीक भौतिक समवर्तन आ मनुष्यक सामाजिक असमानता विरोधक रूपमे राखल गेल अछि। मुदा एहि विरोधक सरलीकरण सम्भव अछि; प्राकृतिक आपदाक परिणाम सामाजिक भेद सभ पर समान नहि पड़ैत; संसाधन, आश्रय आ संस्थागत पहुँच भिन्न होइत अछि।

अध्यायक कथन स्वयं एक रूपकात्मक नदी-स्वर अछि, सामाजिक सर्वेक्षण नहि। एकरा हठात् 'बाढ़ि सभकेँ समान बनबैत अछि'क इतिहासगत सिद्धान्त मानब पाठकक भूल होयत।

सतत वाक्य-प्रवाह एक शिल्पगत साहस अछि। विरामचिह्नक विरलता पाठकेँ साँस रोकि लम्बा अनुभूतिक मार्ग पर चलबैत अछि; किन्तु पठनीयताक कसौटी पर ई बनावट कठिन सेहो भऽ सकैत अछि। समीक्षा लेल मुख्य प्रश्न ई अछि जे नदीक वाणीकेँ मानवीय भाषा देनाइ कहीं ओकर परार्थकता नष्ट तँ नहि करैत। पाठक देखैत अछि जे नदी बारम्बार अपन 'नहि बुझब' जनबैत अछि—ओ आदेश अथवा खाताक राजनीतिक भाषा नहि बुझैत। एहि निषेधसँ काव्यात्मक मानवीकरणक सीमा स्वयं रेखाङ्कित होइत अछि।

अन्तिम भागमे फोनक घडी, दफ्तरक समय, राहत शिविरक मेज आ पँजीकारक दैनिकी एकहि दृश्यशृंखलामे मिलैत अछि। कोसी स्वयं घडी नहि राखैत, मुदा ओकर कात घडी चलैत अछि। घटनाक तिथि निश्चित कएल जा सकैत अछि, निर्माण-प्रक्रियाक आरम्भ एक तिथि मे समेटल नहि जा सकैत।

नव्य न्यायपरक विचारमे तिथि-सूचक लिखित कथन आ भौतिक कारणक प्रमाण एक नहि; तटबन्धक टूटनक कारण निकालबाक लेल केवल पछिला दिनक डायरी पर्याप्त नहि। ई भेद नदीक वक्तव्यक रचनात्मक गहिराइ अछि। एकहि अध्यायमे नदी जीवित घर, भीजल तुलसीपात, गरम राख आ एखन-अपूर्ण वाक्यक उल्लेख करैत अछि। ई मानवीय सूक्ष्म वस्तुसभ नदीक विराट प्रवाहमे घुसैत अछि आ पहिल अध्यायक घरक स्थिरतापर संकटक छाया रखैत अछि। चारिम अध्याय कथाक 'आन आवाज' नहि, सम्पूर्ण उपन्यासक भाषिक संरचनामे नव प्रमाण-असम्भवता जोड़ैत अछि: नदीक आत्मवाणी वैज्ञानिक साक्ष्य नहि, किन्तु मनुष्यक अभिलेखक सीमा देखेबाक कला अछि।

अध्याय ५ — तीन नाम

मूल उपन्यास, पृष्ठ २०-२६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

पाँचम अध्याय 'कोसी — १'क प्रवाहशील अखण्ड स्वरक पछाति फेनु रामानुग्रह मिश्रक संयमित दैनिकीमे आबैत अछि। वृद्ध पाँजीकार चारि दिनक लेखा, भीजल पात आ तीन नामसँ अपन अन्वेषण आरम्भ करैत छथि। नदीक महाकार्य आ पाँजिक छोट क्रम एकहि ग्रन्थक दू पृथक स्तर बनि गेल अछि। पन्ना सुखेबाक प्रक्रियाक समय, उजासक दिशा बदलनाइ, बाँसक पातर चिमटी, काठक पटरी, पुरान कोशक दबाव—ई सभ पठनक श्रमकें दृश्य करैत अछि। लेखक नामक रहस्यकें तत्काल सूचनासँ नहि, नाम पढ़बाक श्रमिक क्रियासँ खोलैत छथि।

पहिल नाम श्रीधर मिश्र अछि; मूल 'कौशिक', पिता वाचस्पति, पितामह रघुपति। एक निश्चित हृद धरि वंशक्रम पढ़ाइत अछि, किन्तु उत्तरवर्ती तीन पाँति रिक्त वा अपठ्य अछि। रामानुग्रह पहिने जल-क्षतिक सम्भावना लिखैत छथि। दोसर नाम रत्नेश्वर झा अछि; पिता दयाकान्त, पितामहक अन्तमे 'नाथ' मात्र बचल; क्रम-सूचक दू बिन्दु आ बीचक ठाढ़ रेखा विद्यमान अछि, मुदा अगिला लेख नहि। तेसर नाम जयनारायण मिश्र अछि; पिता माधव, पितामह देवदत्त, ग्राम भोलाक कहल गामसँ मेल खाइत अछि; पछातिक अर्धपाँतिमे सम्भावित सतह-क्षति अछि। तीनू पन्ना समान प्रकारक 'रिक्त' नहि दैत। एहि सूक्ष्म भेदपर आगामी प्रश्न टिकैत अछि।

तिथि अपूर्ण अछि: कतहु संवत्क दू अंक, कतहु मास, कतहु पक्षक नाम। तीनू एकहि दशकक आसपासक बुझाइत अछि, किन्तु ई अनुमान कथावाचकक अछि; निष्कर्ष नहि। ओ स्वयं अनेक निरापराधिक कारण गनबैत छथि—पुत्रक अभाव, केवल पुत्री, विदेशगमन, दोसर खण्डमे वंशक प्रविष्टि, छुटल पन्ना। पाँजीकार 'संयोग कें अपराध नहि मानब'क नियम पर टिकैत छथि। एहि

अंशमे रहस्य-रचनाक प्रशंसनीय अनुशासन अछि; तीन समान रिक्ति कथा-पाठककें षड्यन्त्रक सम्भावना दिस लऽ जा सकैत अछि, मुदा पात्र उपलब्ध साक्ष्यसँ अधिक नहि कहैत।

नकल-पोथीक पाँच खण्ड—१९१२-१९२७, १९२८-१९४१, विवाह-अभिलेख, विवादित अभिलेखक प्रति आ अपूर्ण अनुक्रमणिका—अध्यायक ऐतिहासिक समयकें अनेक तह दैत अछि। गामक नाम भेटैत अछि, नाम नहि भेटैत।

रामानुग्रहक पिता देल भेद 'नहि भेटल' आ 'नहि छल' एतय महत्त्वपूर्ण। कोनो अपूर्ण नकलमे नाम अनुपस्थित होयब मूल वंशमे व्यक्ति नहि होयबाक प्रमाण नहि। नव्य न्यायक दृष्टिसँ एकर नकारात्मक प्रमाण केवल ओहने स्थिति मे निर्णायक होएत जखन जाँचक समुचित स्थान, पूर्ण सूची आ सम्भावित उपस्थितिक अपेक्षा सिद्ध हो। एतय ओ शर्त पूर्ण नहि, तँ निष्कर्ष स्थगित।

विवाह-अभिलेखमे 'श्रीधर' नाम दू बेर भेटैत अछि, मुदा पिता-नाम भिन्न अछि; तेसर प्रति मे 'जयनारायण' भेटैत अछि, मुदा ग्राम भिन्न। पाठ नामक समानतासँ पहिचान सिद्ध करबाक प्रलोभन रोकैत अछि। एहि दृश्यकें तेसर अध्यायक वाचस्पति-उदाहरणसँ पढला पर जाँचक शिक्षा कथा-साक्ष्यक रूप लेइत अछि। समान ध्वनि व्यक्ति-समानताक हेतु नहि। एकाधिक स्वतंत्र पहिचानचिह्नक संगति आवश्यक अछि।

दस बजि पाँच मिनट पर रामानुग्रह पुछैत छथि जे तीनू नामक उत्तरवर्ती कड़ी किएक टूटल; तत्क्षण उत्तरक ठाम खाली छोड़ैत छथि। एतय रिक्ति भय अथवा अव्यवस्था मात्र नहि, जानल सीमाक लिखित रूप अछि। कथावाचक अपन अस्सी वर्षक हाथकें देखैत छथि; स्याहीक पुरान दाग, कड़ा जोड़, मोट चमड़ा। एहि शारीरिक आत्मनिरीक्षणसँ अभिलेखक उत्पादन मे मानवीय श्रम आ जैविक आयुक प्रश्न उठैत अछि। नाम लिखल होयब ओकर सामाजिक संरक्षणक समान नहि; नामक अर्थ ओहि लोकक द्वारा पुनः खोजल, पढल आ सम्बन्ध स्वीकृत भेलापर टिकैत अछि।

भोला सहनी दोसर बेर आबि लोकक राशन-सूचीमे नाम चढ़बाक प्रश्न उठबैत अछि। ओ बतबैत अछि जे विस्थापित लोक शिविरमे पृथक-पृथक छथि आ ककरो कागज नहि। ओकर अपन नाम सेहो राहत-अभिलेखमे नहि चढ़ल।

रामानुग्रह जखन ओकर नाम दैनिकीक अलग पन्नामे लिखैत छथि, भोला चाहैत अछि जे पाँजिमे लिखल जाए। वृद्ध कहैत छथि जे ई राशनक अभिलेख नहि; भोला प्रत्युत्तरमे नाम लिखलाक सामाजिक असर देखबैत अछि। एहि संवादमे दोसर अध्यायक प्राप्तिक साक्षी एक पूर्ण राजनीतिक अनुभव-वाला पात्र बनि उठैत अछि। पँजीकारक वर्गीकरण आ भोलाक तात्कालिक भूखक बीच अन्तर उपन्यासक सबसँ मजबूत सामाजिक क्षणसभमे एक अछि।

वर्गीकरणक व्यावहारिक औचित्यक विरुद्ध भोलाक बातक वजन सेहो अछि। राशन-पञ्जी आ वंश-पञ्जीक उद्देश्य अलग अछि; दुनूकै एक कऽ देब गलत। किन्तु नाम नहि रहबासँ व्यक्ति दुनू ठाम वञ्चित भऽ सकैत अछि। ई विरोध केवल आर्थिक असमानता नहि, मान्यता प्रदान करबाक संस्थागत सत्ता विषयक प्रश्न अछि। तेसर अध्यायक 'अधिकार' शब्द एतय नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। भोला जातिक कारणे अभिलेखसँ निश्चित रूपेँ बाहर राखल गेल—एहन निष्कर्ष एहि पाँच अध्यायक साक्ष्यसँ सिद्ध नहि; मुदा वंशक लेखन आ राहतक सूचीमे ककर आवाज पहुँचित अछि, एहि असमान अवसरक प्रश्न अवश्य स्पष्ट होइत अछि।

विवादित पोथीक पन्ना १७ पर 'जयनारायणक विषय स्थगित' वाक्य भेटैत अछि। सामान्य 'निर्णय स्थगित'क बदला 'विषय स्थगित' कथावाचककै अटपट लगैत अछि। एहि भिन्नताक कथा-मूल्य निहितार्थक निश्चिततामे नहि, प्रपत्रक पुरान प्रचलनसँ भिन्न लेखनमे अछि। परदादाक लिखावटक स्मृति उठैत अछि, मुदा स्मृति लेखकक पहिचान साबित नहि करैत। मोहन तीन नाम सुनि चुप पडैत अछि; ओ खुद एहि नामसभकै नहि चिन्हबाक बात कहैत अछि। पाठक ओकर चुप्पीकै अपराधबोधक प्रमाण नहि मानि सकैत। नैतिक रूपेँ संतुलित रहस्य-रचना एहि अनुशासनपर टिकल अछि।

पछातिक सूक्ष्म परीक्षणमे श्रीधरक 'पु' सन चिह्न कागजक रेशा भऽ सकैत अछि; रत्नेश्वरक क्रम-सूचकक आगाँ पातर कागज जलमे घर्षणसँ बनल होयत; जयनारायणक रेखा जल, रगड़ अथवा जानि-बुझि हटाओल लेख—तीनू सम्भावना खोलैत अछि। रामानुग्रह तेसर सम्भावना दैनिकीमे लिखि नहि दैत छथि, किएक तँ अप्रमाणित गम्भीर आशङ्का भविष्यक पाठक लेल प्रमाण-जेकाँ लगि सकैत अछि। एहि बिन्दुपर उपन्यास कथावाचकक भाषिक चयनक उत्तरदायित्वकँ अत्यन्त स्पष्ट बनबैत अछि।

साँझक आठ-कोठलीवला तुलनात्मक लेख—नाम, पिता, पितामह, मूल, ग्राम, उपलब्ध तिथि, पन्नाक दशा आ अगिला क्रमक दशा—अध्यायक अनुसन्धानीय परिणति अछि। ज्ञात नहि होयबापर डैशक बदला 'अज्ञात' लिखनाइ ज्ञानक सीमा संकेत करैत अछि। तीनू पन्नाक हस्तलेख सम्भवतः एके हाथक प्रतीत होइत अछि, मुदा 'सम्भवतः'क परिधि नहि टूटैत। अन्ततः निर्णय स्थगित रहैत अछि। कथा रहस्यक समाधान नहि दैत, समाधान लेल आवश्यक प्रमाणक सूची दैत अछि। ई अन्त पाठकक धैर्यक परीक्षा लैत अछि; किन्तु पाँजि-आधारित उपन्यासक स्वभावसँ इएह विलम्ब उचित ठहरैत अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय १-५

कुसहा • पोथीक गट्टर • पँजीकारक विधि • कोसी — १ • तीन नाम

पहिल पाँच अध्यायक विन्यास साधारण रैखिक प्रवाह नहि । पहिल अध्यायमे १८ अगस्तक समय-बिन्दु, दोसरमे १९ अगस्तक भीजल गट्टर, तेसरमे २० अगस्तक अभिलेख-विधि, चारिममे तिथिरहित नदीक प्रथमपुरुष आ पाँचममे कालक्रमसँ कने अलग परीक्षण-प्रक्रिया एक-दोसरकेँ पढबाक सन्दर्भ बनबैत अछि । पहिल अध्यायक फोन-सूचना दोसरक वस्तु-प्राप्तिसँ जोड़ैत अछि; दोसरक तीन अधपढल नाम तेसरक विधि लिखबाबैत अछि; तेसरक सिद्धान्त पाँचममे क्रियारूप ग्रहण करैत अछि । चारिम अध्याय एहि मानवीय क्रमक बीच नदीक असीम क्रिया जोड़ि दस्तावेजी समयक सीमितता देखबैत अछि । कथावाचक रामानुग्रह मिश्रक प्रथमपुरुष कथन समकालिक दैनिकी आ पश्चात् पुनर्पाठक संगम अछि । ओ एक तिथि पर लिखल पाँति पढैत छथि, मुदा कतहु स्पष्ट करैत छथि जे बादमे कोन बात बुझल गेल । एहि दू समयकेँ अलग राखब आख्यानशास्त्रीय विश्वसनीयताक मुख्य परीक्षा अछि । पहिल अध्यायमे फुलझरी नामक स्त्रीक उल्लेख नहि होयबाक बातक ज्ञान बहुत पछाति भेटबाक उल्लेख अछि; तेसर अध्यायमे गुरु-स्मृतिक वर्तमान अर्थ; पाँचममे पुरान हस्तलेखक आकलन—ई तीनू पछातिक बोधक स्तर परस्पर भिन्न छथि । एतय कथावाचक सर्वज्ञ नहि, पुनर्पाठ करैत साक्षी छथि ।

खाली स्थान तीन रूपमे आवैत अछि । पहिल अध्यायमे '११:०२'क अपूर्ण फोन-वाक्य आ '४:०२'क पछाति एक अँगुर रिक्ति; दोसरमे भीजल पन्नाक उज्जर ठाम आ अज्ञात स्वामित्व; तेसरमे विधिक कारण-परीक्षणक अधूर निर्णय; पाँचममे नामक पछातिक वंशक्रमक अनुपस्थिति । चारिम अध्यायक नदी-वाणी एही रिक्तिक भौतिक सम्भावना खोलैत अछि—बहल स्याही, पलटल धार, बालूक नीचाँ ढाँकल वस्तु । मुदा सभ रिक्ति एके कारणसँ उत्पन्न अछि, ई

समानता पाठ सिद्ध नहि करैत । उपन्यासक अर्थशक्ति एके रूपकक भीतर कारण-भेद सुरक्षित राखबामे अछि ।

साक्ष्यक उपस्थिति आ अनुपस्थिति के अलग देखब एहि बैचक सर्वव्यापी पद्धति अछि । मोहनक फोनमे सुनल बात ओकरे कथन अछि; सेवानिवृत्त अभियन्ताक पुरान सूची पुछब नदीक वास्तविक मार्गक स्वतंत्र सत्यापन नहि; भोला द्वारा गट्टर अनब ओकर स्वामित्वक प्रमाण नहि; वृद्ध आगन्तुकक गाम-विषयक मौखिक स्मृति अपूर्ण पाँजिक नामक स्थानापन्न नहि; एके हस्तलेख तीन पन्नामे भेटब स्वयं जानि-बुझि वंश मेटेबाक प्रमाण नहि । एहि पाँच तुलना मे प्रमाणक प्रकार, विषय आ सीमा अलग-अलग राखल गेल अछि ।

भारतीय काव्यविचारक दृष्टिसँ आरम्भिक वर्णनमे करुण सम्भावना अप्रत्यक्ष रूपसँ सञ्जात अछि; नदीक नाशक दृश्य विस्तारसँ कहबाक बदला गाम 'काल्हि छल' आ आब 'घर नहि'क भेद व्यञ्जना उत्पन्न करैत अछि । दैनिकीमे त्रासद सूचना शुष्क अभिलेखीय वाक्य रूपमे अबैत अछि, आ एहि विरामे पाठकक संवेदनाकेँ सक्रिय करैत अछि । चारिम अध्यायक जल-वाणी कथाक वस्तुगत प्रतीककेँ विस्तारित करैत अछि; नदी आश्रयदाता वा केवल दण्डदाता सन एकार्थी रूपक बनि नहि जाइत ।

पाश्चात्य आख्यानविचारक धरातलपर कालक्रमक क्रमिक विखण्डन आ बहुस्वरिक संरचना विशेष महत्त्वपूर्ण अछि । रामानुग्रहक 'हम' लिखित प्रमाणक सीमाक भीतर बाजैत अछि; कोसीक 'हम' भौतिक पदार्थक आवाजक कल्पना अछि । दुनू 'हम' समान प्रमाण-अधिकार नहि रखैत । भोला तेसर दृष्टि जोड़ैत अछि—जकरा लागी लिखल नाम राहतक द्वार बनि सकैत अछि । ई बहुस्वरता उपन्यासकेँ मात्र पँजीकारक बुद्धिक एकाधिकारसँ बचेबाक सम्भावना दैत अछि, यद्यपि पाँच अध्याय धरि अभिलेखक व्याख्या मुख्यतः वृद्धक नियन्त्रणमे अछि ।

नव्य न्यायपरक विचारमे कथा कारण, हेतुक वैधता आ नकारात्मक प्रमाणक सीमा पर स्वतः जोर दैत अछि। तीन पन्ना पर वंशक्रम नहि भेटबासँ निष्कर्ष 'वंश मेटायल' नहि निकलैत। जल-क्षति, प्रवास, दोसर अभिलेख, निःसन्तानता वा जानि-बुझि हस्तक्षेप जेकाँ अनेक सम्भावना खुलेल रहैत अछि। तीनू पन्ना एकहि हाथक प्रतीत होयब केवल परीक्षणक कारण अछि, अन्तिम सिद्धि नहि। कथाकार एतय सन्देहकेँ स्थायी बनयबाक लेल नहि, अपर्याप्त प्रमाण पर निर्णायक मत बनेनाइ रोकबाक लेल राखैत छथि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक अनुसार समय आ भूगोलक कमसँ कम चारि अलग पञ्जी उधड़ैत अछि: २००८क बाढ़ि-संकट आ राहत-सूचना;

१९६३क पुरान धारक सर्वे-सूची; १९१२-१९४१क नकल-अभिलेख; नदीक बहुधारात्मक दीर्घ भौतिक परिवर्तन। पाँजिकारक परिवारक स्मृति आ प्रशासनिक नक्शा एहि सबक संग पडोसी साक्ष्य बनैत अछि। ककरो स्रोतसँ आन स्रोतक तिथि स्वतः प्रमाणित नहि होइत। उपन्यासक काल-स्थानपरक परिश्रमक मूल्य एहि बहुस्तरीय लेखाक अन्तःसंवादमे अछि।

सामाजिक दृष्टिसँ भोला सहनी आ रामानुग्रहक सम्बन्धक फेरबदल निर्णायक अछि। दोसर अध्यायमे भोला क्षतिग्रस्त दस्तावेज अननिहार, पाँचममे राहत सूचीमे नाम नहि चढल व्यक्ति छथि। दूनूक सामाजिक स्थिति आ अभिलेखक उद्देश्य अलग अछि। लिखित दस्तावेज संकटमे मनुष्यकेँ बचा सकैत अछि, किन्तु दस्तावेजक परिभाषा सँ मनुष्य बाहर सेहो पड़ि सकैत अछि। एहि विरोधक कलात्मक शक्ति कोनो विशाल आरोपमे नहि, भोलाक व्यावहारिक प्रश्नमे अछि। एहि आरम्भमे जाति-संरचनाक सम्पूर्ण निर्णय देनाइ जल्दबाजी होयत, मुदा वञ्चना आ मान्यताक जटिल प्रश्न खुलि चुकल अछि।

पाँच अध्यायमे स्त्रीक उपस्थिति अपेक्षाकृत परोक्ष अछि—मातृपक्षक वंश, वंशलेखमे कन्याक नामक मेटल भाग, अनुराधाक जन्म-अभिलेख, फुलझरीक पछाति उल्लेख आ बन्द नातिनक कोठली। स्त्रीक मुँहसँ दीर्घ प्रत्यक्ष कथन नहि भेटैत। ई अनुपस्थितिक व्याख्या लेखकक उद्देश्यक अन्तिम निर्णय नहि,

पहिल बैचक पाठगत अवलोकन अछि। पँजीकारक 'माए कतय गेली?'क स्मृति एहि प्रश्नकें खुला रखैत अछि जे लेखनक संरचनामे स्त्रीक नाम कतेक व्यवस्थित रूपें बचल।

कलात्मक सीमा दू स्थल पर अधिक देखाइत अछि। पहिल, सूचीक विस्तृत गणना आ सात नियमक अपेक्षाकृत दीर्घ प्रवचन घटनात्मक गति घटबैत अछि। दोसर, कोसीक निर्बाध गद्य प्रभावी होइतो गहन पठन माँगैत अछि। तथापि एहि भिन्न गतिक बीच सोचल-समझल कलात्मक सम्बन्ध अछि— जतेक बाहर पलायनक जल्दबाजी, ओतबे भीतर पाँजि खोलबाक ठहराव। यदि आगामी अध्याय ई तनावकें केवल एक सूत्रमे सीमित करि देत, तखन आरम्भक बहुलता क्षीण भऽ सकैत अछि; एखन पाँच अध्यायमे ई बहुलता सक्रिय अछि।

एहि पहिल बैचक समेकित निर्णय ई अछि जे 'जल-पाँजि' बाढ़िक प्रसङ्गकें मानवीय अभिलेखक सत्य-परीक्षा बनबैत अछि। कुसहाक सूचना आबैत अछि, गट्टर बचैत अछि, विधि लिखाइत अछि, नदी बोलैत अछि आ तीन नाम अनुत्तरित रहैत अछि। प्रत्येक स्तर दोसर स्तरक सीमा उजागर करैत अछि। एहि विधागत संयोजनक मूल्य तत्काल रहस्य-सिद्धिमे नहि, सम्भावना आ प्रमाणक बीच कठोर भेद सुरक्षित राखैत संवेदनाकें जीवित रखबामे अछि। अध्याय ६ 'मोहनक फोन' सँ आगाँ ई भेद कोना विकसित होइत अछि, से अगिला पाठाधारित अध्ययनक विषय रहत।

अध्याय ६ — मोहनक फोन

मूल उपन्यास, पृष्ठ २७-३६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

छठम अध्यायक शीर्षक फोनकें केवल सन्देश-पहुँचबाक माध्यम नहि, पिता-पुत्रक बीच अनकहल प्रश्नक संरचना बनबैत अछि। पहिल दिनक अपूर्ण चेतावनी, दोसर दिनक मोहनक मौन आ पाँचम अध्यायक तीन नामक प्रसङ्ग एतय पुनः एकत्र होइत अछि। रामानुग्रहक दैनिकी भोरक फोनक अनुपस्थितिकें 'घटना' मानि लिखैत नहि, मुदा साँझ धरि फोनक प्रतीक्षा करैत छथि। नियम आ चाहनाक बीच ई अन्तर पात्रकें जीवित बनबैत अछि: जे लिखनिहार कथन आ अनुमानकें सख्ती सँ अलग रखैत छथि, ओहनो व्यक्ति बेटाक आवाज लेल चिन्तित रहैत अछि।

७ बजि ३७ मिनटक अपरिचित युवक मोहनक सन्देश दैत अछि जे रामानुग्रह घरसँ बाहर नहि जाउ। संवादमे नाम, राहत-शिविर आ बैसारक पूरा पहिचान अनुपस्थित अछि। ८ बजि ११ मिनटक मोहनक फोनमे अपन पिता आ पोथीक कुशल-क्षेमक बीच राहत-शिविरक नाम पुकारब, परिवार-संख्या अलग लिखबाक आदेश, कागज पलटबाक ध्वनि सुनाइत अछि। पाठककें प्रशासनिक संकट दृश्यरूपमे नहि, दूरस्थ ध्वनि आ टूटल वार्तालापक मार्फत भेटैत अछि। ई शिल्प पहिल अध्यायक अधूर टेलिफोन-वाक्यक विस्तार अछि।

राहत-सूचीमे एकहि गामक अनेक लिखावट, टोला आ मूल गामक भेद, बहल मतदाता-पत्र आ राशन-पत्र मोहनक काम कठिन बनबैत अछि। रामानुग्रह पूछैत छथि जे नियम बिना अभिलेख चलत? मोहनक उत्तर—चलाबय पडैत अछि। एहि दू क्रियाक बीच व्यावहारिक प्रशासन आ सिद्धान्तगत अभिलेखशास्त्रक वैध टकराव अछि। वृद्धक कठोर परीक्षा आवश्यकता सँ जनमल तात्कालिक कार्यकें विलम्बित करि सकैत अछि; मोहनक शीघ्रता गलत नाम स्थायी करि सकैत अछि। लेखक कोनो पक्षकें तुरन्त सम्पूर्ण सही नहि ठहरबैत।

फोन खुलल रहैत मोहन कर्मचारी केँ 'छूटल नाम पृथक लिखू, काटू नहि' कहैत अछि। पिता एहि शब्दकेँ पंजीकारक नियमक प्रतिध्वनि जकाँ सुनैत छथि, मुदा कहलाक बदला चुप रहैत छथि। ई सूक्ष्म क्षण देखबैत अछि जे दुइ पीढ़ीक औपचारिक पेशा अलग होइतो अभिलेखक संशोधन-पद्धति साझा भऽ सकैत अछि। पिता-पुत्रक मतभेद साधारण पुरान पीढ़ी विरुद्ध नव पीढ़ीक द्वन्द्व नहि। मोहन सीखने सेहो अछि, किन्तु संकट-समयमे ओहि शिक्षाक प्रयोग सीमित अछि।

रामानुग्रह मोहनक उपखण्ड, कुसहासँ दूरी, निरीक्षण आ जिम्मेदारीक विषय पूछि रहल छथि। 'नियमित क्षेत्र ओ नहि छल' मोहनक कथन अछि, स्वतंत्ररूपेँ जाँचल तथ्य नहि। मोहन स्वयं अनेक निकायक भागीदारीक सामान्य विवरण दैत अछि। पिता प्रश्नक भीतर आरोप घुसि रहल बुझि आगेक कठोर प्रश्न रोकैत छथि। एहि आत्मनियन्त्रणकेँ भयजनित मौन मात्र मानब समुचित नहि, मुदा पारिवारिक हितक कारण स्वयं कथावाचक पूर्ण निरपेक्ष छथि, सेहो मानब सम्भव नहि। एही दुविधासँ प्रमाणनिष्ठ कथा नैतिक गहराइ पवैत अछि।

११ बजि ४९ मिनटक किरण नामक सहकर्मिक फोन पुरान राजस्व-गामक नक्शाक प्रश्न उठबैत अछि। भीजल गट्टरक गाम आ विभागक नक्शाक प्रश्न एक दैनिकी-पृष्ठ पर आबैत अछि, तथापि सम्बन्ध घोषित नहि। गाम-नामक दोसर संस्था सँ मिलान आवश्यक हो सकैत अछि—एहन संकेत बनैत अछि। किन्तु पाठकक सुविधा लेल लेखक एहि संभावनाकेँ तुरन्त षड्यन्त्रक तथ्य नहि बनबैत। दवा लऽ कऽ आएल सुभाषक काजमे सेहो स्रोत-परीक्षण अछि: मोहन देलनि कि प्रशासन, निश्चित नहि; मोहनक रातिक स्पष्ट पुष्टि भेलापर लेख बदलैत अछि।

रातिक लम्बा फोनमे मोहन स्वयं पूछैत अछि जे गाममे ओकर विषयमे की कहल जाइत अछि। रामानुग्रह दू लोक प्रश्न पूछने होयबाक तथ्य कहैत छथि, आरोप नहि जोड़ैत। 'विचार प्रमाण नहि' आ 'सभ तथ्य कागज पर नहि

होइत' दुनू कथन एक-दोसरक पूर्ण निषेध नहि, प्रमाण-पद्धतिक दू व्यावहारिक आवश्यकता अछि। जे कागज अनुपस्थित अछि, तकर मौखिक, भौतिक वा संस्थागत साक्ष्य खोजल जा सकैत अछि; किन्तु अनलिखल कथन स्वतः सच्चाई सेहो नहि। मोहनक प्रश्न 'पिता छी कि जाँच अधिकारी?' पर वृद्धक उत्तर दुनू होयबासँ बचि नहि सकबाक स्वीकार अछि। एही वाक्यसँ पाठक पँजीकारक वैयक्तिक संकट बुझैत अछि।

दिनक अन्तिम प्रविष्टिमे तीन नाम विषयक नव तथ्य नहि भेटबाक दर्जा अछि। मुदा फोनक भीतर अनेक अर्थपूर्ण चुप्पी आबि गेल अछि। कागजक रिक्ति देखाइत, फोनक रिक्ति नहि—ई अन्तिम रूपक अनुत्तरित वंशक्रम आ अपूर्ण पारिवारिक संवादकेँ जोड़ैत अछि। अध्यायक सीमा ई जे फोन-प्रतिवेदनक पुनरावृत्ति कतिपय ठाम घटनागत विस्तार रोकैत अछि; तथापि दू समयक फोन एकरूप नहि, पहिलमे व्यावसायिक जोखिम, दोसरमे पारिवारिक विश्वासक परीक्षण तीव्र होइत अछि।

अध्याय ७ — कैम्प

मूल उपन्यास, पृष्ठ ३७-४३ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

सातम अध्याय दस्तावेजक प्रयोगशाला घरक उत्तर कोठलीसँ उच्च विद्यालयक राहत-शिविरमे आनैत अछि। सुभाषक आग्रहपर रामानुग्रह घरसँ निकलैत छथि; सरकारी सूची प्रमाणित करबाक दायित्व स्वीकार नहि करैत, केवल पुरान नामक भेद बुझाबय तैयार होइत छथि। शिविरक मेज पर पंजीकरण आ वितरणक दू रजिस्टर, कार्बन, मोहर, पिन, चाउरक बोरा आ औषधिक पेटी एहन वस्तुसभ अछि जकरा पढ़ि कथा मानवीय संकटक संस्थागत रूप देखबैत अछि। सामानक गणना मनुष्यक नाम-लेखनसँ लगाइत अछि, किन्तु दुनूक माप अलग।

बसन्तपुर, सोनबरसा, बेलहीक नाममे राजस्व गाम, टोला आ डाकघरक नामक असमानता पहिल समस्या बनैत अछि। प्रपत्रमे एक स्थान, जीवनमे अनेक स्थान—ई विरोध कथा पहिने ग्रामक विधिमे कहने छल, एतय जीवित संकटमे प्रकट अछि। 'बेलही—भीतर' आधिकारिक राजस्व नाम नहि, मुदा तटबन्धक भीतरक गाम चिन्हेबाक स्थानीय उपाय अछि। रामचरित्र सदा नामक साक्षीक कथन 'मुसहरी' जोड़बाक आधार बनैत अछि। साक्षी ककरा सँ सूचना भेटल, ई लिखब नाम मात्र लिखबासँ बेसी उपयोगी देखाइत अछि।

कौशल्या देवी परिवारक मुखियाक रूपमे स्वयं सामने अबैत छथि; पति मृत, दू पुत्र परदेस, शिविरमे ओ एकसरि। वंश-पञ्जीमे हुनकर नाम पति अथवा पुत्रक सम्बन्धमे खोजल जा सकैत अछि; राहत-पञ्जीमे परिवार हुनका सँ आरम्भ होइत अछि। एही अन्तरसँ स्त्रीक सामाजिक उपस्थिति अभिलेखक प्रयोजन अनुसार बदलैत अछि। तेसर अध्यायक 'माए कतय गेली?'क प्रश्न आब भौतिक रूपेँ आश्रय आ भोजनक गणनामे प्रवेश करैत अछि।

शम्भुनाथ यादवक परिवारमे वृद्धा 'माय' कहल जाइत छथि, मुदा स्वयं 'मौसी' कहैत छथि। परिवार-संख्या पाँच कि चारि होयत, एहिपर व्यवहारिक विवाद

उठैत अछि। अजित पासवान मतदाता-पत्र हेराएल अवस्था मे गाम बतबैत छथि, किन्तु बेलही दू नामक अछि। बेटी उपस्थित होइतो राहत-पर्ची आ पंजीकरण-रजिस्टरक सदस्योंक संख्या भिन्न रहबाक दृश्य भूख आ लिखित प्रविष्टिक प्रत्यक्ष टकराव बनबैत अछि। लेखक चाउर अधिक देल गेल कि नहि, से कथावाचकक दृष्टि सीमित होयबाक कारण अप्रमाणित राखैत छथि। ई सीमा विश्वासयोग्यता बढ़बैत अछि।

बुधन सदा, रम्पतिया आ हुनकर तीन बालक कागज-विहीन पाँच व्यक्ति छथि। दू जीवित साक्षीक आधारपर नाम लिखल जाइत अछि, जखन कि रामानुग्रहक वंश-पञ्जीमे हुनकर कुलक कोनो पाँति नहि। ई अंतर सांस्कृतिक स्मृतिक सर्वसमावेशकताक आलोचना अछि। पँजीक संरचना समाजक सभ जातिक जनगणना नहि—ई तथ्य पात्र स्पष्ट स्वीकारैत छथि। जकर पाँच वर्तमान जीवन राहत-रजिस्टरमे चढ़ल, ओकर सात पीढ़ीक अभिलेख नहि होयब मानवीय अस्तित्वक अभाव नहि। स्वयंपूर्ण मानी लेल एक रजिस्टर मनुष्यकें छोटा करैत अछि।

नित्यानन्द झाक दू पुत्र दिल्लीमे होयबाक कारण परिवार-पञ्जी सात सदस्य देखबैत, राहतमे तत्काल उपस्थित पाँच छथि। फुलकली देवीक नैहर छातापुर आ ससुरार बसन्तपुर, घटना समय निवास नैहर, क्षति ससुरारमे—एहि संयुक्त विवरणसँ विस्थापित व्यक्तिक गाम एक साधारण कोष्ठमे नहि अँटैत। ‘घटना समय नैहर’क टिप्पणी लोकक वर्तमान ठाम आ सम्बन्धक स्थायी लेखा बीच पुल बनबैत अछि। मुदा एहि पुलकें पूर्ण समाधान नहि मानल गेल अछि; संस्था, संसाधन आ पात्रताक निर्णय शिविरक व्यवहारमे रहैत अछि।

सरकारी सूचीमे सोनबरसा/सोनवर्षा, बेलही/बेलाही, परसौनी/परसौना सन नामरूपक भिन्नता छपल अछि। कर्मचारी कहैत अछि कम्प्यूटरमे जे चढ़ल, वह छपल। एहि कथनसँ नव अभिलेखक लिपिकार अप्रत्यक्ष भऽ जाइत अछि। तकनीकी माध्यमसँ लिखल नाम अचूक नहि बनि जाइत; ओहि पाछाँ

पहिल प्रविष्टि करनिहार लोकक चयन, त्रुटि आ सुधारक प्रक्रिया अछि। रामानुग्रह स्रोत, पुरान रूप आ प्रचलित रूप अलग राखबाक आग्रह करैत छथि, किन्तु सरकारी सुधारक सम्पूर्ण प्रक्रम नहि जनबाक सीमा स्वीकारैत छथि।

मोहन साँझमे शिविर आबैत अछि आ शीघ्रता विरुद्ध विस्तृत कारण-लेखनक बहस उठैत अछि। ओ पूछैत अछि जे सभ कारण लिखैत रहब तँ सामग्री वितरण कखन होयत। पिता 'न्यूनतम—ककर कथन पर' लिखबाक उपाय सुझबैत छथि। एतय सिद्धान्त व्यावहारिक न्यूनतम रूप ग्रहण करैत अछि। केवल नियमक कठोरता नहि, प्रपत्रक सम्भव संशोधन महत्त्वपूर्ण अछि। रामानुग्रहक शब्द ईहो जनबैत अछि जे जीवनक असुरक्षा पर निर्भर सूचीकें अधिक सावधानी चाही, पर मोहनक समयगत आपत्ति निःसार नहि।

विद्यालयक पट्ट पर १६-८-०८क गृहकार्य, रस्सी बिना लटकल घंटी आ शिविरक मटमैला रजिस्टर आपदासँ पूर्वक सामान्य जीवन आ वर्तमान आपातकालक समानान्तर स्मृति अछि। अन्तिम प्रश्न—नाम नहि भेटब आ नाम नहि लिखल जाएब—दुनूमे की अन्तर?—अध्यायकें अभिलेखक निष्क्रिय अभाव सँ सम्भावित सक्रिय बहिष्करणक प्रश्न धरि पहुँचेबैत अछि। ई प्रश्न निश्चित उत्तर बिना रहैत अछि। एहि खुलल अन्तमे सामाजिक विवेक अछि, खाली आश्चर्य नहि।

अध्याय ८ — मेटाओल पाँति

मूल उपन्यास, पृष्ठ ४४-५३ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

आठम अध्याय पहिल खण्डक निर्णायक अनुसन्धान-बिन्दु अछि। राहत-शिविरसँ घुरल रामानुग्रहक सामने तीन नामक पन्ना फेर अछि, मुदा कागजक सतह आब कने सूखल। लेखक जल-क्षतिक भौतिक लक्षण—स्याहीक पसरनाइ, रेशाक फूलनाइ, उलटा छाप—आ घर्षणक लक्षण—रेशाक एक दिस झुकनाइ, मोटाइक घटब, सतह उठनाइ—अलग-अलग दिखबैत अछि। रहस्यक निर्णायक मोड़ अनपेक्षित स्वीकारोक्ति वा गोपनीय पत्रसँ नहि, सूखैत कागजक प्रत्यक्ष परीक्षणसँ बनैत अछि।

श्रीधरक उत्तरवर्ती पाँतिक उज्जर भाग पर बाँसक सलाइ अटकि जाइत अछि; तिरछा प्रकाशमे घर्षित रेशा आ स्याहीक अति सूक्ष्म बिन्दु देखाइत अछि। पहिने जलक उलट दाग लगैत हिस्सा आब सम्भावित मानवीय घर्षणक प्रमाण बनैत अछि। रत्नेश्वरक नामक पछाति स्याही पसरल, कागजक सतह अपेक्षाकृत अखण्ड; जयनारायणक नामक पाछाँ पन्नाक कोन फाटल। तीन अलग प्रकारक रिक्ति पाँजिक एके कथानक-प्रश्नक तीन अलग कारणसंगत अवस्थामे बदलि जाइत अछि। इएह नूतन पाठ-साक्ष्य, पहिल पाँच अध्यायक अनुमानक संशोधन करब सम्भव बनबैत अछि।

घरक पुरान पाँजि खोलब रामानुग्रह लेल तकनीकी कामक संग आत्मीय जोखिम सेहो अछि। अपन परदादाक हस्तलेखक छोट अक्षर, दहिना झुकाव, ‘श्री’क शिरोरेखा, अंक ३क खुला घुमाव, संशोधन सूचित करबाक बामा किनारक दू तिरछा चिन्ह—ई सब तुलनात्मक हस्तलिपि-परीक्षणक आधार बनैत अछि। भीजल पन्नामे ओही जेकाँ द्वि-तिर्यक चिह्न, संक्षेपक अवशेष आ अंकक रूप भेटैत अछि। मुदा कथावाचक रंगकै निर्णायक नहि मानैत छथि,

किएक तँ जलक कारण पुरान स्याही बदलि गेल अछि। एक चिन्हसँ लेखकक पहिचान तय नहि, अनेक स्वतंत्र लक्षणक संगति चाही।

रामानुग्रह आरम्भमे 'हमर परदादा' नहि लिखैत छथि; 'पितामहक पिता'क हस्तलिपिसँ मेलक उल्लेख करैत छथि। संबंधसूचक शब्दक सावधानीक भीतर भावनात्मक दबाव अछि। अपनहि घरक अधिकारक्षेत्रमे श्रीधरक बाहरी वंश-शाखा पहुँचबाक सम्भावना परिवारक इतिहासकें असम्बद्ध बाहरी वस्तु रहय नहि दैत। एतय सातम नियमक संशोधन-पद्धति आ आठम मौखिक नियमक स्वार्थ-सावधानी एकहि दृश्यपर लागू होइत अछि। कथावाचक स्वयं स्वीकारैत छथि जे एतय सँ जाँच पारिवारिक हितसँ प्रभावित भऽ सकैत अछि, तँ दोहरा साक्ष्य आवश्यक होयत।

दू तिरछा चिह्नवला आन पाँच ठाम भेटैत अछि, जाहिमे चारि परवर्ती टिप्पणी अथवा ग्राम-संशोधन, एक ठाम अत्यल्प घर्षणक संग पुरान नाम बचल। श्रीधरक पाँतिमे मूल अक्षर प्रायः समाप्त। रामानुग्रह 'संशोधन' आ 'उच्छेदन'क दू पृथक शीर्षक बनबैत छथि। ई भेद रचनाक नैतिक केन्द्र अछि: गलती ठीक करब, पुरान लिखल वस्तु काटब आ लेख मिटेबाक प्रयत्न तीनू अलग क्रिया अछि। प्रमाणित घर्षणक आधारपर पाँतिक भौतिक उच्छेदन कहल जा सकैत अछि, किन्तु के किएक मेटेलक—ई प्रश्न एखन अप्रमाणित रहैत अछि।

मोहनक दुपहरक आगमनमे पिता ओकरा सतह देखबैत छथि। मोहन पहिने 'एतय तँ किछु नहि' कहैत अछि। तिरछा उजासमे खुरचनाइक सम्भावना देखिते ओ ककर हाथ आ किएकक प्रश्न करैत अछि। 'निश्चित'क उत्तर रामानुग्रह 'अत्यन्त प्रबल मिलान' दैत छथि, पूर्ण सिद्धि नहि। ई संवाद पाठककें समान अवलोकनक अलग स्तर सिखबैत अछि। सम्बन्धित परिवारक सदस्य मोहन गम्भीरता बुझैत अछि, मुदा एही आधारपर जाँच-अधिकारी नहि बनि जाइत।

मोहन 'जखन धरि निश्चित नहि' ककरोसँ नहि कहवाक कारण दैत अछि;
पिता एकरा उचित मानैत छथि। ई सहमति दू पात्रक बीच सावधानीक साझा
जमीन अछि, किन्तु दुनूक मनोभाव समान छथि, एकर प्रमाण नहि। मोहनक
सम्भावित भय आ पिता द्वारा अपन वंशक संरक्षणक इच्छा पात्रक मौनसँ
अनुमानित होयत, निश्चित मनोभाव घोषित करब समीक्षा लेल अनुचित।
घटना एतय भौतिक साक्ष्यक विस्तार अछि, दोषनिर्धारण नहि।

दैनिकीमे पाँच निष्कर्ष लिखल गेल अछि। श्रीधरक पाँति जल-क्षति मात्र नहि,
मानवीय घर्षणक सम्भावना प्रबल; हस्तलिपि-लक्षण परदादाक निश्चित
अभिलेखसँ मेल; रत्नेश्वर आ जयनारायणक रिक्ति अलग; पहिल संयुक्त
अनुमान त्याज्य; मेटाओल मूल शब्द आ उद्देश्य अज्ञात। समीक्षाक मुख्य
सावधानी ई अछि जे रामानुग्रह 'मेटाओल' शब्द अपन निष्कर्षमे पहिल बेर
लिखैत छथि—ई उपन्यासक भीतर हुनकर साक्ष्यगत निर्णय अछि। एहि
निर्णयकै वास्तविक इतिहासक प्रमाण नहि बनाओल जा सकैत।

दिनक अन्तिम क्रियामे तीनू पन्ना मूल क्रममे राखल जाइत अछि; श्रीधरक
पन्ना अलग कपडामे राखि असाधारण अर्थ नहि देल जाइत। ई भौतिक
अनुशासन समूचा अध्यायक बोध बनि जाइत अछि: प्रमाण वस्तुमे अछि,
वस्तुक सजावटमे आरोप नहि जोड़ल जाय। पठनक गतिक विवेचनमे किएक
लेखक विस्तारसँ रेशा, प्रकाश, मिलान, नकल आ माप वर्णन करैत छथि—
तकर उत्तर इएह अछि। अध्ययनक गति धीर होइतहुँ रहस्यक आधार अधिक
ठोस बनैत अछि। अध्यायक अन्ते मूल पाठमे 'खण्ड २ — पाँजि (१९०१-
१९३४)'क संक्रमण-सूचना अछि; एहि ठामसँ कथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक
विस्तृत साक्ष्य-दिशामे प्रवेश करैत अछि।

अध्याय ९ — धरती हिलल

मूल उपन्यास, पृष्ठ ५४-५९ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

नव खण्डक आरम्भ १५ जनवरी १९३४क भूकम्प-स्मृतिसँ होइत अछि, मुदा कथावाचक प्रारम्भहि मे कहैत छथि जे ओहि दिन ओ उपस्थित नहि छलाह; हुनकर जन्म दू बरख पछाति भेल । अपन प्रत्यक्ष-अनुपस्थितिक ई घोषणा विश्वसनीय इतिहास-लेखनक पहिल कसौटी अछि । रामानुग्रहक बचपनमे भूकम्प गामक लेल बीतल तिथि नहि, ‘पहिने’ आ ‘पछाति’क साझा सीमा बनल छल । घटना कैलेंडरक तिथि आ सामूहिक स्मृतिक काल-विभाजन दुनू अछि, किन्तु दुनूक प्रमाण-स्वरूप पृथक अछि ।

विद्यालयक अभ्यास-पुस्तिकामे बारह बरखक बालकक पाँच पाँति अछि: दादी घंटीक कथा कहैत छलीह, बाबा पहिल ढहल देबालक, पोखरिक स्थिति पर विवाद । ई बाल्यलेख एक अनूठा आत्मकथात्मक आधार अछि । साक्षीसभक मतभेद मेटाकऽ एक शुद्ध घटना बनबेनाइक बदला ओ मतभेद सहित पाँति लिखने छल । पँजीकारक भविष्यमुखी पद्धति एहि पुरान अभ्याससँ जुड़ि जाइत अछि । कथावाचक अपन वयस्क विवेककें बालकक पूर्वसिद्ध सर्वज्ञता नहि बनबैत; घटना कें दादी-बाबाक कथनरूपेँ अलग राखैत छथि ।

पितामहक स्मृतिमे नीचाँ सँ गर्जना, पीतलक लोटाक खसबा आ पश्चिमी देबालक ढहनाइ प्रमुख अछि । पितामहीक स्मृतिमे पहिने मन्दिरक घंटी, गोहालक कोन, बन्हल गोरुक आँखि, उलटल मटकी, धानमे चूना, घायल बालिका । एक घटना पुरुषक देबाल-मापक अभिव्यक्ति आ स्त्रीक देह-वस्तुक विस्मृति-बचावक भाषा मे दूरंग ग्रहण करैत अछि । एहि अन्तरकें मात्र लिङ्गगत स्थायी स्वभाव मानब जोखिमपूर्ण होयत; पाठ एहि दू साक्षीक विशिष्ट चयन देखबैत अछि, सभ पुरुष-स्त्रीक एक सन मनोविज्ञान नहि सिद्ध करैत ।

वैद्य रामलोचन झाक तेसर कथा कुआँक पानिक रंग, घाव, औषधि आ नामक्रम पर केन्द्रित अछि। लिखित सूची समयक संग नष्ट भेल, मौखिक स्मृति चलैत रहल। हुनकर छोट भाय कुआँक रंग बदलबाक क्रम अलग बतबैत छथि। मुँहक सूचीकेँ झूठ कहि छोड़ल जा सकैत नहि, मुदा मौखिक प्रत्यक्षक नाम पर पूर्वापर तिथि बिना परीक्षण स्वीकार सेहो नहि। छोट प्रसङ्ग आ वाक्य-विन्यासक विविधतासँ उपन्यास प्रत्यक्ष-स्मृति आ बादक अर्थरचनाक भेद दर्शबैत अछि।

बुधन सदाक चौठ कथा माटि फाटब, बालू-मिश्रित पानि उगलनाइ आ रातिमे एकहि खुला खेतमे भिन्न जातिक लोक रहबाक बात कहैत अछि। पितामहक लोटा, पितामहीक घंटी आ वैद्यक कुआँसँ भिन्न ओ माटिक चिरा आ श्रमक संकट मोन रखैत छथि। ओ धरती जाति नहि पूछबाक कथन दैत छथि, तखन दोसर बुजुर्ग बर्तन अलग रहबाक स्मृति जोड़ैत छथि। सार्वजनिक आपदाक साझा खतरा सामाजिक श्रेणीसभक तुरन्त अन्त नहि करैत—ई द्वन्द्व मूल पाठसँ सटीक रूपेँ प्रकट होइत अछि। समान खेतक राति अलग बर्तनक व्यवहारक संग सहअस्तित्व रखैत अछि।

बुधन अपन हाथ आ पएसँ धरतीक चिराक माप अलग-अलग रूपमे देखबैत छथि; रामानुग्रह बारम्बार चौड़ाई पूछैत छथि। अन्ततः बुधन कहैत छथि जे फाटल छल, एतबे। एहि असहमतिकेँ केवल अज्ञान कहब अनुचित होयत। जकर जीवनमे धरती फाटब एक अनुभव अछि, ओकरा बादक पाठकक मिलीमीटर-वाला जिज्ञासा सँ अलग प्रयोजन अछि। तथापि वैयक्तिक अनुभवक मापक सीमा रहैत अछि। ई क्षण मापनीक अतिआत्मविश्वास आ स्मृतिक अस्थिरता दुनूकेँ परखैत अछि।

भूकम्प-पछातिक पुनर्निर्माणक कथा अधिक गहिर सामाजिक अर्थ खोलैत अछि। घरक दुआरक दिशा बदलल, गल्ली चौड़ी भेल, किछु झोपड़ी ऊँच ठाम सरकल, बरखा पछाति नीचाँ घुरल—ई मात्र प्राकृतिक क्षतिक परिणाम नहि, भूमिक स्वामित्व आ पहुँचक प्रश्न सेहो अछि। ‘ऊँच माटि ककर छल’ कथा

सामाजिक असमानताक निर्णायक सूत्र अछि। गामक सरकारी नाम यथावत रहलासँ गामक सामाजिक आ भौतिक बनावट यथावत रहल, एहन अनुमान गलत। विदेह समानान्तर इतिहास-पठनमे स्थलनाम, राजस्व-कागज, जीवित स्मृति आ वस्तुगत पुनर्निर्माणक चारि स्तर एकठाम राखि देखल जाए।

रामानुग्रह चारि खण्डमे ध्वनि, ढहनाइ, पानि, बाहर राति बिताबय अवधि लिखैत छथि; पाँचम खण्डमे सब साक्षीक सहमति। सहमतिक खण्ड छोटा रहैत अछि: जोरक कम्पन, घरक क्षति, पलायन, घाव, बदला गाम। विशिष्ट विवरण अस्पष्ट रहैत अछि। पाठ एतय अपूर्ण कथनसभकें जोड़ि सुविधाजनक एक तथ्य बनाने सँ मना करैत अछि। नव्य न्यायमे कथनक वक्ता, अनुभवक प्रकार, स्मृतिक काल, आ अन्य स्रोतक संगति अलग जाँचल जाएब आवश्यक अछि। सहमति स्वतः प्रत्येक बारीक विवरण सत्य नहि बना दैत।

१९८१मे पितामहीक स्मृति पुनः पृच्छलाक पछाति 'तोहर बाबा लोटा सुनलनि, हम घंटी' आ पहिने 'धरती'क उत्तर उपन्यासक लयकें अत्यन्त सुन्दर रूप दैत अछि। ई वाक्य तालिकामे अटैत नहि, मुदा सत्यक एक व्यापक अनुभूति कहैत अछि। रामानुग्रह जकाँ-तकराँ लिखि दैत छथि। शिल्पक दृष्टिसँ ध्वनि, वस्तु, अनुभव आ स्मृतिक अधिकार एक संक्षिप्त वाक्यमे संघनित अछि।

अन्तिम पृष्ठमे भूकम्पक एक अव्यक्त दोसर घटना विषयक मौनक संकेत अछि। पितामह-पितामहीक मतभेद लिखल जा सकैत, किन्तु एहि दोसर प्रसङ्गमे सामूहिक मौन अछि। पाँचम अध्यायक रिक्त पाँति आ आठम अध्यायक मेटाओल पाँति एतय मौखिक मौनक बराबर रखल जाइत अछि, मुदा समरूप कारण सिद्ध नहि। भूकम्पक साक्ष्य-भिन्नता आ अनकहल घटनाक मौनमे वास्तविक ऐतिहासिक फलन भिन्न होयत; लेखक एहि अन्तरक प्रति सजग छथि।

अध्याय १० — साक्षी एकः पुरोहित

मूल उपन्यास, पृष्ठ ६०-६६ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

दसम अध्यायमे ऐतिहासिक स्मृतिक व्यापक बहुस्वरता एक विशिष्ट विवादास्पद घटनाक साक्षी-परीक्षामे बदलैत अछि। माघ १९३४क घटनाक कथन हरिनारायण झा नामक वृद्ध पुरोहितसँ रामानुग्रह दीर्घ काल पछाति संकलित करैत छथि। साक्षी पहिलहिमे पाँच सीमा तय करबैत छथि—ओ विवाह कराबय नहि गेलाह, मन्त्र नहि पढ़लनि, अग्नि नहि जारलनि, कन्यादान नहि भेल, पाँजि देखल बिना मान्य सम्बन्ध नहि मानैत छलाह। साक्षीक एहि आरम्भिक आग्रहमे घटना बजबाक पहिने दायित्व सीमित करबाक इच्छा द्रष्टव्य अछि। मुदा आत्मरक्षाक सम्भावना तुरन्त दोषसिद्धि नहि; कथावाचक शब्दशः दर्ज करैत छथि।

फुलझरीक नाम साक्षीक मुँहसँ सहज नहि निकलैत। पहिने 'घरक ओ स्त्री', पछाति प्रश्न पर 'फुलझरी'। युवकक नाम नहि, मुदा ओकर बाबूक पेशा, टोलाक दिशा आ घरक पीपर मोन। ई असममित स्मृति कथनक विश्वसनीयतापर प्रश्न उठबैत अछि। ककरो नाम मोन नहि रहब सम्भव अछि, तथापि परिचयक आन सूचकसभ स्मरण रहिते नामक अनुपस्थितिक कारण जाँचयोग्य बनैत अछि। समीक्षक लेल ई विरोध साक्षी-भाषाक अध्ययनक सामग्री अछि, स्वतः झूठक अन्तिम निर्णय नहि।

पुरोहित घटना-स्थलपर नहि होयबाक दावा सँ शुरू करैत छथि, मुदा पीयर साड़ी, कलाईक लाल सूत, माटिसँ सटल एड़ी, पूजा-सामग्रीवला थारी, दीया आ फुलझरीक बैठबाक मुद्रा कथित रूपेँ देखैत छथि। रामानुग्रह सोझाँ पूछैत छथि जे जँ उपस्थित नहि रहथि, तँ एतेक विवरण कोना? साक्षी पछाति स्वीकारैत छथि जे ओ पहुँचल छलाह, किन्तु कर्मकाण्ड नहि करौलनि। एहि संशोधनसँ पहिल सीमा बदली जाइत अछि। घटना-स्थलपर उपस्थित होयब

आ विवाहक विधि सम्पन्न करब एक बात नहि; साक्षीक पहिल अस्वीकार सेहो एही अर्थभेदक आइमे लिखल बुझाईत अछि।

लाल सूत केँ विवाहक डोरा नहि, पूजा वा व्रतक चिह्न बतायल जाइत अछि; दीया केँ विवाह-अग्नि नहि; चाउर-सुपारी-सिंदूर-फूलवला थारी केँ सामान्य पूजा-सामग्री कहल जाइत अछि। वस्तु एक, मुदा वर्गीकरणक हित अलग। एतय प्रमाण-वस्तु आ ओकर धार्मिक अर्थक भेद कथा-तर्कक मूल तनाव अछि। वस्तुक उपस्थिति संस्कारक अन्तिम पुष्टि नहि, किन्तु निषेध करबाक प्रयत्नमे ओही वस्तु अत्यन्त विस्तारसँ वर्णित होइत अछि। शब्द चयन घटना-व्याख्याक सत्ता बनैत अछि।

पुरोहित युवकक गैर-ब्राह्मण होयबाक उल्लेख करैत छथि, मुदा ओकर जातिक प्रश्न पर पाँजिक 'अधिकार' नहि होयबाक उत्तर दैत छथि। ओ शास्त्र, गोत्र, कुल, आचार, संस्कारक नाम गनबैत छथि, पर कोनो सटीक लिखित नियम उद्धृत नहि करैत। 'जे सभ मानैत अछि'क आह्वान पर रामानुग्रह लिखित आधार पुछैत छथि। एतय 'अविधि' शब्द दू लोकक संग रहबाक प्रकट इच्छाकेँ वर्णनसँ निर्णयक श्रेणीमे पहुँचेबैत अछि। तर्क वृत्ताकार बनैत अछि—सम्बन्ध मान्य नहि किएक तँ अधिकार नहि, आ अधिकार नहि किएक तँ सम्बन्ध मान्य नहि। एहि वृत्तकेँ सिद्धि मानब हेत्वाभास होयत।

फुलझरीक इच्छा एहि बयानक नैतिक केन्द्र अछि। पुरोहित स्वीकारैत छथि जे ओ स्वयं युवक संग रहबाक इच्छा व्यक्त कयने छलीह; ककरो पुरुष हुनका बदला नहि बजल। मुदा पुरोहित ओकर वाक्यक 'अर्थ' दैत छथि, मूल शब्द नहि; कहैत छथि स्त्रीक वाणी भावसँ चलैत अछि, विधिसँ नहि। एतय एक महिला पात्रक स्वयं व्यक्त अधिकार पुरुष साक्षीक व्याख्यात्मक नियन्त्रणमे फँसैत अछि। 'पाँजिमे हमर इच्छा कतय लिखल अछि?'—ई वाक्य सेहो पुरोहितक स्मृतिसँ आयल अछि, फुलझरीक प्रत्यक्ष लेखन नहि। किन्तु यदि वाक्य कथित रूपमे सही अछि, तँ ई पाँजिक कोष्ठ-रचनाक मूल प्रश्न अछि;

यदि साक्षी पछाति गढने छथि, तखनहु अपन आत्मरक्षाक कथामे ई प्रश्न किएक बचाएल? कथाकार एहि दू सम्भावना खुलल रखैत छथि।

घरक जेष्ठ लोककें सूचना देबाक स्वीकृति आ सूचना पछातिक परिणामसँ पूर्ण दूरी बनायबाक प्रयास साक्षी-परीक्षाक दोसर महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। पुरोहित बिना पूछने कहैत छथि जे ककरो पकड़बाक, रोकबाक, मारबाक वा बाँधबाक आदेश नहि देने रही। आत्म-समर्थनक एहि जोड़ल चारि क्रियाकें कथावाचक लिखैत छथि; तकरा घटना घटबाक प्रमाण नहि मानैत। संध्याक घुरब कहैत- कहैत दीया आधा जरला पर पहुँचबाक लोकक दृश्यक विवरण देनाइ आ फेर दोसरसँ सुनल होयबाक स्पष्टीकरण स्मृतिक स्रोत बदलैत अछि। प्रत्यक्ष आ परोक्ष ज्ञानक सीमा जाँचबाक अध्यायक शिल्प असाधारण सूक्ष्म अछि।

पुरोहित पाठ फेर सुनि 'पीयर साड़ी'क आगाँ 'सम्भवतः', लाल सूतक आगाँ 'पूजाक', आ सूचना देबाक आगाँ 'कर्तव्यवश' जोड़बा चाहैत छथि। रामानुग्रह मूल शब्द काटैत नहि, सुधार पृथक लिखैत छथि। एहि छोट घटनामे तेसर अध्यायक सातम नियम वास्तविक परीक्षण पबैत अछि। 'कर्तव्यवश' घटना नहि, कर्ताक अपन उद्देश्यक व्याख्या अछि। अभिलेखमे हुनकर आग्रह दर्ज होयबाक अधिकार अछि; मुदा एकरा जाँच-निष्कर्ष बना देब साक्षीक व्याख्याक सत्ता कें तथ्यक स्थान देनाइ होयत।

अध्यायक अन्तमे रामानुग्रह पाँच विरोध सूचीबद्ध करैत छथि—उपस्थितिक अस्थिर दावा, युवकक चुनिन्दा स्मृति, घुरबाक समय आ पछातिक दृश्य, विवाहक शब्दक अस्वीकार आ प्रकट इच्छा स्वीकारब, जेष्ठ लोककें खबर देबाक स्वीकार आ परिणामसँ दूरी। एहि सूचीक प्रत्येक सदस्य कथन-विश्वसनीयताक प्रश्न अछि, अपराधक अन्तिम निर्णय नहि। रामानुग्रह ईहो स्वीकारैत छथि जे स्मृति, आत्मरक्षा आ स्वयं हुनकर प्रश्न कथाक रूप बदलि सकैत अछि। एहि आत्म-सन्देहसँ पुरोहितक विरोध-गणना प्रामाणिक शोध-प्रक्रिया बनैत अछि।

सब सँ गहिर प्रश्न ई अछि जे पाँजिमे कोन घटना लिखबाक कोष्ट अछि। पुरोहित जखन अविधि मानल सम्बन्धकेँ पाँजिक बाहर राखैत छथि, तखन स्त्रीक इच्छा आ सम्भावित जीवन-वृत्त अभिलेखक अदृश्य क्षेत्रमे चलि जाइत अछि। 'घटना नहि भेल' आ 'घटना लिखबाक स्थान नहि बनल' अलग बात अछि। अध्याय पाँचसँ चलल रिक्ति-मूल्यांकन एतय सत्ता, धर्म, लिङ्ग आ सामाजिक मान्यताक प्रश्न बनि उठैत अछि। रचनागत सीमा ई जे फुलझरीक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष कथन पाठककेँ एखन भेटल नहि; ओकर आवाज पुरुष पुरोहितक कथन आ वृद्ध पँजीकारक नोटक माध्यमसँ आबैत अछि। एहि मध्यस्थता केँ लेखकक रणनीति होयबाक सम्भावना अछि, किन्तु पाठक लेल स्त्रीक अनुभव अपूर्ण रहैत अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय ६-१०

मोहनक फोन • कैम्प • मेटाओल पाँति • धरती हिलल • साक्षी एक: पुरोहित

एहि बैचक पहिल दू अध्याय कथाक वर्तमान २००८क राहत-प्रशासनमे घटैत अछि; तेसर अध्याय वर्तमानक पन्नासँ पूर्वजक सम्भावित हस्तक्षेप जोड़ैत अछि; नवम अध्याय १९३४क भूकम्पक बहुविध स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि; दसम अध्याय पुरान घटनाक विशेष सामाजिक विवादपर प्रथम साक्षी-परीक्षा करैत अछि। समयक एहि गतिकेँ केवल अतीतमे घुसब नहि बुझबाक चाही। २००८क अभिलेखीय संकट १९३४क मौनकेँ बुझबाक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि, आ १९३४क कथा वर्तमान पाँजिक रिक्त पाँतिक इतिहासगत गहराइ खोलैत अछि।

रामानुग्रह आ मोहनक सम्बन्ध दोसर बैचमे तीन रूप ग्रहण करैत अछि। छठम अध्यायमे फोनक दूरी आ विभागीय पदानुक्रम; सातममे शिविरक मेज पर आमने-सामने प्रशासनिक बहस; आठममे घरक मेज पर परदादाक लिखावट विषयक साझा निरीक्षण। दूरी क्रमशः घटैत अछि, किन्तु प्रश्न अधिक निजी बनैत अछि। मोहनक विभागीय भूमिका वर्तमान खतरा उत्पन्न करैत अछि, पर पुरान पाँजिक सम्भावित उच्छेदनक कारण अपन परिवारमे सेहो प्रश्न जगबैत अछि। पिता-पुत्र जखन अनिश्चित तथ्यक प्रसार रोकबाक पक्षमे सहमत होइत छथि, ओहि सहमतिक सम्भावित उद्देश्य दुनूक अलग भऽ सकैत अछि।

सातम अध्यायक राहत-पञ्जी दस्तावेजक राजनीति देखबैत अछि। कौशल्या देवीक स्वयं परिवार-मुखिया होयब, बुधन-रम्पतियाक पाँच सदस्यक जीवित साक्ष्य, अजित पासवानक बेलहीक नाम, फुलकलीक नैहर-ससुरारक दुहरी स्थिति—ई सब वर्तमान जीवनकेँ पाँजिक पुरान वर्गीकरणक बाहर देखबैत अछि। दसम अध्यायमे फुलझरीक स्वयं व्यक्त इच्छा पाँजिक 'अविधि' सीमा पर रुकैत अछि। एहि दू दृश्यकेँ एकठाम पढ़ला पर स्पष्ट होइत अछि जे कोन

वातक लेल प्रपत्रमे कोष्ठ अछि, इएह सामाजिक पहिचानक अधिकार पर असर डालैत अछि। तथापि शिविरक राहत-नीति आ धार्मिक पाँजिक वैवाहिक नियमक संस्थागत अधिकार अलग अछि; तुलना ई अन्तर मेटाकऽ नहि करबाक।

रिक्तक कारणक प्रश्न आठम अध्यायमे निर्णायक परिवर्तन पबैत अछि। श्रीधरक पाँतिक सतह-वर्षण, रत्नेश्वरक जल-संभावना, जयनारायणक फाटल कोन तीन पृथक वस्तुगत स्थिति अछि। दसम अध्यायमे फुलझरीक पाँजिमे स्थान नहि होयब कागजक भौतिक क्षतिसँ अलग एक विधिगत बहिष्करणक सम्भावना अछि। नवम अध्यायमे १९३४क कथाक मतभेद लिखल जाए सकैत अछि, मुदा दोसर घटनाक मौन अनिर्दिष्ट अछि। तीनू प्रकार—भौतिक क्षति, विधानगत अनुपस्थिति, सामाजिक मौन—परस्पर जड़ि सकैत अछि, किन्तु एक कारणक सिद्धि बिना एकरूप नहि कएल जाए।

भारतीय काव्य-विचारक दृष्टिसँ एहि पाँच अध्यायमे करुण आ विस्मयक सम्भावना भिन्न मार्गसँ प्रकट अछि। शिविरमे बालिकाक उपस्थित देहक तुलना कागजक घटल संख्यासँ होइत अछि; वस्तुस्थिति पाठकमे करुण अनुभूति जगबैत अछि, किन्तु वृद्ध कथावाचक नाटकीय विलाप नहि जोड़ैत छथि। श्रीधरक रेशा घिसल पाँति रहस्यक उत्कण्ठा उत्पन्न करैत अछि। पुरोहितक 'अविधि' शब्दक पुनरावृत्ति न केवल धार्मिक स्थिति, बल्कि अभिव्यक्तिक औचित्यक प्रश्न बनबैत अछि—अर्थ ककरा बचबैत अछि, ककरा बाहर रखैत अछि? कलात्मक ध्वनि एहि अनकहल उत्तरमे अछि।

आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ छठम अध्याय ध्वनि-आधारित समकालिक वार्तालाप, सातम अध्याय बहुपात्रिक सामाजिक दृश्य, आठम अध्याय वस्तुक सूक्ष्म निरीक्षण, नवम अध्याय बहुसाक्षी स्मृतिचित्र आ दसम अध्याय प्रश्नोत्तर साक्षात्कारक विधा अपनबैत अछि। पाँचू अध्यायक गद्य-तलय अलग अछि। सातम अध्यायमे पात्रक संख्या बढ़ि गेलाक कारण परिचयक तीव्रता अछि;

आठममे समय धीम होइत अछि; नवममे प्रसङ्ग-धारित दीर्घ काल उघड़ैत अछि; दसममे विरोधाभासी उत्तरक कारण नाटकीय तनाव बढ़ैत अछि। ई रूपभेद उपन्यासकें एकसमान रहस्य-प्रश्नक सूची बनबाक सँ बचबैत अछि।

नव्य न्यायपरक प्रमाण-विचारमे मोहनक 'नियमित क्षेत्र ओ नहि छल' स्वयं मोहनक कथन अछि; परदादाक हस्तलिपि सँ मेल लेखक-पहिचानक प्रबल सम्भावना; पुरोहितक पाँच विरोध कथन-विसंगति; बुधन सदाक माटि फाटबाक स्मृति मौखिक साक्ष्य। ई सभ एक सन प्रमाण-स्तर नहि। आठम अध्यायमे कागजक घर्षण देखल जा सकैत अछि, मुदा उद्देश्य केवल अनुमानित; दसम अध्यायमे पुरोहितक उपस्थितिक सीमा अस्थिर, मुदा फुलझरीक मूल वाक्य ओहिसँ स्वतंत्र रूपेँ अभिलेखित नहि। समीक्षा जखन यथास्थान 'सम्भावना', 'कथन' आ 'पाठगत तथ्य' कहैत अछि, तखने प्रमाण-शास्त्र साहित्यिक विश्लेषणमे सार्थक बनैत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक अन्तर्गत १९३४क भूकम्प, १९८१क पितामहीक पुनः कथन आ २००८क कागज-परीक्षण अलग समयक साक्ष्य अछि। राजस्व अभिलेख, परिवारक पाँजि, राहत-शिविरक रजिस्टर, मौखिक कथन आ ग्राम-विन्यास अलग संस्था आ भूगोल बनबैत अछि। नवम अध्यायक ऊँच भूमिक स्वामित्व विषयक प्रश्न आधुनिक शिविरक विस्थापनक सामाजिक दबावसँ तुलना योग्य अछि; मुदा एक परिवारक वर्तमान संकटकें पुरान घटना पर बलपूर्वक आरोपि देब इतिहास नहि। समानान्तरता प्रश्न उत्पन्न करैत अछि, स्वतः प्रमाण नहि।

पहिल बैचक तुलनामे एहि बैचक सबसे पैघ प्राप्ति सामाजिक चरित्रक विस्तार अछि। प्रारम्भमे भोला सहनी एकटा गट्टर लेने छल; आब शिविरमे अनेक जाति, स्त्री-मुखिया, प्रवासी पुत्र, साक्षी-बिना परिवार उपस्थित अछि। १९३४क कथा सुनेबाक वृद्ध पितामही, वैद्य, बुधन सदा आ पुरोहित अपन-अपन ठामसँ

बोलैत छथि। मुदा ई बहुस्वरता पूर्ण समता नहि: रामानुग्रह सभ आवाज संकलित करैत छथि, आ फुलझरीक वाणी एखन साक्षी द्वारा पुनः प्रस्तुत अछि। एकर आलोचनात्मक सीमा स्थगित रखल जाय—पाठक आगामी साक्षीसभमे अपनहि कथनक प्रामाणिक पहुँच खोजत।

दू बैचक अन्तिम तुलनात्मक निर्णय ई जे उपन्यास बाढ़िक दृश्यमान अपायसँ अगुआ बढ़ि अभिलेखक अदृश्य हिंसा अथवा न्यायक सम्भावना पर प्रश्न करैत अछि, किन्तु निर्णायक दोषारोपणसँ बचैत अछि। श्रीधरक मेटाओल पाँति वस्तुमे मनुष्यक हस्तक्षेपक संकेत अछि; फुलझरीक नामक अनुपस्थिति सामाजिक विधानक प्रश्न अछि। दूनू घटना संग रहि एक सिद्धान्त नहि बनैत, बल्कि अलग स्रोत जाँचबाक आवश्यकता देखबैत अछि। अगिला चारि साक्षीकेँ पढ़ब एहि कारण अपरिहार्य अछि।

अध्याय ११ — साक्षी दुइः भौजी

मूल उपन्यास, पृष्ठ ६७-७६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

एगारहम अध्याय 'साक्षी दुइः भौजी' दसम अध्यायक पुरोहित-वाणी सँ भिन्न प्रमाण-विधान उघारैत अछि। हरिनारायण झा जँ मन्त्र, अग्नि, कुल-अनुमति आ पाँजि-अधिकारक आधारपर घटनाकें परिभाषित करैत छथि, तँ कमला देवी ओकरा माटिक हाँडी, पीतलक थारी आ सरिसोक तेलक शीशीसँ खोलैत छथि। ई तीन वस्तु मात्र घरेलू परिवेशक सजावट नहि; साक्षीक स्मृति कोन माध्यमसँ काज करैत अछि, तकर प्रारम्भिक घोषणा अछि। घटना अहाँक सोझाँ अदालतक नाटक जकाँ नहि, अधूरा घरेलू कामक क्रम जकाँ अबैत अछि।

कमला देवीक कालगणना घड़ीक सङ्ख्या नहि, दू खेपक भात, दूध उतारबाक समय, गोरू बान्हब आ तुलसी लग दीया जरबाक क्रम अछि। भूकम्पक पछाति परिवारक लोक अस्थायी छाजनमे रहैत छलाह, तँ रसोईक एहि असाधारण व्यवस्थासँ समयक स्थानीय मानचित्र बनैत अछि। उपन्यास घटना-काल कें लिखित समयरेखासँ ओहिना नहि प्रमाणित मानैत जेना घरक कामक स्मृतिसँ; दुनूक प्रमाण-सीमा अलग अछि। 'सन्ध्या पहिने'क अस्पष्टता स्वीकार करब एहिठाम घड़ीक मनगढ़न्त निश्चिततासँ अधिक विश्वसनीय साहित्यिक विधान अछि।

फुलझरीक साड़ीक रंग, लाल सूत आ पएरक घाव पर कमला देवी तीन महत्त्वपूर्ण प्रतिवचन दैत छथि। पुरोहितक 'पीयर साड़ी' हुनका लेल उज्जर साड़ी पर हल्दीक पुरान दाग अछि; धार्मिक सूत हुनका लेल छिलल कलाई पर फाहा बान्हबाक उपाय; एड़ीक चोट हुनका देखभालक स्मृतिमे औंठाक बगलमे फाटल ठाम बनि जाइत अछि। एतय पुरुष-साक्षीक धार्मिक अर्थारोपण आ घरेलू सेवाकार्यसँ उत्पन्न सूक्ष्म शारीरिक ज्ञानक बीच अन्तर देखाइत अछि। मुदा समीक्षाक अनुशासन ईहो मांगैत अछि जे भौजीक संस्करणकें स्वतः

अन्तिम सत्य नहि मानल जाए; ओ स्वयं पूर्वाग्रह आ स्मृतिक सीमा सहित उपस्थित छथि।

थारीमे चाउर, दू सुपारी, सिंदूर, सूखल फूल आ कमला देवी जोड़ल गुड़क टुकड़ी वस्तुक प्रतीकात्मक बहुलता बनबैत अछि। पुरोहित एहि सामग्रीकें संस्कारक नियममे तौलैत छथि, भौजी रसोईक पेटार, गुड़ काटबाक चाकू आ थारीक स्वामित्वकें महत्त्व दैत छथि। सिंदूरक डिबिया फुलझरी स्वयं लेलीह—एहि तथ्यपर कमला देवी नहि मानैत छथि जे घरक स्त्रीकें डिबिया छूबाक अलग अनुमति चाही। स्त्रीक निर्णयसँ असहमत रहलाक बादो हुनकर दैनन्दिन वस्तु-अधिकार मानव चरित्रक एक जटिल, असङ्गत किन्तु विश्वसनीय पक्ष अछि।

सब सँ निर्णायक कथन ई अछि जे फुलझरी देवस्थानसँ साँझक बाद घर घुरलीह। हुनकर दुआर लाँघब, ओसार पर ठाढ़ रहब, घरक दू वृद्ध पुरुषक उपस्थितिक बोध आ अपन चुनल पुरुष संग रहबाक घोषणा—ई सभ ‘दुनू दिनमे भागि गेल’ सन सरल लोककथाकें जटिल बनबैत अछि। कमला देवी ओसार धरि अपन दृष्टिक सीमा साफ करैत छथि: पछिला कोठलीमे बालकसभकें लेने गेलाक बाद की भेल, ओ नहि देखलनि। एहि अवकाशमे कथाकार पाठकक उत्कण्ठाकें सनसनीक निष्कर्षसँ नहि भरैत।

‘हम ओकर संग रहब’ आ ‘हमरा रोकि कऽ की करब?’ वाक्यक विषय कमला देवी अपन स्मृतिपर भरोस दैत छथि। तेसर सूत्र—जे लिखल नहि अछि से असत्य नहि—ओ भाव-स्मृति कहैत छथि, मूल शब्द नहि। एहि सूक्ष्म भेदसँ मौखिक साक्ष्यक भाषा-विज्ञान उघड़ैत अछि। अभिप्राय बचल रहि सकैत अछि, मुदा शब्दशः उद्धरणक दावा नहि। रामानुग्रह एहि तेसर कथनक आगाँ मूल शब्द अनिश्चित लिखैत छथि; ई उपन्यासक पद्धतिगत आत्मालोचना अछि, नहि कि पाठककें निश्चित उत्तर नहि देबाक चेष्टा।

कमला देवी युवकक नाम लिखबासँ मना करैत छथि, कारण ‘पुरान अपमानक उमेर नहि होइत’। टोलक दिशा आ पिता-पुत्रक श्रम-विवरण देलाक बावजूद

जाति-नाम टारि दैत छथि। एकरा केवल सूचना छिपाएब कहल जाए तँ पर्याप्त नहि; नाम लिखब पछिला पीढ़ी पर सामाजिक दबाव फेर सक्रिय कऽ सकैत अछि, एहि भयक भीतर स्त्री-साक्षी अपनी सुरक्षा-रणनीति बनबैत छथि। तथापि ई गोपनता जगेसरक नामकें समाजक वैध अभिलेखसँ बाहर राखबमे सहायक सेहो बनैत अछि। रक्षा आ निषेधक दोहरा फल ई अध्यायक गहन नैतिक द्वन्द्व अछि।

‘भोर धरि रूक’क आग्रह कथाक भावात्मक उत्कर्ष अछि, किएक तँ एहि वाक्यमे कमला देवीक कटु नैतिक मत आ फुलझरीक सुरक्षाक वास्तविक चिन्ता एक-दोसरासँ टकराइत अछि। ‘भोर धरि रुकलहुँ तँ फेर कखनो नहि जा सकब’ फुलझरीक कथित उत्तर सम्बन्ध चुनबाक स्वाधीनता आ परिवारक दबावक बीच समयकें नैतिक दाब बनबैत अछि। मुदा ई दुनू वाक्य केवल भौजीक पुनःस्मृति द्वारा उपलब्ध अछि; मूल घटना-स्थलक ध्वनि-अभिलेख नहि। एहिठाम करुण रस घोषणासँ नहि, समयक छोट विलम्ब आ सम्भावित परिणामक अनिश्चिततासँ जन्मैत अछि।

ओसार पर बाँसक छड़ी देखब, पीतलक वस्तु खसब आ बढल बोलक आवाज सुनब आरोपक तत्काल आधार नहि बनैत। कमला देवी छड़ीकें वृद्धक दैनिक सहारा कहैत छथि; मारपीटक प्रत्यक्ष दर्शन स्वीकार नहि करैत छथि; रोदनक ध्वनि याद नहि। नव्य न्यायपरक विवेचनमे एहिठाम हेतुक असिद्धता महत्वपूर्ण अछि: क्रोध आ ध्वनि सँ आघातक अनुमान सम्भव, मुदा घटना सिद्ध नहि। साक्षी स्वयं देखल, सुनल आ अनुमानित बातक भेद राखैत छथि, जे हुनकर पूर्वाग्रहक बावजूद कथनकें गंभीर बनबैत अछि।

अन्तिम वस्तु-पञ्जी—नहि खायल भात, नहि लगायल तेल, नहि खोलल बिछाओन, घर नहि घुरल थारी—अनुपस्थितिक भौतिक भाषा अछि। भौजी फुलझरीक जीवनकें व्यक्त करबाक लेल काव्यात्मक शोकगीत नहि गाबैत छथि; ओ ओहि रातिक बाँचल काम गनबैत छथि। भारतीय औचित्य-विचारक धरातलपर एहि घरेलू विस्तारक संगति सशक्त अछि, किएक तँ पात्रक भाषा

हुनकर सामाजिक ठाम आ अनुभवसँ निकलैत अछि। स्त्रीक देखभालक ज्ञान घटनाक पुनर्निर्माणमे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य बनैत अछि, भले ओही स्त्रीक मूल्याङ्कन रूढ़ सामाजिक मर्यादासँ बान्हल हो।

अध्यायक कलात्मक उपलब्धि 'निर्दोष स्त्री' बनाम 'निष्ठुर घर' सन एकरेखीय खाका अस्वीकार करब अछि। कमला देवी स्नेहमयी सेहो छथि आ जाति-पार सम्बन्ध पर लज्जाक दबाव स्वीकार करनिहारो; हुनकर वस्तुस्मृति सूक्ष्म अछि, पर अर्थ-विचार पूर्वाग्रहसँ प्रभावित। एहि बहुरूपतासँ पाठक साक्षीक विश्वास्यता आ सामाजिक न्यायबोधकेँ अलग-अलग तौलय विवश होइत अछि। सीमा ई जे घरेलू विवरणक दीर्घ विस्तार कथाक बाह्य गति सुस्त करैत अछि; मुदा एहि अध्यायमे ओ विलम्ब प्रमाणक श्रेणी आ स्त्रीक अप्रत्यक्ष इतिहास बनबैत अछि, तँ केवल अनावश्यक पुनरावृत्ति नहि कहल जा सकैत।

अध्याय १२ — कोसी — २

मूल उपन्यास, पृष्ठ ७७-७८ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

बारहम अध्यायमे कोसीक प्रथमपुरुष ध्वनि चारि मानवीय साक्ष्यक बीच कथानक-विराम नहि, भूगोलक वैकल्पिक अभिलेख बनि कऽ अबैत अछि। 'हम एखन बहैत छी'क अविराम स्वर भूकम्पक क्षणिक आघातकें माटिक दीर्घकालिक रूपान्तरसँ जोड़ैत अछि। धरतीक भीतर बालूक तह, कूपक झुकल घेरा, चिरायल तुलसी-चौरा आ पोखरिक अस्थिर जल उपन्यासक स्मृति-विचारकें मानवीय मुखसँ निकालि स्थलाकृतिमे फैलाबैत अछि।

अध्याय ९मे पितामह-पितामहीक भिन्न स्मृतिमे घंटी पहिने बाजल कि देवाल पहिने खसल—एहि प्रश्नक प्रतिध्वनि नदीक वाणीमे घुरैत अछि। नदीक कथनमे 'पहिने' आ 'पछाति' प्राकृतिक प्रक्रियाक स्तरपर मानवीय घड़ी जकाँ साफ नहि। ई भिन्नता सब साक्षीकें गलत सिद्ध नहि करैत; एकहि घटना स्थलानुसार अलग भौतिक प्रभाव छोड़ि सकैत अछि, तकर साहित्यिक व्याख्या अछि। एहि कारण १९३४क आपदा, १९६१क साक्ष्य आ २००८क पठन एक काल-रेखामे बन्द नहि रहैत।

नदीक द्वारा माटिक भीतरक नमी, ढलान आ नालाक बदलैत बाट देखाओल गेल अछि। नक्शा अपन सीधी रेखा सुरक्षित राखैत अछि, पाँजी वंशक क्रम, मुदा धरतीक आकार बदलि जाइत अछि। 'गाम एहि परिवर्तन कें एक तिथि दैत अछि मुदा माटि अनेक तिथि राखैत अछि' सन सूत्र एहि खण्डक कालदर्शनक केन्द्र अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ पाठककें प्राकृतिक परिवर्तन, प्रशासनिक सीमाङ्कन आ वंश-अभिलेख तीनूकें पृथक स्रोत-पद्धति मानि पढ़य पड़ैत अछि।

कूपक घेरा, ईंटक टुकड़ी, हड्डी, काँसाक खण्ड आ लाल सूत नदीक प्रवाहमे वस्तु मात्र रहैत अछि; ओ स्वयं नहि कहैत जे किनकर, कोन संस्कारक अथवा

कोन हिंसाक चिन्ह अछि। एतय मानवीय कथा-निर्माण आ वस्तु-साक्ष्यक अन्तर सामने अबैत अछि। नदी न अपराधी चिन्हैत अछि, न साक्षीक बहस निपटबैत अछि। प्राकृतिक वस्तुकें अभिलेख मानबाक सम्भावना देखबैत काल उपन्यास ओहि अभिलेखक व्याख्याकारक उत्तरदायित्व सेहो रेखाङ्कित करैत अछि।

‘सतहक चुप्पी तलक काजक प्रमाण नहि मेटबैत’ एहि जल-प्रतीकक सर्वाधिक अर्थवान विस्तार अछि। ऊपरी शान्ति आ भीतरी कटान जकाँ मौखिक साक्ष्यमे मौनक कात कथाक छोट अन्तर जमा होइत अछि। मुदा नदीक उपमा सीधे हत्या वा अपराध सिद्ध करबाक प्रमाण नहि; ई पाठककें देखबैत अछि जे अनुपस्थित शब्दक इतिहास खोजबाक प्रश्न कोना उठैत अछि। प्रमाणक अभाव आ गुप्त क्रियाक सिद्धता एक नहि—नदी-प्रतीकक सौन्दर्य तखने सुरक्षित रहैत अछि जखन एहि सीमा कें मानल जाए।

पुरोहितक शास्त्रीय भाषा, भौजीक चूल्ह-थारी, बुजुर्गक डरक ध्वनि आ खेत जोतनिहार हाथक अनुभव नदीक कथनमे पृथक रंगक धार बनि कऽ अबैत अछि। ‘धार मिललाक बाद जल पृथक नहि; कथन मिललाक बादो रंग बचल’क कल्पना बहुस्वरिक आख्यानक बड़ सार्थक रूपक अछि। कोनो एक आवाज बाकीकें आत्मसात नहि करैत। एहि रूपमे उपन्यास स्मृतिक बहुलता कें अराजकता नहि, जाँचक आवश्यक परिस्थिति बनबैत अछि।

अध्यायक अन्तिम संकेत खेत जोतनिहार हाथक दिशा दिस अछि; अगिला ‘साक्षी तीन: हरवाह’क प्रवेश एकाएक नहि, पूर्व-निर्मित ध्वन्यात्मक आ सामाजिक सङ्केतसँ होइत अछि। नदी ‘न्याय नहि करैत’ कहि कऽ स्वयंकें फैसला देनिहार संस्था बनबासँ रोकैत अछि, मुदा जे लोक नदीक किनारमे श्रम करैत अछि, तकर अनुभूति समुन्नत करैत अछि। भाषिक रूपमे बिना नियमित पूर्णविरामक दीर्घ प्रवाह नदीक उन्मुक्त चलनक अनुकृति अछि; ई शिल्प प्रभावी, यद्यपि लगातार घनत्व पाठकसँ विशेष एकाग्रता माँगैत अछि।

अध्याय १३ — साक्षी तीनः हरवाह

मूल उपन्यास, पृष्ठ ७९-८६ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

तेरहम अध्यायमे साक्षीक ठाम बदलैत अछि। बुधन सदा रामानुग्रहक घरक ओसार नहि, दक्षिणक बँसबिट्टीक कात बैसबाक ठाम चुनैत छथि। ‘घरक भीत कान रखैत छै’ कहि ओ स्थानक सामाजिक जोखिम स्पष्ट करैत छथि, आ ई वाक्य लिखबासँ मना सेहो करैत छथि। कथनक आरम्भहि सँ साक्ष्यक तथ्य आ ओकरा कहबाक सुरक्षित परिस्थिति अलग नहि रहि सकैत। घरक मालिकाना स्थान पर जाँच तटस्थ नहि रहैत; साक्षी कहाँ बोलि सकैत छथि, ईहो प्रमाणक निर्माणमे सहभागी अछि।

एहि साक्षीक विवरण रामानुग्रह १९६१क जेठमे लिखने छथि, जखन ओ पचीस वर्षक छलाह; घटनाक मूल पृष्ठ १९३४क अछि आ वर्तमान पठन २००८मे चलैत अछि। तीन समयक भेद उपन्यासक अनुसन्धानकें स्मृति-प्राप्तिक विलम्बसँ भरैत अछि। बुधन सदाक हथेलीक घट्टा आ मुडल तर्जनी पर आरम्भिक दृष्टि महत्वपूर्ण अछि: पँजीकार जँ उमेर सङ्ख्यासँ बुझय चाहैत छथि, तँ हरवाहक देह श्रमक दीर्घ इतिहासक रूपमे उपस्थित अछि। ई देहक साक्ष्य सटीक जन्म-वर्षक विकल्प नहि, मुदा जीवनक एक आन माप अछि।

‘खेत मालिकक छल, बैल मालिकक छल, घाम हमर छल’—ई सूत्र स्वामित्व आ श्रमक असमानता कें अत्यल्प शब्दमे खोलैत अछि। बुधन सदा वंश, मूल, कुलक प्रश्नक बदला खेत, माटि, बाट आ पयरक अनुभवसँ उत्तर दैत छथि। एहि भिन्न भाषिक संरचनासँ पूर्वक पुरोहित आ भौजीक कथनक समकक्ष एक तेसर ज्ञान-परम्परा बनैत अछि। उपन्यास हरवाह कें केवल पीडितक प्रतीक नहि बनबैत; ओ धरतीक चिरा, पानीक दिशा, टोलक ठाम आ लोकक गति पहिचाननिहार साक्षी छथि।

भूकम्पक पछाति दक्षिण-पूरब खेतमे लम्बा चिरा, पहिल दिन धूर, दोसर दिन नमी, तेसर दिन पानि—ई क्रम नदीक पिछला अध्यायक भौतिक कालबोधसँ मेल करैत अछि। मुसहर टोलक नाम बुधन सदा स्पष्ट कहैत छथि, जखन पुरोहित टोलक उल्लेखो टारैत छथि आ भौजी केवल दिशा कहैत छथि। एहि नामकरणमे सामाजिक भूगोलक एहन पुनर्स्थापन अछि जे प्रमाणक नक्शा बदलि दैत अछि। कोनो बस्तीकेँ ‘दक्षिण टोल’ मात्र कहब आ ओकर वास्तविक लोक-नाम कहब एक समान अभिलेखीय क्रिया नहि।

बुधन सदा युवकक नाम ‘जगोसर सदा’ कहैत छथि; पुरोहित ओ नाम नहि कहैत छथि, भौजी जानि कऽ रोकैत छथि। जगोसरक बाबू दलित सदा, ओकर खेत-माटि-नावक काज, अक्षरक किछु अभ्यास, आ माटि पर लकड़ीसँ अपन नाम लिखबाक वर्णन उपन्यासक केन्द्रीय ‘नाम लिखब’ प्रश्नकेँ देह आ श्रमसँ जोडैत अछि। जगोसरकेँ केवल जातिक प्रतिनिधि बनायबासँ रोकय लेल ई छोट मानवीय विवरण आवश्यक अछि। नाम-पहिचानक पुनर्प्राप्ति ओ व्यक्ति पर सहानुभूतिक सामान्य उद्घोष नहि, विशिष्ट सामाजिक अस्तित्वक पुनर्वाचन अछि।

फुलझरी आ जगोसरक भेट विषयमे बुधन सदा गणना नहि गढ़ैत छथि। खेतक खुलल स्थानक उल्लेख कऽ ओ पूछैत छथि—‘खेतमे एकान्त कोना?’ एहि प्रश्नसँ सभ दृश्यकेँ छुपल प्रणयक रूपमे पढ़बाक सुविधाजनक दृष्टि बाधित होइत अछि। दुनू अपन संग रहबाक निश्चय कयने छलाह—ई बुधनक मूल्याङ्कन अछि; देवस्थानक विधि ओ प्रत्यक्ष नहि देखलनि। हुनकर टोलमे दू मनुष्यक सार्वजनिक दायित्व-स्वीकारकेँ ‘घर बसौनाइ’ कहल जाएब संस्कार-विधान आ सामाजिक स्वीकृतिक एक वैकल्पिक मानक प्रस्तुत करैत अछि। मुदा एहि मानककेँ पुरोहितक धार्मिक निर्णयक समानार्थक मानब अनुचित।

रातिक साक्ष्यमे अध्याय धीरे-धीरे अपन सभसँ कठिन नैतिक ठाम पर पहुँचैत अछि। बुधन सदा मुख्य बस्तीमे झगडा बढ़बाक खबर सुनलाक बाद मुसहर टोलक दू पुरुष संग उत्तर दिस पुरान आमक गाछ लग गेलाह। ओ रक्त देखलनि, भूमि पर एक देह देखलनि, माथक कात रक्त देखलनि; न मारबाक

क्रिया, न मारनिहार, न हथियार देखलनि। शरीर श्वास लैत छल कि नहि, ओ वैद्य नहि होयबाक कारण निश्चित नहि कहैत छथि। ई स्पष्ट सीमा राखि देबासँ कथनक भीषणता घटैत नहि; उलटे पाठककें कल्पित पूर्ण विवरणसँ दूर राखैत अछि।

बुधन सदा घटनाकें 'हत्या' कहैत छथि, मुदा रक्तसिक्त देहक नाम नहि कहैत छथि। लेखक एहि शब्दकें पात्रक आरोप आ अनुभवजन्य निर्णयक रूपमे बचबैत छथि, अनुसन्धानसँ प्रमाणित मृत्यु-वृत्तक रूपमे नहि। 'अधूरा रहय दिअ'क आग्रह डरक कारण अछि; नाम लिखल गेल तँ फेर हिंसाक सम्भावना, एहि सामाजिक विवशताक भाषिक आकार अछि। एहिठाम नाम-रक्षण आ सत्य-प्रकाशनक दायित्व एक-दोसरासँ टकराइत अछि।

'कागज बलवान अछि, ताहि लेल डर अछि' साक्षी-बोधक केन्द्रीय वाक्य अछि। पँजीकार कागजकें स्मृति सुरक्षित करबाक साधन मानैत छथि; बुधन सदा ओहि कागजक मालिकाना शक्ति आ दण्डकारी परिणाम देखैत छथि। 'जखन कागज केवल मालिकक नहि रहत' एहि शर्तमे इतिहास-लेखनक सामाजिक अधिकार पर प्रखर प्रश्न अछि। लिखित भाषा स्वयं न्यायपूर्ण नहि; लिखबा, रखबा, देखेबा आ पढ़बाक अधिकार ककरा छैक, एहि संस्थागत सम्बन्धसँ ओकर प्रभाव निर्धारित होइत अछि।

फुलझरीक विषयमे साक्षी ओकरे मानवीय स्वभाव बचबैत छथि—क्रोध, हठ, सोझाँ बात कहबाक स्वभाव; जगेसर सेहो जिद्दी आ गीत सुनबाक लेल काज छोड़निहार। एहि छोट विवरणसभक बिना प्रेम-प्रसङ्ग दू जातिक अमूर्त प्रतीक बनि जाइत। 'जखन लोक ओकर नाम नहि कहलक ... दू मनुष्य गायब भऽ गेल, दू जाति बचल रहल'—ई साक्षीक कथन एहि प्रतीकीकरणक विरुद्ध प्रतिवचन अछि। कथाक सामाजिक आलोचना एहि विशिष्ट चरित्र-लक्षणक कारण नारा नहि बनैत।

नव्य न्यायपरक दृष्टिसँ एकटा महत्वपूर्ण अन्तर अछि: बुधन सदाक प्रत्यक्ष देखल रक्तसिक्त देह, हुनकर 'हत्या' विषयक अनुमान, आ भोरमे फैलल 'भागि गेल' जनश्रुति अलग-अलग प्रमाणवर्गक दाबी करैत अछि। लोक-श्रुति कमजोर पड़ैत अछि, मुदा अनुमानक कमजोर कड़ी—देहक अनिर्धारित पहिचान—एखन शेष अछि। अध्यायक कलात्मक सफलता ई अछि जे साक्षीक साहसक सम्मान करैत ओहि दुर्बल कड़ी केँ नहि मेटैत। सीमा ई जे किछु कथन सामाजिक आलोचनाक सूत्रवत् पूर्णता धरैत अछि; तथापि साक्षी द्वारा देखल ठाम, देह आ नामक भय एहि सूत्रकेँ वास्तविक कथात्मक अनुभवसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय १४ — साक्षी चारिः पँजीकार

मूल उपन्यास, पृष्ठ ८७-९२ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

चौदहम अध्याय उपन्यासक विधामे निर्णायक परिवर्तन करैत अछि। आरम्भ 'पृष्ठ २१७। विवादित शाखा' सँ होइत अछि; ई आब सामान्य प्रथमपुरुष दैनिकी वा मौखिक साक्षात्कार नहि, पुरान पँजी-पृष्ठक दस्तावेजी रूप अछि। मूल, ग्राम, अधिकार, सम्बन्ध, साक्ष्य-सूची, आपत्ति, प्रतिवचन, परवर्ती निर्णय, नकल-विधान—एहि क्रममे घटना संस्थागत लेखनक भीतर प्रवेश करैत अछि। पाठककें दस्तावेजक कथ्य आ दस्तावेज द्वारा कएल निर्णय—दुनू अलग-अलग पढ्य पडैत अछि।

पन्नाक प्रारम्भ श्रीधर मिश्र, पिता वाचस्पति, पितामह रघुपति, कौशिक मूल आ फुलझरीक जन्म-वर्ष १९०१ दर्ज करैत अछि। 'विवाहक पूर्व अभिलेख उपलब्ध नहि'क उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ अपन संरचना अनुसार पाँजि लोकक जीवनक निर्विवाद समग्र ज्ञान नहि, एक सीमित अभिलेख होयबाक स्वीकार करैत अछि। मुदा ओही सीमित व्यवस्थामे परिवारक अन्य शाखाक विवाह-व्यवहारक चिन्ता फुलझरीक सम्बन्धक नोंद बदलय लगैत अछि। दस्तावेजक प्रयोग-सुविधा सामाजिक विलोपनक आधार बनैत अछि।

पुरोहित, गृह-स्त्री आ हरवाहक कथन एहि पृष्ठमे साररूपेँ राखल अछि; जगेसर सदाक नाम आ फुलझरीक इच्छा प्रथम लेखमे स्पष्ट अछि। पीतलक थारी, कंधी, साड़ी, तकली, तेलक शीशी, बिना गठरीक कोठली आ रातिक पुरुष-आवागमनक साक्ष्य सूचीबद्ध अछि। अभिलेख पहिने स्वयं स्वीकार करैत अछि जे एहन सामग्री पूर्व-नियोजित दूर-प्रस्थानक सामान्य कथासँ मेल नहि खाइत। कागजक इमानदार प्रारम्भ आ ओकर पछिला निषेधक बीच दूरी अध्यायक गहन व्यङ्ग्य बनैत अछि।

प्रथम लेखमे फुलझरी अपन इच्छासँ जगेसर संग गृहस्थ-सम्बन्ध स्वीकार कयने छलीह, देवस्थान लग वचन भेल, परिवारक अनुमति नहि। एहिपर दू तिरछा चिन्ह अछि आ लेख स्थगित कएल जाइत अछि। आपत्तिसभमे नाम, गोत्र-प्रमाण, कुल-अनुमति, पुरोहितक कर्म-विधान आ दक्षिण टोलक साक्ष्यक अस्वीकार एक क्रम बनबैत अछि। विडम्बना ई जे पुरुषक वंश-पाँति एहि पाँजिमे नहि होयब, पाँजि-प्रणालीक अपूर्णताक प्रमाण होयबाक बदला सम्बन्ध अमान्य करबाक कारण बनि जाइत अछि।

‘इच्छा आ स्वीकृत विवाह एक वस्तु नहि’—एहि आपत्तिक परीक्षण दुरुह अछि। अध्याय स्वयं इच्छा, विधिक मान्यता आ कुलज्येष्ठक अनुमति तीनूकें पृथक राखैत अछि; इच्छा स्पष्ट भेटलाक बादो विवाहक संस्थागत दर्जा विवादित रहि सकैत अछि। आलोचनाक उत्तरदायित्व एतय मूल पाठक सामाजिक अन्याय चिन्हब आ कथानकक प्रमाणगत सीमा नटेब, दुनू अछि। फुलझरीक इच्छा सिद्ध होयबाक अर्थ ई नहि जे प्रत्येक संस्कार सम्पन्न भेल; संस्कारक विवाद ई सेहो सिद्ध नहि करैत जे फुलझरीक इच्छा अस्तित्वहीन छल।

‘रातिक घटना’ शीर्षक अन्तर्गत दक्षिण टोल दिस अनिष्ट, भूमि पर एक देह आ अनिश्चित पहिचान लिखल अछि। मुख्य लेखमे मृत्यु वा हत्या शब्द नहि चढेबाक तर्कमे प्रत्यक्ष मारनिहारक अभाव जकाँ विवेचनीय प्रमाण-सीमाक संग परिवार-पक्षक अस्वीकार सेहो जोड़ल जाइत अछि। ई दोसर आधार साक्ष्यक स्वरूप नहि, पक्षकारक सामाजिक शक्ति अछि। नव्य न्यायपरक दृष्टिसँ हेतुक प्रमाणीकरण आ पक्षकारक हित-सुरक्षा एक श्रेणी नहि; दस्तावेज जहिना दुनूकें एकसंग रखैत अछि, तहिना ओकर निष्पक्षताक दावा कमजोर होइत अछि।

परवर्ती निर्णयमे जगेसरक नाम मुख्य पाँजि-पृष्ठसँ हटेबाक, सम्बन्धकें पृथक विवाद-पत्रमे रखबाक आ ओ पत्र बाहरी पाठककें नहि देखेबाक प्रस्ताव अछि।

एक प्रति पेटारमे, बाहरी अनुक्रमणिका नहि, नकल दू प्रति नहि—ई सभ व्यवस्था सूचना-प्रबन्धनक ठोस प्रक्रिया अछि। दस्तावेज रहब आ दस्तावेज तक पहुँचब अलग बात होइत अछि। जँ केवल चयनित लोक ओ पत्र पढ़ि सकैत छथि, तँ लिखित तथ्यक अस्तित्वो सामाजिक स्मृतिमे ओकर उपलब्धता सुनिश्चित नहि करैत।

‘पृथक पत्र रहय; मुख्य पाँति शुद्ध कयल जाय’क ‘शुद्ध’ शब्दक नीचाँ खींचल रेखा असाधारण महत्त्वक अछि। शुद्धिकरण साधारणतः त्रुटि हटेबाक प्रक्रिया बुझल जाइत अछि; एतय शुद्धि एक असुविधाजनक सत्यक संकेत हटेबाक प्रक्रिया बनि जाइत अछि। पहिल, दोसर, तेसर लेखक पाठक्रम छोट होइत-होइत अन्ततः रिक्तिमे बदलैत अछि। ई मात्र विलोपन नहि, अर्थक क्रमशः सङ्कुचन अछि—व्यक्ति आ सम्बन्धसँ विवाद, विवादसँ संकेत, संकेतसँ चुप्पी।

अध्याय खुरचनाइक तकनीक बारीक रूपसँ देखबैत अछि: मसिक माथ, कागजी तन्तु, बचल बिन्दु, पातर सतह, दाबक चिह्न। अधिल्ला अध्याय दमे देखल मानवीय घर्षणक सम्भावना एहिठाम मूल अभिलेखक लिखल क्रम द्वारा पुष्ट करबाक सर्जनात्मक युक्ति भेटैत अछि। तथापि दस्तावेजमे जे जकाँ-जकाँ लिखल अछि, से उपन्यासक भीतरी साक्ष्य अछि; एकरा बाह्य इतिहासक स्वतन्त्र सत्यापन नहि मानल जाए। कलात्मक दृष्टिसँ विवरण ठोस अछि, कारण पाठक अक्षर हटाओल जाएबाक भौतिक प्रक्रिया आ सामाजिक उद्देश्य दुनूकें संग पढ़ैत अछि।

‘स्वच्छ प्रति’ बनबाक निर्णय मूल सतहक घर्षणकें नकलसँ हटा दैत अछि। नव प्रति मे केवल बचल पठनीय लेख रहत, आ ई नहि लिखल जाएत जे पहिने किछु हटाओल गेल। एहि चरणमे विलोपन शारीरिक चिन्हसँ आगे बढ़ि पीढ़ीदरपीढ़ी चलनिहार अभिलेखीय नियम बनि जाइत अछि। नव्य न्यायमे अनुपलब्धिक अर्थ सन्दर्भ पर निर्भर अछि: स्वच्छ प्रतिमे फुलझरीक नाम नहि

भेटबासँ ओकर पूर्व-अस्तित्वक अभाव सिद्ध नहि; कारण नकल स्वयं चुनल पाठकें मात्र बचवैत अछि।

पृष्ठक अन्तमे 'जे लिखल नहि जाए...' अधूरा वाक्य अछि आ पछिला गाढ़ मसिमे 'विवाद-पत्र उपलब्ध नहि'—तिथि आ लेखक-संकेत बिना। ई दू चुप्पी अलग प्रकृतिक अछि। अधूरा वाक्य सोच वा लेखनक असमाप्त क्रिया; अनुपलब्ध पत्र वस्तुक अनुपस्थिति। पत्र कखनो बनल नहि, बनि कऽ हटाओल गेल अथवा कतहु रहल—पत्रा कोनो एक सम्भावना निश्चित नहि करैत। हस्तलिपिक चिह्नसँ हाथक परिचय भेटि सकैत अछि, मुदा मनक प्रेरणा स्वतः नहि। एहिठाम कथाकार अनुसन्धानक अधिकारकें साक्ष्यक सीमा तक राखैत छथि।

अध्यायक शिल्पगत साहस ई अछि जे भावुक चरम-वाक्यक बदला निर्णय-पत्रक शुष्क क्रममे सामाजिक हिंसाक संरचना उद्घाटित करैत अछि। परिवारक अन्य सन्तानक विवाह-चिन्ता, पत्र देखेबाक निषेध आ स्वच्छ नकलसँ अभिलेखक सामूहिक स्वार्थ साकार होइत अछि। सीमा ई जे पत्राक क्रम अत्यन्त व्यवस्थित आ पाठक-समझाइत जकाँ विकसित अछि; वास्तविक अभिलेखक आकस्मिकता किछु कम देखाइत अछि। मुदा रचनाक भीतर ई योजनाबद्धता पँजीकारक विधिक दमनकारी प्रयोगक क्रम-चित्र प्रस्तुत करबाक औचित्य रखैत अछि।

अध्याय १५ — जे लिखल नहि गेल

मूल उपन्यास, पृष्ठ १३-१९ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

पन्द्रहम अध्याय पहिल चारि साक्ष्यकें एक कागज पर निचोड़बाक बदला चारि अलग भारसँ दबा कऽ राखैत अछि। पुरोहित, कमला देवी, बुधन सदा आ पँजी-पृष्ठक ऊपर अलग वस्तु—पीतलक कटोरी, काठक पट्टी, खाली दवात आ पुरान दबनी—आ बीचमे उज्जर पन्ना। ‘जे लिखल नहि गेल’ शीर्षकक ई दृश्य उपन्यासक आलोचनात्मक पद्धतिक रूपक अछि। बगलमे राखब, अलग पहिचान बचायब, मिलान करब, मुदा अनुमानसँ रिक्ति नहि भरब: रामानुग्रहक पाठक-चरित्र स्वयं साहित्यिक समीक्षकक अनुशासन देखबैत अछि।

पहिल मिलान काल-क्रमक अछि। कमला देवी फुलझरीक संध्यापूर्व गमन आ घर घुरबाक प्रत्यक्ष स्मृति रखैत छथि; पुरोहित देवस्थानक उपस्थितिक बात मानैत, मुदा समय बदलैत छथि; बुधन सदा जगोसर संग साँझक उजासमे भेट देखलनि; पँजी-पृष्ठ सेहो आगमन-प्रस्थानक मुख्य बिन्दु स्वीकार करैत अछि। मेलसँ एतबा उचित निष्कर्ष निकलैत अछि जे ‘फुलझरी दिन ढलबाक पहिने दूर परदेस भागि गेलीह’ सन कथन साक्ष्यसँ असंगत अछि। मुदा संध्याक बीचक प्रत्येक क्षण पूर्णतः पुनर्निर्मित नहि होइत।

पीतलक थारी चारू कागजमे विद्यमान अछि, पर ओकर अर्थ सब ठाम एक नहि। पुरोहितक लेल कर्म-विधानक सम्भावित साधन, भौजीक लेल रसोईसँ गेल अपन घरक वस्तु, बुधन सदाक लेल हाथमे देखल सामग्री, आ पँजीकारक लेल भौतिक साक्ष्य। एहि वस्तु-बहुलतामे कथाकार प्रतीककें एक अर्थमे बन्द नहि करैत छथि। प्रमाण-विचारक दृष्टिसँ वस्तुक निरन्तर उपस्थिति तुलनात्मक रूपेँ मजबूत, ओकर धार्मिक अर्थ विवादित अछि। ठीक एहिना लाल सूत आ साड़ीक रंग पर मतभेद मुख्य घटना न असत्य करैत, न सिद्ध।

फुलझरीक इच्छा विषयक चारू साक्ष्यमे अपेक्षाकृत अधिक सामञ्जस्य अछि। पुरोहित हुनकर स्वकथित इच्छा मानैत छथि; भौजी 'हम ओकर संग रहब' सुनबाक बात कहैत छथि; बुधन सदा दुनूक संग रहबाक निश्चयक उल्लेख करैत छथि; पँजीक प्रथम लेखमे स्वयं इच्छा पर नाम-सहित विवरण अछि।

एहि मेलक वजन विवाहक कर्म-विधान विषयक विवादसँ पृथक अछि।

भारतीय औचित्यचिन्तन आ पाश्चात्य नैतिक आलोचनामे व्यक्तिक वाणीकें सामाजिक पाँजि द्वारा नकारल जएबाक अन्तर नायिकाक अनुपस्थिति कें सेहो नैतिक उपस्थितिमे बदलैत अछि।

एहि अध्यायक सबसँ महत्त्वपूर्ण स्वतः-प्रश्न ई जे फुलझरीक अपन हाथक कोनो लिखल अक्षर उपलब्ध नहि। हुनकर वाणी पुरुष पुरोहित, भौजी, हरवाह आ पँजीकारक माध्यमसँ पाठक धरि पहुँचैत अछि। एतय पात्रक स्वाधीन इच्छा बचल अछि, मुदा प्रत्यक्ष लेखकीय स्वाक्षर नहि। कथाकार हुनका लेल काल्पनिक पत्र, गुप्त दैनिकी वा अन्तिम कथन नहि बनबैत; ई संयम स्त्रीक अनलिखित इतिहासकें विशेष विश्वसनीय आलोचनात्मक स्थिति दैत अछि। तथापि एकर कलात्मक मूल्य प्रश्नरहित नहि—पाठककें फुलझरीक भीतरी जगत तक बहुत सीमित प्रवेश भेटैत अछि।

नामक भिन्न व्यवहार समाजक अधिकार-संरचना उघारैत अछि। पुरोहित जगेसरक टोल आ काज मोन राखैत, नाम नहि; भौजी नाम जानि कऽ रोकैत; बुधन सदा नाम उच्चरित करैत; पँजीक पहिले लेखमे नाम अछि, अन्तिम नकलक आधारमे नहि। एहि क्रमसँ स्पष्ट अछि जे जगेसर मूलतः बेनाम नहि छल; बेनाम बनाओल गेल। सामाजिक विलोपनकें प्राकृतिक विस्मृतिक पर्याय मानब एहि पाठक विरुद्ध होयत। मुदा नाम हटेनिहार व्यक्तिक अन्तिम प्रेरणा प्रत्येक चरणमे अलग प्रमाणसँ जाँचबाक चाही।

ओसारक राति कथाक सबसँ पैघ असिद्ध अन्तराल अछि। कमला देवी पुरुषसभक क्रोध, ऊँच आवाज आ एक वस्तुक खसबाक ध्वनि कहैत छथि, मारपीटक प्रत्यक्ष दृश्य नहि। पुरोहितक कथन कर्म-विधानक सीमामे अटकल

रहैत अछि। बुधन सदा घरक ओसार पर नहि, पुरान आमक गाछ लग रक्तसिक्त देह देखैत छथि। पँजी-पृष्ठ पुरुषक आवागमन लिखैत अछि, व्यक्ति-क्रम नहि। तीन-चारि प्रमाणक कात मिलला पर सेहो एक सतत प्रत्यक्ष दृश्य नहि बनैत। रचनाक रहस्य एहि खण्डित प्रमाणक ईमानदार दूरीसँ उत्पन्न होइत अछि।

बुधन सदाक 'हत्या' पद आ पँजीकारक मृत्यु-हत्या नहि लिखबाक निर्णय एक-दोसराक सीधा निषेध नहि। पहिल पात्रक भय आ देखल रक्तसिक्त देहपर आधारित निष्कर्ष, दोसर पात्रक संस्थागत स्वीकार्यता-अनुकूल दर्जबन्दी। देहक पहिचान, मारनिहार, आ हिंसाक क्रिया कथा-पाठमे प्रमाणित नहि। एहि कारण न कथावाचक अपराधक न्यायिक निर्णय करैत छथि, न 'भागि गेल' जनश्रुतिक सुविधाजनक पुनरावृत्ति। नव्य न्यायपरक विवेचनमे प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ अनुपलब्धि एहि ठाम अलग-अलग भार राखैत अछि।

भोरमे फुलझरी घरमे नहि भेटब आ जगेसर अपन टोलमे नहि भेटब—ई दू अनुपस्थितिक तथ्य जनश्रुतिमे 'दुनू भागि गेल' बनि जाइत अछि। मुदा अनुपस्थितिसँ स्वेच्छिक प्रस्थान सिद्ध नहि होइत। कियो पहिने 'भागि गेल' कहलक, के नेपाल-नैहरक दिशा जोड़लक, एहि सभक स्रोत अनिश्चित। सत्याभास उत्पन्न करबाक सामुदायिक प्रक्रिया एहि अफवाहक विस्तारमे देखाइत अछि। जेना नक्शामे स्थानक नाम टिकैत अछि, तहिना सार्वजनिक मुखमे बनल कथन मूल प्रमाण बिना टिकि सकैत अछि।

जगेसरक माय दुइ मास बाट दिस देखैत रहबाक बुधन सदाक स्मृति पँजीकारक अभिलेखसँ सर्वथा बाहरी लोकजीवनक पीडा अछि। एक महिला फुलझरी मुख्य वंश-पृष्ठसँ हटाओल जा रहल छथि; दोसर, जगेसरक माय, शुरुहिसँ एहि पञ्जी-अधिकारक भीतर उपस्थित नहि। मृत्यु-क्रिया नहि भेल कहब आ मृत्यु नहि भेल कहब अलग। उपन्यास शोकक एहि अनिर्णीत स्थितिक माध्यमसँ ओहि लोकक अस्तित्व पर ध्यान खींचैत अछि जिनकर प्रतीक्षा सार्वजनिक दस्तावेजमे कोनो खण्ड नहि पबैत।

तिनि लेखक क्रम अध्यायक अभिलेखीय प्रतिनाट्य बनैत अछि। पहिलमे फुलझरी-जगेश्वरक नाम, दोसरमे विवादित सम्बन्ध, तेसरमे पृथक पत्रक संकेत, तकर पछाति खुरचनाइ। विवाद-पत्रक अभाव आ मुख्य पत्राक सतह पर घर्षण दू अलग प्रकारक प्रमाण अछि। 'विवाद-पत्र उपलब्ध नहि' पछिला गाढ़ मसिक कथन अछि, मुदा पत्र कखनो बनल कि बनि कऽ हटाओल गेल—ई नहि बतबैत। एहि कारण कथा प्रमाण नष्ट होयबाक सम्भावना देखबैत अछि, प्रमाण-नाशक निश्चित व्यक्ति वा तिथि नहि।

'जे लिखल नहि जाए...' अधूरा सूत्रक आगाँ रामानुग्रह अनेक सम्भावित वाक्य जोड़ि सकैत छलाह, मुदा कोनो नहि जोड़ैत छथि। ई अनपूर्ति कथा-प्रविधिक प्रमुख उपलब्धि अछि। उपन्यास अपना शीर्षक 'जल-पाँजि'क दोहरा अर्थमे घुरैत अछि: जल पाँति मेटबैत अछि, मुदा मनुष्य सेहो चयन, खुरचनाइ आ नकल द्वारा पाँति मेटा सकैत अछि। ई समानता प्रकृतिक दोष आ मनुष्यक उत्तरदायित्वकें एक नहि करैत; उलटे योजनापूर्वक भौतिक मेटनाइ आ आकस्मिक जल-क्षतिक अन्तर तीक्ष्ण करैत अछि।

अन्तिम मेल-विरोध-रिक्ति सूची समाधानक अनिवार्यता विरुद्ध कथात्मक उत्तरदायित्वक प्रतिज्ञा अछि। विवाह पूर्णतः सिद्ध नहि, सम्बन्ध मनगढ़न्त नहि, पलायन सिद्ध नहि, मृत्यु प्रमाणित नहि—एहि संयममे नैतिक पक्षधरता आ प्रमाणगत विनम्रता संग-संग चलैत अछि। आलोचनात्मक सीमा ई जे खुला रिक्ति पर अत्यधिक बल पाठकक कथा-समाधानक अपेक्षा अनिर्णीत छोड़ैत अछि; मुदा उपन्यासक अर्जित शिल्प एहि असमाप्तताकें चमत्कार नहि, अभिलेखक सत्य-संरक्षण मानैत अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय ११-१५

साक्षी दुइ: भौजी • कोसी — २ • साक्षी तीन: हरवाह • साक्षी चारि: पँजीकार • जे लिखल नहि गेल

एगारह सँ पन्द्रह धरि पाँच अध्यायक विन्यास एक क्रमिक 'अभिलेखीय परीक्षण' अछि: घरेलू साक्षी, नदीक अविराम स्वर, श्रमजीवी साक्षी, संस्थागत पँजी-पृष्ठ आ चारू विवरणक मेल-विरोध। अध्याय ११, १३ आ १४ क्रमशः तीन सामाजिक ठामसँ फुलझरी-जगेसरक घटना कहैत अछि; अध्याय १२ प्राकृतिक काल-भूगोल दैत अछि; अध्याय १५ कोनो नवा घटना नहि गढ़ि, उपलब्ध कथनक वजन अलग-अलग तौलैत अछि। एहि संयोजनसँ आख्यानक गति खोजपूर्ण भऽ जाइत अछि, मुदा पाठकक शीघ्र फैसला देबाक अपेक्षा निरन्तर चुनौती पबैत अछि।

दसम अध्यायक पुरोहितसँ एगारहम अध्यायक भौजी तक पहुँचब शास्त्रक वर्गीकरणसँ गृहक अनुभव दिस कथानकक महत्त्वपूर्ण सरकन अछि। पुरोहित मन्त्र-अग्नि-कन्यादान-पाँजि-अधिकारक अनुपस्थिति पर जोर दैत छथि। कमला देवी दैनन्दिन काजक समय, फुलझरीक चोट, थारीक स्वामित्व आ घर घुरबाक प्रत्यक्ष दृश्य रखैत छथि। दूनू एक घटना कहैत छथि, मुदा दूनूक चिन्ताक केन्द्र अलग अछि; एहिलेल हुनकर कथनक विरोध केवल स्मृतिभ्रम नहि, अनुभूतिक सामाजिक संरचनासँ सेहो जुड़ल अछि।

बारहम अध्याय ई द्वन्द्व केवल मनुष्यक परस्पर-विरोध बनि नहि रहय दैत। नदीक कालमे १९३४क भूगर्भिक आ २००८क जल-संकटक बीच भूमि अनवरत बदलैत अछि। भूकम्पक स्मृतिमे अलग-अलग ध्वनि आ दृश्य, नदीक वाणीमे अलग-अलग स्थानक प्रभाव अछि। एहि समांतरता सँ पाठक जानैत अछि जे बाह्य समय, देहक स्मृति, अभिलेखीय तिथि आ माटिक रूपान्तर एक नक्शापर सहज रूपसँ मिलि नहि सकैत।

बारहमक अन्तिम संकेत खेतक हाथ अछि आ तेरहमक प्रथम दृश्य बुधन सदाक घट्टाधारी हथेली। एहि हस्तान्तरणमे शिल्पगत अनुशासन अछि। नदीक वाणी नहि कहैत जे कोन साक्षी सही; ओ खेत-कछेरक अनुभूति महत्त्वपूर्ण होयबाक आधार तैयार करैत अछि। बुधनक कथन ओही आधारकें इतिहासक सामाजिक न्याय-सवालमे बदलैत अछि: जे लोक खेत जोतैत अछि ओकर अपन भूमि, लेखन आ गवाही पर कतेक अधिकार अछि? ई प्रश्न फुलझरीक कथा सँ पैघ भऽ कऽ समाजक नाम-पञ्जी धरि पहुँचैत अछि।

चारि साक्षी एकठाम राखिते फुलझरीक इच्छा पर उल्लेखनीय सामञ्जस्य भेटैत अछि। कमला देवी प्रत्यक्ष सुनल वाक्यक शब्द-स्मृतिक भेद करैत छथि, बुधन सदा दुनूक दायित्व-स्वीकारक बात कहैत छथि, पुरोहित स्वकथित इच्छा स्वीकार करैत छथि, पँजी-पृष्ठ पहिल लेखमे ओकरा नोंदबद्ध करैत अछि। एहि सामञ्जस्यसँ ‘कोनो सम्बन्धे नहि छल’ सन कठोर दाबी दुर्बल होइत अछि। मुदा विवाहक विधिक स्वीकृति तकरा सँ स्वतः सिद्ध नहि— इच्छाक प्रमाण आ संस्कारक प्रमाण पृथक श्रेणी अछि।

वस्तुक तुलनामे पीतलक थारी एक केन्द्रीय संगति अछि। एकर भौतिक उपस्थिति आ देवस्थान पाछाँ भेटबाक कथन बारम्बार घुरैत अछि, मुदा धार्मिक, घरेलू आ संस्थागत अर्थ अलग अछि। लाल सूत आ साडीक रंगमे विरोध सबसँ तीक्ष्ण अछि; एहि विरोधकें निर्णायक प्रमाण बनबासँ कथा स्वयं बचैत अछि। गौण वस्तुक मतभेदक कारण सम्पूर्ण साक्ष्य फेंकि देब आ मतभेद उपेक्षित कऽ सम्पूर्ण साक्ष्य एकरूप मानब—दुनू समीक्षात्मक त्रुटि होयत।

रातिक भयक तीन पृथक स्तर बनैत अछि। कमला देवी जेष्ठ पुरुषसभक क्रोध आ भोर धरि रुकबाक सलाहक स्मृति रखैत छथि; बुधन सदा उत्तर दिशाक पुरान आमक गाछ लग रक्तसिक्त देह देखबाक बात कहैत छथि; पँजी-पृष्ठ घटनाकें अनिष्टक अस्पष्ट नाम दऽ कऽ मुख्य लेखसँ मृत्यु-हत्या पद हटबैत अछि। ई तीनू स्तर जोड़लासँ सम्बन्धित आशङ्का तीव्र होइत अछि, मुदा

मारनिहार आ देहक पहिचान एखनहुँ स्थापित नहि। घटना-पुनर्निर्माणमे 'सम्भावित' आ 'सिद्ध' भेदक रक्षा आवश्यक अछि।

नव्य न्यायपरक प्रमाण-परीक्षणमे कमला देवीक ओसार-पर्यन्त प्रत्यक्ष अनुभव, बुधन सदाक रक्त-देहक प्रत्यक्ष अनुभव, परवर्ती स्मृतिसँ कहल शब्द, पँजीक लिखित सूत्र, आ भोरक जनश्रुति भिन्न श्रेणी अछि। बुधन द्वारा 'हत्या' शब्द देब ओकर अनुभवक व्याख्या अछि; रामानुग्रह ओकरा मूल कथनरूपेँ बचबैत छथि, नहि कि न्यायालयक प्रमाणित निष्कर्षक रूपमे। पँजीकारक परिवार-पक्षक अस्वीकारकेँ प्रमाणगत कमी जकाँ रखब मात्र न्यायपूर्ण सावधानी नहि—एहि मे संस्थागत पक्षपातक सम्भावना अछि।

'कागज केवल मालिकक नहि रहत'क बुधन-सूत्र आ 'पृथक विवाद-पत्र बाहरी पाठककेँ नहि देखाओल जाय'क पँजीकारक आदेश परस्पर तीव्र अन्तर्पाटीय संवाद रचैत अछि। पहिल कथन ज्ञानक सामाजिक साझा-अधिकारक माँग अछि; दोसर अभिलेखक पहुँच सीमित करबाक व्यवस्थित प्रक्रिया। एवम् उपन्यासक सङ्घर्ष लेखनीय सत्यक अभाव मात्र नहि, लिखल सत्यक संरक्षण, स्वामित्व आ सार्वजनिक पहुँचक प्रश्न सेहो अछि।

नारी-पात्रक दृष्टिसँ एक जटिल त्रिकोण अछि। फुलझरी अपन संग रहबाक निर्णय कहैत छथि, मुदा अपन हस्तलिखित पत्रा उपलब्ध नहि। कमला देवी घटनाक मुख्य घरेलू साक्षी छथि, पर सामाजिक लज्जाक तर्क सेहो मानैत छथि। जगेशरक माय मार्ग दिस प्रतीक्षा करैत छथि, मुदा पँजीक औपचारिक वृत्तमे हुनकर साक्ष्य अनुपस्थित अछि। एहि तीन ठाम स्त्रीक इच्छा, देखभाल आ प्रतीक्षा अलग-अलग सामाजिक दृश्य बनबैत अछि; कोनो एक सामान्य 'स्त्री-स्थिति' सभ पर आरोपित नहि कएल जाए।

अध्याय १४क तिनि लेखक क्रम उपन्यासक सर्वाधिक सफल दस्तावेजी शिल्प अछि: नाम सहित सम्बन्ध, विवादित नोंद, पृथक पत्रक संकेत, अन्ततः

खुरचल रिक्ति। संगहि नकल बनबाक नियम पुरान मूल पन्नाक घर्षण चिन्ह स्वच्छ नकलसँ मेटा दैत अछि। एहि द्विस्तरीय मेटनाइमे प्राकृतिक जल-क्षति आ इच्छाकृत सामाजिक विलोपनक अन्तर उद्घाटित अछि। प्रारम्भमे पात्र जे जलसँ बचल अक्षर सुखा रहल छलाह, आब ओ अक्षरक मानवीय मेटनाइक कारण खोजैत छथि।

पन्द्रहम अध्यायक मध्य उज्जर कागज अधिल्ला सभ भिन्न प्रमाणकें एक केन्द्रमे दृश्य करैत अछि। उपन्यास पाठककें निश्चय देबाक लेल अन्तिम 'गुप्त सत्य' प्रकट नहि करैत; प्रमाणक मेल, विरोध आ रिक्ति तीन खण्ड बनबैत अछि। भारतीय ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ रिक्त ठाम अर्थक अनन्त छुट्टी नहि, बरु उपलब्ध कथनक कात नैतिक आशङ्का आ करुण अनुभूतिक नियन्त्रित व्यञ्जना बनैत अछि। शिल्पक शक्ति एहि नियन्त्रणमे अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिक संगतिमे कमसँ कम चारि समयरूप पृथक राखब आवश्यक अछि—१९३४क घटना आ मूल पाँजि, १९६१मे बुधन सदाक कहने साक्ष्य, बादक पारिवारिक स्मृति-पुनर्पाठ, आ २००८मे रामानुग्रहक भीजल कागज-परीक्षण। एहि साहित्यमे नामित स्थान, भूगोल आ ऐतिहासिक घटनाक उल्लेख कृति-जगतक तथ्य अछि; बाह्य अभिलेखक स्वतंत्र जाँच बिना ओहिसँ वास्तविक ऐतिहासिक अपराध निष्कर्षित नहि कएल जा सकैत अछि। साहित्यिक इतिहासबोध आ बाह्य इतिहास-प्रमाणक सीमा एक-दोसराकें मजबूत करैत अछि।

पाँच अध्यायक संयोजनक सीमा किछु ठाम देखाइत अछि। साक्षीसभक बारम्बार 'हम नहि देखलहुँ' वा 'अनुमान नहि' कहबाक अनुशासन एक विशिष्ट वाक्य-रीतिक पुनरावृत्ति बनैत अछि। चौदहमक अति व्यवस्थित पाँजी-पृष्ठ सेहो पाठक-समझाइत रचनात्मक संरचना जकाँ देखाइत अछि। मुदा ई आवृत्ति कथा कें न्यायाधारित रहस्यक सनसनीसँ बचबैत अछि; प्रत्येक साक्षीक सामाजिक ठाम, स्मृतिक साधन आ प्रमाण-सीमाक फेरबदल दोहरावकें कार्यात्मक अर्थ दैत अछि।

एहि बैचक समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष ई जे 'जल-पाँजि' व्यक्ति आ संस्थाक बीच सच्चाइक प्रतिस्पर्धा मात्र नहि, सत्य कहबाक परिस्थितिक विषमता उजागर करैत अछि। जे बोलैत अछि ओकर बात कोन कोष्ठमे लिखल जाएत, ककर नाम पाठ्य रहत, ककर स्मृति अप्रमाणित कहल जाएत, आ ककर पत्र बाहरी पाठकसँ नुकाओल जाएत—एहि सबकँ कविता, मौखिक कथन, नदी-वाणी आ पँजीक शुष्क प्रविष्टि मिलि प्रश्न करैत अछि। घटना अनिर्णीत रहलो पर प्रश्न अधिक टोस होइत अछि; ई साहित्यिक आलोचनाक अपेक्षित अर्जन अछि।

अध्याय १६ — १९३४क बाढ़ि

मूल उपन्यास, पृष्ठ १००-१०६ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

सोलहम अध्याय '१९३४क बाढ़ि' एखन धरि फुलझरी-जगेसरक राति सम्बन्धी साक्ष्यक केन्द्रसँ दक्षिण टोलक बदलैत भौतिक ठाम दिस दृष्टि लऽ जाइत अछि। रामानुग्रह स्पष्ट करैत छथि जे हुनका अपराधक नव प्रमाण नहि, भूगोलक चिन्ह भेटल। एहि आत्मनिर्धारित सीमा सँ अध्यायक नैतिक स्वर ठहरैत अछि: स्थानक परिवर्तन जाँचकँ कठिन करि सकैत अछि, मुदा नदीक काजकँ ककरो अपराध छिपेबाक सुनियोजित कारण कहल नहि जा सकैत। कथा आपदा आ मानवीय अभिलेखनक सङ्गमक समस्या पहिचानैत अछि, एकरा षड्यन्त्रक तैयार निष्कर्ष नहि बनबैत।

तीन तरहक दस्तावेज—भूकम्प-पछाति घर-क्षतिक सूची, वर्षाकालक अन्न-सहायताक बहि आ लगान-पत्रक पुरान नकल—एकहि बस्तीक तीन प्रशासनिक प्रतिरूप बनबैत अछि। 'मुसहर टोली', 'दक्षिण टोला' आ 'खेतिहर बस्ती'क अन्तर लिखनिहारक प्रयोजनसँ उपजल अछि; लोक ओएह छथि। भूकम्प सूची घरक बनावट गनैत, राहतबहि चाउरक मात्रा, लगान-पत्र सीमा आ बासक नाम। दस्तावेज जे नहि कहैत, तकर कारण कखनो ओकर तकनीकी प्रयोजन होइत अछि, कखनो सामाजिक दृष्टिक अन्धता; दू कारण एक नहि।

भूकम्पक सत्ताइस घरक लेखमे पाँच पूर्ण ढहल, नौ रहबा अयोग्य, शेषमे अलग क्षति अछि। राहतबहि मे अठारह परिवार आ पछिला पन्नामे उत्तर ऊँच ठाम दिस गेल लोकक उल्लेख अछि; किछु नाम दोहरायल आ आधा पन्ना जलसँ क्षतिग्रस्त। एहि संख्यासभकँ स्वतः जनसंख्याक अन्तिम कुल मानल नहि जाए; घर, परिवार आ राहत पाबनिहारक परिभाषा समान नहि। मूल कथा स्वयं जाँचक एहि विसङ्गतिक प्रति सावधान अछि। नव्य न्यायपरक दृष्टिसँ गणनाक अलग आधार होयब कारण-अनुमानमे भ्रम उत्पन्न करि सकैत अछि।

पुरान लगान-पत्रक 'मुसहर टोलीक बास' पछिला नकलमे 'बालूमय परती' भऽ जाइत अछि। ई खुरचल पाँतिक विपरीत, एकरूप नवा लेख अछि; ककरो हाथसँ पुरान नाम काटबाक दृश्य नहि, माटिक परवर्ती अवस्था नोंदबाक प्रशासनिक क्रिया अछि। मुदा प्रभाव एकदम निरपेक्ष नहि: जहाँ लोकक बास छल, भविष्यक पाठक ओतय मात्र भूमि-प्रकार पढ़त। एतय स्मृतिक विलोपनक एक अल्पदृश्य विधि भेटैत अछि—पूर्व परिचय नकलमे बिना विरोधक हटि जाइत अछि।

बुधन सदाक बताओल पुरान आमक गाछ, टोलक उत्तर-पश्चिम, पुरान धारक मोड़ आ लगान-पत्रक आम-बारी तीन धरातलपर परस्पर कुछ मेल दैत अछि। मुदा दूरीक भरोसापात्र माप नहि; रामानुग्रह जानि-बुझि मानचित्र नहि बनबैत छथि। तीन दिशासूचक उल्लेखकँ एक पन्ना पर राखब आ बीचक स्थान खाली छोड़ब अनुसन्धानक एक सक्रिय नैतिक निर्णय अछि। एतय नक्शा खींचब ज्ञान नहि, अप्रमाणित निश्चितता बनि सकैत छल।

गामक कथनमे भूकम्पक विशेष ध्वनि अनेक अछि; बाढ़िक वर्णन 'दक्षिण टोल नहि बचल' सन छोट वाक्यमे सिमटैत अछि। एहिसँ सामाजिक स्मृति दुखद घटनाक दृश्यात्मक असमानता पकड़ैत अछि। घर बहबाक सूचीक बूढ़ि स्त्री, नाव, मचान, बकरा, बैल, धानक मटका सन वस्तु लोकजीवनक पुनः-निर्माण करैत अछि; फुलझरी आ जगोसरक नाम एतय नहि अछि। कागज तत्कालीन जीवित परिवारक राहत लेल बनल छल, पुरान विवादक अन्वेषण लेल नहि— ई अन्तर्निहित सीमा कथाकार स्पष्ट रखैत छथि।

दक्षिण टोलक परिवारसभ एकठाम पुनः नहि बसलाह; सम्बन्धीक आँगन, मालिकक खलिहान, बाँधल मचान आ नव ऊँच पट्टीक बीच बिखरि गेलाह। एक वर्ष पछाति अठारह परिवारमे सात दोसर गाममे, चारि बदलल उपनामसँ, तीन अनिश्चित पहिचानसँ देखाइत छथि; शेषक अर्थ कथा स्वयं निश्चय नहि करैत। स्थानीय ठाम नष्ट भेलाक अर्थ मनुष्यक जीवन समाप्त भेल नहि।

‘टोल लोकमे बचल, भूमि पर नहि’ विस्थापनक भावात्मक, नहि मापनात्मक, साक्ष्य अछि।

बादिक प्रहारक सामाजिक असमानता उपन्यासक गम्भीर निष्कर्ष अछि। फुलझरीक मूल घर ऊँच भागमे बचल; दक्षिण टोलक पुरान बास, आम-बारी आ सम्भावित घटनास्थल जल-बालूक रूपान्तरमे अस्पष्ट भेल। प्राकृतिक नदी ‘एक पक्ष चुनि’ नहि बहैत; पर अलग भू-स्थितिमे अलग सामाजिक समूहक अभिलेखीय सम्भावना असमान रूपसँ नष्ट होइत अछि। एहि भेदक बिना ‘नदी एक पक्षक इतिहास बहौलक’क साहित्यिक विधानकेँ उद्देश्यपूर्ण प्राकृतिक दण्ड बुझबाक त्रुटि भऽ सकैत अछि।

ग्राम-बैसारक पाँच परिवार लेल ‘अस्थायी रूपेँ रहबाक अनुमति’ आ पछाति ओही ठाम स्थायी घर बनि जाएब दफ्तरी समय आ जीवनक समयक असमानता रेखाङ्कित करैत अछि। भूमि पर बास स्थायी भेल, मुदा अधिकारक पृथक निर्णय नहि भेटल। नारी-प्रतीक्षा सेहो एहि विचलनसँ प्रभावित अछि: जगेसरक माय कतय बाट देखैत रहल, बादिक तिथि अनुसार ओहि ठामक अनुमान बदलि सकैत अछि। रामानुग्रह प्रश्न लिखैत छथि, मनगढ़न्त उत्तर नहि।

अन्तिम ‘दक्षिणक मुसहर टोल पुरान ठामसँ उजड़ल’ आ ‘रातिक घटनाक सम्भावित भौतिक ठाम बादिपश्चात् पहचानब कठिन’ दू सुरक्षित निष्कर्ष अछि। ‘एहि सँ लाभ ककरा भेल?’ तेसर वाक्य लेखक नहि लिखैत। भारतीय ध्वनि आ पाश्चात्य स्मृति-अध्ययन दुनू धरातलपर ई रोकेल कलम सामाजिक आशङ्का केँ जीवित रखैत अछि, मुदा ऐतिहासिक आरोप बनबाक अनुमति नहि दैत। अध्यायक सीमा ई जे कागजक वर्गीकरणक आवृत्ति गति मन्द करैत अछि; प्राप्ति ई जे स्थानक अनुपस्थिति आ अभिलेखक अनुपस्थितिक दू अलग कारण स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय १७ — सन्धि

मूल उपन्यास, पृष्ठ १०७-११६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

सतरहम अध्याय २००८क पुनर्पाठ सँ १९५४क बैसाखमे लौटैत अछि, जखन रामानुग्रह अठारह वर्षक छथि। ‘सन्धि’ शीर्षक राष्ट्र-द्वयक औपचारिक दस्तावेजक कथा कहलासँ बेसी ओकर समाचार गाम धरि पहुँचबाक क्रम देखबैत अछि। हाट सँ आएल जनश्रुति चारि दिनमे चारि रूप ग्रहण करैत अछि—जल रोकब, बाँध बनब, तटबन्धक बीच नदीकेँ रखब आ गाम उठेबाक सम्भावना। पितामहक ‘ककर कहल?’ सवाल प्रारम्भहि मे स्रोतक भिन्नता स्थापित करैत अछि।

अखबारक फाटल प्रति डाकघरमे पहुँचलाक पछाति २५ अप्रैल १९५४ आ कोसी परियोजनाक शब्द भेटैत अछि। बैराज, नहर, बाढ़ि-नियन्त्रण, सिंचाइ आ विद्युतक आशय लोकसभ अपन पूर्व अनुभवसँ अलग-अलग बूझैत छथि। अखबारक सार्वजनिक शब्दमे गामक नाम नहि; पाठकक लोक-प्रश्न ‘हमर गाम कतय पड़त?’ एहि अभावकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। एहिठाम रचनाक आलोचनात्मक धरातल सन्धिक वास्तविक कूटनीतिक प्रभावक बाहरी पुष्टि नहि, उपन्यासमे समाचारक अर्थ-परिवर्तन अछि।

पितामह बाहरी समाचारक तिथि अपन पृथक बहिमे ‘सन्धिक समाचार प्राप्त’ कहि नोंदैत छथि, ‘गाम सुरक्षित होयत’ नहि। ई कथनक विषय आ कथनक सत्य-मूल्यक भेद अछि। सरकारी सर्वेक्षण-सूचनामे भूमि नापब आ कर्मचारीक प्रवेशक अनुमति अछि; घर टुटब कि बचबक घोषणा नहि। मुखियाक ‘घर तोड़बाक बात नहि’ पर किसानक ‘घर बचबाक बात अछि?’ प्रश्न औपचारिक लेखनक मौनक वास्तविक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि।

सर्वेक्षणक उपकरण—चेन, लाल-सफेद दण्ड, तिपैया, हथौड़ी, काठक खूँटी आ लाल चिन्ह—कथाक दृश्य-भाषा बनैत अछि। कर्मचारी अंक लिखैत छथि,

ग्रामीण खूँटी देखैत छथि। पहिल खूँटी लगाबैत चारि प्रश्नमे तीन बेर 'एखन नहि' आ एक बेर 'हमरा लग आदेश नहि'क क्रम तकनीकी सावधानी आ सामाजिक चिन्ताक बीच तनाव रचैत अछि। खूँटी कागजक पूर्वानुमानक रूपमे डर, आशा आ प्रतिरोधक वस्तु बनैत अछि, यद्यपि ओकर तत्काल वास्तविक अर्थ केवल माप-सूचक अछि।

माटि-जाँचक बेलनाकार नली आ तहक पुडिया नामक बदला अङ्कक दुनियाँ उपस्थित करैत अछि। जे खेतक लोक अपन मालिक, सीमा वा फसलसँ चिन्हैत छथि, ओतक माटि परीक्षण-संख्या बनैत अछि। तकनीकी दृष्टिसँ संख्या आवश्यक होयब कथा अस्वीकार नहि करैत; मुदा ओहि संख्याक सामाजिक अनुवाद पारदर्शी नहि होय तँ आशङ्का बढ़ैत अछि। राज्यक अभिलेखन-विधि आ वंश-पँजीक विधिक भेद एहि दृश्यसँ धीरे-धीरे ठोस होइत अछि।

तेरह, सोलह आ उन्नैस खूँटीक जनश्रुतिगत गिनती तीन अलग भविष्यवाणी बनैत अछि। खूँटी-संख्या स्वयं तटबन्ध, नहर अथवा भूमि-अधिग्रहण प्रमाणित नहि करैत। नव्य न्यायपरक विवेचनमे चिह्न देखबाक प्रत्यक्ष प्रमाण आ ओकर उद्देश्य विषयक अनुमान पृथक राखबाक आवश्यकता अछि। पितामहक 'वस्तु पृथक लिख, कथन पृथक'क प्रशिक्षणक कारण रामानुग्रह अपन बहिमे जे देखल आ जे सुनल—दुनू अलग नोंदैत छथि।

पुरान राजस्व-नक्शा आ नव सर्वेक्षण-नक्शामे धारक मोड़ अलग देखाइत अछि। कर्मचारी 'नव मापसँ रेखा सुधरत' कहैत छथि, रामानुग्रह 'पुरान अशुद्ध' वा 'नव शुद्ध' लिखब टारैत छथि। एहि निषेधमे अधिकृत सुधारक दावा आ प्रमाणित कारणमे अन्तर अछि। पँजीक पुरान नामक समस्या आब सार्वजनिक भू-अभिलेखनमे प्रवेश करैत अछि; जँ नक्शाक रेखा सुधरल, तऽ पछिला प्रति पुरान भेदक स्मृति बचाओत कि नहि? एहि प्रश्नसँ आगामी अध्यायक आधार तैयार होइत अछि।

दक्षिण टोलक पुरान सीमा विषय बुजुर्गसभक हाथ अलग-अलग दिशा देखबैत अछि; सर्वेक्षणक दण्ड सीधा, साक्षीक अंगुरी अनुमानाधीन। ई अत्यन्त सशक्त दृश्य अछि, कारण इञ्जीनियरी ज्ञान स्थानीय स्मृतिक आवश्यकता अस्वीकार नहि करि सकैत, मुदा स्थानीय स्मृति सेहो मापजोग स्थिर संख्या नहि।

‘गामक पुरान नाम’ पढ्य रामानुग्रह केँ बजाओल जाएब एहि दोहरा ज्ञानक सहकार्यक प्रारम्भ अछि। पितामह स्रोतक स्पष्टता—पाँजिक पाँति बनाम लोकक कथन—बनौने रखबाक शिक्षा दैत छथि।

अध्यायक अन्तिम दृश्य नक्शाक तेसर रिक्त ठाम पर कर्मचारीक पेन्सिल रुकनाइ अछि। रामानुग्रह अनिश्चित नाम तुरन्त नहि भैरैत छथि; ‘पुरान नामक जाँच करबाक होयत’ कहैत छथि। एतय प्रश्नहिन रिक्ति बनल नहि, जाँच-योग्य रिक्ति सुरक्षित रहल। सन्धिक पैघ राजनीतिक शीर्षक अन्ततः एक स्थानीय नामक लिखनाइ रोकबाक निर्णयमे अवतरित होइत अछि। शिल्पक सीमा ई जे अनुशासनबद्ध अभिलेखनक नियम बेराबेरी कहल जाइत अछि, मुदा ग्राम्य डर, उपकरण आ भाषिक रूपान्तर ओकरा नव प्रसङ्गमे सार्थक करैत अछि।

अध्याय १८ — नक्शा

मूल उपन्यास, पृष्ठ ११७-१२६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

अठारहम अध्याय 'नक्शा' सतरहमक रोकल नामसँ आरम्भ होइत अछि। मुखियाक ओसार पर चारू कोना ईटसँ दबाओल नक्शा, राजस्व-दफ्तरक लिपिक, अमीन आ सर्वेक्षण-कर्मचारीक सामने अठारह वर्षीय रामानुग्रह केवल लोकक नाम सुनयवला नहि, नामक आधिकारिक रूप निर्धारित होबामे सहभागी बनैत छथि। पितामह मूल पाँजि नहि पठबैत छथि; तीन प्रमाण-पच्ची दैत छथि। मूल पाठ आ ओकर चयनित नकलक ई अन्तर उपन्यासक साक्ष्य-अनुशासनमे महत्त्वपूर्ण अछि।

सोनबरसा/सोनबरिसा, कमलपुर/कमलपुरा, हरिण पोखरि/हरीन पोखर सन रूपक मिलान देखबैत अछि जे वर्तनी-संशोधन सामाजिक स्थल-पहिचानक काज बनि सकैत अछि। हरिणक णकारक आग्रह अक्षरक सूक्ष्मता मात्र नहि; वर्तमान लोक-उच्चारण आ पुरान साक्ष्यक मेलक परीक्षण अछि। मुदा नक्शाकें हर नामक सभ ऐतिहासिक भेद रखबाक स्थान नहि मानल गेल। सोनबरसाक दोसर रूप मूल पच्चीमे रहैत अछि, मुख्य नाम-पत्रमे एक रूप। एहि छनोटमे सुविधा आ हानि संग-संग अछि।

दक्षिण टोलक प्रसङ्ग सर्वाधिक तीक्ष्ण अछि। मूल पच्चीमे 'दक्षिण टोल, मुसहर बसावट, पुरान धारक पूब' अछि, मुदा मुख्य नक्शामे बसावट एखन नहि होयबाक कारण नाम नहि लिखल जाइत; सहायक कागजमे केवल 'पुरान बसावट' बनि रहैत अछि। पाँजी, राजस्व आ वर्तमान सर्वेक्षणक प्रयोजन अलग अछि, एतबा मानितो जाति-टोलक विशिष्ट इतिहास एक सामान्य संकेतमे बदलि जाइत अछि। केन्द्रीय प्रश्न एहन नहि जे नक्शा सभ इतिहास राखबाक बाध्य अछि; प्रश्न ई जे विशिष्ट पुरान नामक खोज अगिला पाठक कोना करत।

एगारह नाममे पाँच पूर्ववत्, तीन संशोधित वर्तनी, दू नव, आ एक मुख्य नक्शासँ बाहिर—ई गणना प्रत्यक्ष कार्यक साक्ष्य अछि। ‘मुख्य नक्शा’, ‘सहायक टिप्पणी’ आ ‘रामानुग्रहक पर्ची’ तीन संरक्षण-स्तर बनैत अछि। लिपिक कहैत छथि जे टिप्पणी दफ्तरक नियमानुसार संग रहबाक ‘चाही’; कथावाचक एहि ‘चाही’क भविष्य-सिद्धता स्वीकार नहि करैत छथि। दस्तावेजक अस्तित्व आ भावी पहुँच एतय फेर पृथक भऽ जाइत अछि। सात दिनक स्थानीय नाम-सहायकक काज रामानुग्रहक विकासमे निर्णायक अछि। पदक नाम सरकारी सूचीमे चढ़ल, मुदा तुरन्त नियुक्तिपत्र नहि; दिनक अन्तक हस्ताक्षर आ पछिला पारिश्रमिकक सम्भावना। एतय संस्था कथावाचककेँ अपन भाषा-अधिकारक छोट अंश दैत अछि। पितामह चेतबैत छथि—पारिश्रमिक लेल अनुमान नहि जोड़िह। ज्ञानक आर्थिक मूल्य बढ़ैत अछि, तखन ओकर प्रमाण-विनयक परीक्षा सेहो पैघ होइत अछि।

पँजी वंश, मूल, विवाहक सम्बन्धक माध्यमसँ लोक चिन्हैत अछि; राजस्व-बहि खेतक खण्ड आ धारकसँ; नक्शामे मनुष्यक नामो नहि, केवल संख्या बचि सकैत अछि। ‘एक लोक तीन कागजमे तीन रूप’ एहि अध्यायक वैचारिक केन्द्र अछि। पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक स्तरपर ई दृश्य एक सामाजिक पात्रकेँ अनेक संस्थागत दृष्टिबिन्दुसँ देखाबैत अछि; कोनो एक दस्तावेज ओकर सम्पूर्ण जीवनक पर्याय नहि।

पुरान नदी-पथक ‘कौशिकी धार’ पँजीक ऐतिहासिक नाम अछि, स्थानीय वर्तमान नाम ‘पुरान कोसी’; नक्शामे वर्तमान रूप चढ़ैत अछि। प्रश्न ई नहि जे कोन नाम सुन्दर अछि, बल्कि नामक समय आ उपयोग कोना पृथक अछि। ‘फुलवारी/फुलवरिया/फुलबाड़ी’क विवादमे रामानुग्रह तत्काल निर्णय रोकैत छथि; दू वृद्ध आ खेत जोतनिहारसँ जाँच कऽ प्रचलित रूप स्थापित होइत अछि। एहि दृश्यसँ वर्गभेद नहि मिटैत, मुदा श्रमजीवी लोकक भाषिक ज्ञानकेँ नक्शा-निर्माणमे स्थान देबाक सम्भावना खुलैत अछि।

नकलक छठम दिन देखल जाइत अछि जे मूल नक्शाक अनेक स्थानीय नाम नव प्रतिमे नहि जा रहल अछि। एहि छनाइकेँ सामान्य 'कागज छोटा छल'क कारण कएल नहि जा सकैत; नाम आ टिप्पणीक प्राथमिकता निर्धारित कएल जाइत अछि। रामानुग्रह अपन बहिमे 'नक्शा सभ बात नहि लिखैत; पाँजि सेहो नहि' जोड़ैत छथि। एहिसँ पूर्वक पाँजी-निष्ठा अपना सीमाक आलोचना करबाक सामर्थ्य पवैत अछि। संस्थागत कागजक अल्पता केवल दोसरक दोष नहि, अपन परम्पराक सेहो अछि।

अन्तिम दृश्य शुद्ध नकलक साफ अनुपस्थिति आ श्रीधरक पाँजी-पृष्ठक घिसल अनुपस्थितिक अन्तर स्थापित करैत अछि। नक्शामे दक्षिण टोल नहि लिखल गेल, तँ सतहपर मेटनाइक चिन्ह नहि; पाँजीमे पहिने लिखल नाम खुरचल गेल, तँ रेशा घिसल। ई अभिलेखीय भेद उपन्यासक केन्द्रीय नव आविष्कार अछि। उपलब्ध तथ्य हटाएब आ कोनो तथ्य मुख्य कागजमे प्रवेशे नहि पाएब—दुनूक परिणाम पछिला पाठक लेल समान होइतो प्रक्रिया आ उत्तरदायित्व समान नहि।

अध्यायक साहित्यिक सफलता स्थान-नामक ध्वन्यात्मक सूक्ष्मतासँ संस्थाक ज्ञान-राजनीति खोलब अछि। सीमा ई जे सरकारी कामक सात दिन विस्तारसँ वर्णित अछि आ घटना-गति अपेक्षाकृत धीर होइत अछि। मुदा एहि दीर्घ प्रक्रियाकेँ हटायलासँ उत्तरदायित्वक महत्वपूर्ण प्रश्न खोइ जाइत: एक स्थानीय युवक कखन, कोन प्रमाण पर, ककर बोलीकेँ स्थिर सरकारी अक्षर बनबैत अछि।

अध्याय १९ — कोसी — ३

मूल उपन्यास, पृष्ठ १२७-१२८ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

उन्नैसम अध्याय 'कोसी — ३' तटबन्धक जन्मक कथा नदीक 'हम' द्वारा कहैत अछि। कागजक सीधी रेखा, खेतक खूँटी, चढाओल माटि आ बान्ह—ई चारि रूप एके परियोजनाक अलग अवस्थासभ अछि। नदीक वाणी कहलासँ ओ इञ्जीनियरी योजना बुझनिहार न्यायाधीश नहि बनैत; ओ ढलान, दबाव, गादि आ भीजल माटिक नियममे अपन अनुभव बतबैत अछि। प्राकृतिक प्रवाह आ मनुष्यक ज्यामितीय कल्पना बीचक अन्तर एहि शिल्पक मूल आधार अछि।

रचनामे 'रेखा' शब्दक आवृत्ति केवल बिम्ब नहि, अर्थक क्रमिक निर्माण अछि। सर्वेक्षण-चिह्न पहिने खेतक स्थानीय चिन्ता जगबैत, पछाति उठल माटिक ऊँचाइ सामाजिक वर्गीकरण करैत अछि—'भीतर', 'बाहर', 'पूरब', 'पश्चिम' नवा ठाम-सूचक रूप लैत अछि। एहि शब्दसभक आगामी अध्याय 'भीतरका गाम'मे महत्त्व होयत; नदीक वाणी ओकर सामाजिक ध्वनि पहिनहि तैयार करैत अछि।

कागज पर सीधी रेखाक आरम्भ, अन्त, लागत आ प्रगति नापल जा सकैत अछि, मुदा नदी विभिन्न धार, बरखा आ बालूक परिवर्तनसँ बनल चलैत संरचना अछि। ई अन्तर तटबन्धक वास्तविक प्रभाव सम्बन्धी वैज्ञानिक प्रतिवेदन नहि, उपन्यासक काव्यात्मक दृष्टि अछि। तथापि जलक निकास, माटिक नमी आ पुरान धारक निम्न भूमि पर कथित ध्यान मानवीय परियोजनाक भौतिक परिणामपर प्रश्न उठबैत अछि।

सर्वेक्षणक खूँटी उखड़ि गेलाक पछातिक गह्वरमे मेढक आवि जाएब आ बालकक खेलक चिन्ह बनि जाएब रचनाक सूक्ष्म प्राकृतिक बिम्ब अछि। राज्यक स्थिर चिह्नक सामयिक भौतिक अवशेष स्थानीय जीव-जगतमे नव उपयोग पबैत अछि। मुदा कागज पर बचल रेखा अनुसार पछाति धरती पर नव माटि चढैत अछि। एक छोट दृश्य संस्था आ परिवेशक भिन्न समय-मानकक अत्यन्त सघन रूपमे देखबैत अछि।

नदी 'कागज नहि देखैत', मुदा आदेशक भार हजार टोकरी माटिक रूपमे अनुभव करैत अछि। एहि रूपकमे भाषाक वास्तविक सामाजिक शक्ति भौतिक वस्तुमे बदलैत अछि। सरकारी आदेश आ भूमि-परिवर्तनक बीच मजदूर, सामग्री आ श्रमक मध्यवर्ती प्रक्रिया अछि; उपन्यास ओकरा सर्वत्र विस्तारसँ नहि, बाँस, पाथर, बोरा आ टोकरीक आवृत्तिसँ याद करबैत अछि।

नव तटबन्धक ऊपर ठाढ़ लोक दूर चमकैत जल देखैत अछि आ सुरक्षा लेल भरोसा बनबैत अछि। नदी स्वयं न भरोसाकेँ तोड़बाक उद्देश्य रखैत, न बचबैत।

ई कथात्मक संयम जरूरी अछि, नहि तँ नदीक मानवीकरण ओकरा नैतिक अपराधी अथवा बदला लेनिहार पात्र बना सकैत छल। उपन्यास प्राकृतिक प्रक्रिया आ मनुष्यक भावनात्मक आरोपक अन्तर स्थापित करैत अछि।

भाषिक प्रयोगमे विराम-चिह्नक कमती आ दीर्घ अविराम गद्य पहिल दू कोसी-अध्यायक शृंखला निभबैत अछि। रेखाक सीधापनक विपक्षमे नदीक वाक्य बिना छोट-छोट खण्डमे बन्द भेल बहैत अछि। एहि शिल्पसँ लय आ विचार एक-दोसरकेँ बल दैत अछि, मुदा पाठकीय थकानक सम्भावना सेहो अछि।

उपन्यासक संरचनामे ई छोट नदी-अध्याय आगामी मानवीय काजक अनिवार्य वैकल्पिक दृष्टिबिन्दु बनैत अछि।

अध्याय २० — भीतरका गाम

मूल उपन्यास, पृष्ठ १२९-१३९ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

बीसम अध्याय 'भीतरका गाम' १९५८क वर्षाकाल आरम्भ होबासँ पहिनेक परिवेशमे खुलैत अछि। नक्शामे दू रेखा, धरती पर बढैत तटबन्ध आ लोकक मुँहमे नव नाम—'भीतरका गाम'। सरकारक प्रपत्रमे गामक नाम, थाना, अंचल, भूमि-खण्ड अछि; 'भीतर' स्थानीय अनुभवक श्रेणी अछि, जाहिमे घर, खेत, नाव आ पानीक बाट एक दोसरसँ बदलल सम्बन्ध रखैत अछि। शीर्षक एहि कारण प्रशासनिक अवस्थाक शाब्दिक पुनरावृत्ति नहि, स्थानक नव सामाजिक पहचान अछि।

रामानुग्रह एखन बाइस वर्षक छथि; १९५४क सात-दिनक नाम-सहायकक काम चारि वर्ष पुरान भऽ गेल अछि। सरकारी नक्शा स्थायी पेशा नहि बनल, मुदा लोक हुनका सरकारी कागज पढि सकनिहार मानि आवेदन लिखेबाक लेल अबैत अछि। पाँजीक काज बीचमे रोकि पाँच गामक सात प्रतिनिधिक विनती सुनब एहि पात्रक ज्ञानक सामाजिक उपयोगमे परिवर्तन अछि। नाम लिखबाक अभ्यास आब जीवित परिवारक तत्काल आवागमन, राहत आ पुनर्वासक कठिनाइमे प्रयुक्त होइत अछि।

पहिल प्रतिनिधिमण्डलमे रामचरित यादव संग महतो, कहार, मल्लाह, ब्राह्मण आ बुधन सदा छथि। गाम पाँच, लोक सात—समूहक सामाजिक भिन्नता उपस्थित अछि, पर सबक समस्या एक नहि। रामचरितक खेत भीतर, आधा परिवार बाहर; नाव आ मवेशी, अन्न आ विद्यालयक प्रश्न एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। 'आधा घर?'क प्रश्न पर 'आधा परिवार' उत्तर कथा-प्रविधिक असाधारण सङ्क्षेप अछि। नक्शाक एक परिवार धरती पर दू बासमे विभक्त अछि।

बुधन सदा 'खेतीक अधिकांश भूमि भीतर'क पाँतिमे अपन अभाव देखैत छथि: 'हमरा खेत कतय?' ई वाक्य सामूहिक आवेदनक वर्गगत अन्धबिन्दु पकड़ैत

अच्छि। मालिकक खेतीक कठिनाइ तात्कालिक रूपसँ लिखल जा रहल अछि, मुदा भूमिहीन मजदूरक काज, नाव-भाड़ा आ राहत-सूचीमे नामक समस्या ओहि व्याकरणमे सहज नहि समाइत। रामानुग्रह स्वतन्त्र पाँति जोड़ैत छथि—भूमिहीन परिवारसभक आवागमन आ सूचीमे नाम। एहि क्षण लेखक-चरित्र निवेदनक निष्पक्ष लिपिक मात्र नहि, प्रतिनिधित्वक परिधि सुधरनिहार सक्रिय श्रवणकर्ता बनैत अछि।

दफ्तरमे एक आवेदनक विषय चारि विभागमे बाँटल जाइत अछि—नाव स्थानीय व्यवस्था, राहत अंचल, पुनर्वास राजस्व, तटबन्ध सिंचाइ। लिपिकक 'फाइल बनत' उत्तर संस्था द्वारा एकत्रित जीवनसमस्या केँ प्रशासनिक वर्गमे बदलैत अछि। समस्या तोड़बाक ई प्रणाली कदाचित् कार्यविभाजन लेल आवश्यक हो, मुदा मूल कथामे एहि प्रक्रिया सँ समग्र उत्तरक उत्तरदायित्व अस्पष्ट भेल देखाइत अछि। अनेक विभागक उपस्थितिक अर्थ स्वतः समाधान उपलब्धि नहि।

पहिल जल चढ़ैत 'घर' शब्दक सरकारी गिनती फँसि जाइत अछि। रामचरितक नाम पुनर्वास सूचीमे, शरीर खेतक लग; पत्नी-बालक बाहर, पिता-मवेशी भीतर। 'कागज पर परिवार एक, धरती पर दू ठाम' पाठककेँ गणनाक अर्थशास्त्र बुझबैत अछि। बुधनक नाम पुरान गामक सूचीमे अछि, पर पुनर्वास आवंटनमे नहि; ओ राहतक अधिकारक दू भिन्न रेखाक बीच अबैत अछि। १९३४क विस्थापित दक्षिण टोलक चिन्ता १९५८मे नवा तटबन्ध-भूगोलक भीतर फेर रूप बदलि सामने अबैत अछि।

सत्तो प्रतिनिधिक आवेदनक उत्तरमे 'स्थानीय स्तर', 'तकनीकी परीक्षण' आ 'अंचल जाँच' शब्द अछि, पर उत्तरदायी व्यक्तिक नाम वा कार्यक तिथि नहि। रामचरित पूछैत छथि—स्थानीय के? परीक्षण के करत? कखन? दस्तावेज ई भेद नहि कहैत। नव्य न्यायपरक दृष्टिसँ एक वाक्य प्रशासनिक प्रक्रिया चलबाक दाबी करि सकैत अछि, मुदा परिणामक प्रत्यक्ष अथवा लिखित प्रमाण नहि बनैत। ई खालि आश्वासन मात्र नहि; अपूर्ण उत्तरदायित्वक भाषा अछि।

दोसर प्रतिनिधिमण्डलमे सीता देवी प्रवेश करैत छथि। पति कलकत्तामे, पुनर्वासक पर्ची पति नाम पर, भीतरक घरमे ओ, सासु, बालक आ गाय। ‘हम कतय रही?’ प्रश्न आवासीय समस्या केँ स्त्रीक निर्णय-अधिकारक ठाम पर अनैत अछि। रामानुग्रह दफ्तरी पाँति बनबैत छथि; सीता देवी सुनि तुरन्त पूछैत छथि—‘गाय लिखल?’ एहि सुधरसँ नीति-विचारक सामान्य ‘आवागमन कठिन’ वाक्यकेँ जीवनक ठोस निर्भरता भेटैत अछि। कथाकार स्थानीय स्त्रीक आवाजकेँ केवल भावुक विनती नहि, प्रपत्र-संशोधनक सक्रिय स्रोत बनबैत छथि।

आवेदन तीन बेर छोट होइत अछि। पहिलमे पाँच माँग, दोसरमे किछु महत्त्वपूर्ण कठिनाइ, तेसरमे बुधन सदाक सरल शर्त—‘लिखू जे हम सभ एतय छी’। ई पाँति विषयक अन्तिम सार नहि, अस्तित्वक पुनः प्रमाणन अछि। जकरा सरकारी नक्शाक भीतर-बाहर वर्गीकरण सन्तोषपूर्वक नहि धरि सकैत, ओ लोक अपन शारीरिक उपस्थितिक लिखित स्वीकार चाहैत अछि। बुधनक औँठा-चिह्न एहि उपस्थितिक लघु अभिलेख बनैत अछि, तथापि तकरा सँ पुनर्वासक अधिकार स्वतः प्राप्त नहि होइत।

फागुनक अंतिम उत्तरमे आवश्यक कार्रवाई लेल पदाधिकारीकेँ सूचित करबाक उल्लेख अछि; नावक स्थायी व्यवस्था, ऊँच शरण-ठाम, भूमिहीन सूची आ मवेशीक प्रश्न अनुत्तरित। लिपिक ‘पत्र निर्गत भऽ गेल’क आधारपर काज समाप्त मानबाक कहैत छथि। एहि सरकारी पूर्णता आ बाँचल जीवनक अपूर्णताक विरोध अध्यायक समापन अछि। कागज बाहर निकलि गेल; गाम भीतर रहल—अन्तिम छवि मूल शीर्षककेँ ठोस सामाजिक अर्थ दैत अछि।

अध्यायक कलात्मक शक्ति बहुस्वरिक आवेदन-लेखनमे अछि: यादव कृषकक भूमि, भूमिहीन मजदूरक रोजगार, सीता देवीक मवेशी आ बालक, मल्लाहक नाव, विभागक अपना-अपना भाषा—सभकेँ एक कानूनी प्रपत्रमे समेटबाक संघर्ष। एतय पाश्चात्य बहुस्वरता-विचार आ भारतीय औचित्य-विवेचन

उपयोगी अछि; पात्रक शब्द ओकर सामाजिक अनुभवसँ उगैत अछि। सीमा ई जे तीन आवेदन-उत्तरक पुनरावृत्ति बाहरी घटनामे ठहराव उत्पन्न करैत अछि, मुदा ई ठहराव स्वयं संस्था-प्रेरित प्रतीक्षाक कलात्मक प्रतिरूप अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय १६-२०

१९३४क बाढ़ि • सन्धि • नक्शा • कोसी — ३ • भीतरका गाम

सोलहम सँ बीसम अध्याय धरि उपन्यास निजी वंश-पञ्जी आ व्यक्ति-गायब होयबाक अन्वेषणसँ सार्वजनिक भू-अभिलेख, सन्धि-सूचना, तटबन्ध आ पुनर्वासक व्यवस्थातक पहुँचैत अछि। पाँच अध्यायक क्रम—पुरान टोलक बाढ़िसँ विस्थापन, १९५४क परियोजना-समाचार, सरकारी नक्शाक नाम-निर्धारण, नदीक तेसर आत्मवाणी आ १९५८क भीतरका गाम—एक ठामक नाम कोना प्राकृतिक, सामाजिक आ संस्थागत बलसँ फेर-फेर बदलैत अछि, तकर बहुपरतीय अध्ययन अछि।

अध्याय १६मे 'मुसहर टोलीक बास' लगान-पत्रक अगिला नकलमे 'बालूमय परती' होइत अछि। अध्याय १८मे 'दक्षिण टोल' मुख्य नक्शामे नहि, सहायक कागजमे केवल 'पुरान बसावट' बनैत अछि। पहिल परिवर्तन नदी-पछातिक भूमि-प्रयोगक नकल; दोसर वर्तमान बसावट-आधारित नक्शा-चयन। दुनूक परिणाम विशिष्ट सामुदायिक ठामक नामक क्षीणता, मुदा अभाव बनबाक प्रक्रिया पृथक। अहि तुलनाकें पँजीक खुरचल नामसँ सेहो अलग राखब आवश्यक अछि।

सतरहम अध्यायक प्रारम्भिक जनश्रुति आ बीसम अध्यायक अन्तिम दफ्तरी पत्र एक-दोसरक दूरक प्रतिध्वनि अछि। पहिले परियोजना विषयक चारि अफवाह लोकक अनिश्चितता भरैत अछि; पछाति विभागीय उत्तरक 'स्थानीय व्यवस्था' आ 'तकनीकी परीक्षण' सन वाक्य स्पष्ट उत्तरदायी समय-दायित्व टारैत अछि। पहिल स्थिति अनधिकृत खबरक बहुलता, दोसर अधिकृत पत्रक अपूर्णता। ई दुनू एक नहि, मुदा लोकक काजक लेल ठोस उत्तर न भेटबाक अनुभव जोड़ैत अछि।

सन्धिक सूचना उपन्यासक भीतर २५ अप्रैल १९५४क तिथिसँ जुड़ल अछि। वास्तविक ऐतिहासिक सन्धिक दस्तावेज, परियोजनाक कूटनीतिक शर्त अथवा कार्यान्वयनक पद्धतिक पुष्टि मूल उपन्यासक एहि पाँच अध्यायसँ बाहरक स्वतन्त्र शोध माँगैत अछि। एहि समीक्षामे तिथिक उपयोग कथा-कालक स्थापनार्थ अछि, न कि उपन्यासक समस्त शासन-विवरणकें बाह्य ऐतिहासिक अभिलेखक अधिकार देबाक लेल। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एहि सीमा कें स्पष्ट रखने बेसी उपयोगी होइत अछि।

नामक तीन अभ्यास पाठमे भिन्न अछि। रामानुग्रह पँजीमे वंश-सम्बन्धक नाम पढ़ैत छथि; नक्शा लेल ग्राम आ पोखरिक उच्चारण स्थिर करैत छथि; आवेदनमे जीवित परिवारक वर्तमान कठिनाइ लिखैत छथि। ई पहिचानक तीन राजनीति अछि: वंशक अधिकार, स्थानक सरकारी अस्तित्व आ राहत/पुनर्वासक दावेदारी। कोनो एक पञ्जी सभ कामक सम्पूर्ण विकल्प नहि।

नक्शामे हरिण पोखरिक णकार ठीक करब आ फुलवारीक नाम तीन लोकसँ पूछिकऽ निश्चित करब शोध-नैतिकताक सशक्त दृश्य अछि। मुदा दक्षिण टोलकें मुख्य नक्शामे स्थान नहि भेटब देखबैत अछि जे वर्तनी शुद्ध रहलो पर ऐतिहासिक अनुपस्थिति रहि सकैत अछि। अक्षरक सत्य आ प्रविष्टिक सामाजिक चयन अलग-अलग प्रश्न अछि। एहि भेदमे उपन्यासक भाषा-सजगता केवल शब्द-सुधार नहि, ज्ञानक प्रबन्धनक आलोचना बनैत अछि।

१९३४क मुसहर टोलक विस्थापन आ १९५८क तटबन्धक भीतरका गामक सङ्कटमे भूमिहीन लोकक स्थिति विशेष गहन समानान्तरता रखैत अछि। पहिलमे घरक पुरान भूगोल लोप होइत अछि; दोसरमे बुधन सदा पुनर्वास सूची सँ बाहर छथि, जखन खेतक 'अधिकांश भूमि'क भाषा मालिकानाक कठिनाइ प्राथमिक बनबैत अछि। 'हमरा खेत कतय?' प्रश्न पुरान बासक स्मृति कें वर्तमान नीति-भाषाक वर्ग-सीमासँ जोड़ैत अछि।

सीता देवीक उपस्थितिसँ अध्याय २०मे विभाजित निवासक अनुभव स्त्रीक आवाज पबैत अछि। पर्ची पति नाम पर, निर्णय लेल पति अनुपस्थित, गाममे बालक आ मवेशीक काज हुनक जिम्मा। 'गाय लिखल?'क प्रश्न अमूर्त प्रशासकीय कठिनाइकेँ जीवनक ठोस व्यवस्था बनबैत अछि। कमला देवीक रसोई-थारीक स्मृतिसँ ई आवाज अलग होइतो घरेलू श्रमक प्रमाणात्मक मूल्यक एक समांतर धारा बनबैत अछि।

अध्याय १९क नदीक दीर्घ-वाक्य तटबन्धक माटिक उठल रेखाकेँ प्राकृतिक दबावक भौतिक रूपमे पढ़ैत अछि। अध्याय २०क लोक ओही रेखाकेँ घर, विद्यालय, खेत, अस्पताल, नाव, मवेशी आ राशनक बाटक विभाजक रूपमे अनुभव करैत छथि। नदीक वाणी अभियान्त्रिक नीतिक सम्पूर्ण परिणाम सिद्ध नहि करैत; मानवीय कथन तकर स्थानीय जीवनगत परिणाम देखबैत अछि। एहि दुहरा दृष्टिबिन्दुसँ पाठक अर्थक प्राकृतिक आ सामाजिक पद्धति पृथक रख सकैत अछि।

नव्य न्यायपरक तुलनामे सोलहमक सत्ताइस घर आ अठारह परिवारक गणनाक अलग इकाइ, सतरहमक खूँटी सँ बनाओल अनुमान, अठारहमक पुरान नक्शा आ नव माप, बीसमक आवेदन पर जारी पत्र बनाम वास्तविक सुविधा—सभ ठाम प्रमाणक प्रकार बदलैत अछि। प्रत्येक ठाम अनिर्णीत बातकेँ निश्चित बना देब कथा स्वयं त्रुटि मानैत अछि। रामानुग्रहक सीख चलैत अछि, मुदा संस्था-सापेक्ष हित आ छनोटक कारण एकहि 'सत्य-नियम' सभ प्रश्न हल नहि करैत।

पाँच अध्यायक कला-दृष्टिसँ क्रमिक दफ्तरी विवरण गद्यक गति धीमी करैत अछि। सर्वेक्षणक उपकरण आ सात दिनक काम, आवेदनक तीन चरण आ उत्तरक प्रतीक्षा बारम्बार क्रियाक दोहराव जकाँ लगि सकैत अछि। पर प्रत्येक पुनरावृत्तिमे दावे आ संस्थाक बीच दूरी बदलैत अछि: शुरुआतमे नाम, पछाति ठाम, अन्ततः घर-रोजगारक वास्तविक अधिकार। एहि कारण शिल्पक मन्दता घटनाक वैचारिक विस्तारक मूल्य चुकबैत अछि, केवल अनावश्यक विस्तार नहि।

बीसम अध्यायक समापन 'दफ्तरक फाइल बाहर निकलि गेल छल; गाम भीतर रहल' सामाजिक रूपान्तरणक समेकित रूपक अछि। नदी, नक्शा, वंश-पंजी आ पुनर्वास-पर्ची अलग क्षेत्रक कागज होइतो किछु लोकक जीवित उपस्थितिक सम्पूर्ण भार नहि उठा सकैत अछि। एहि पाँच अध्यायक मुख्य साहित्यिक उपलब्धि ई जे प्राकृतिक आपदा, नीतिगत लेखन आ दैनिक जीवनक बीच असमान समय आ असमान अधिकारकें बहुस्वरिक रचना-विधानमे साकार करैत अछि।

अध्याय २१ — दुइ मिथिला

मूल उपन्यास, पृष्ठ १४०-१४६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

एकैसम अध्यायक शीर्षक 'दुइ मिथिला' राजनीतिक सीमा आ सांस्कृतिक निरन्तरताक बीच प्रत्यक्ष जीवनक टकराव सँ बनैत अछि। भीमनगर दिशाक निर्माण-बाट पर जीप, गिट्टी, लोहारक छड़ आ परियोजनाक फाटकक बढ़ल उपस्थिति केवल विकास-परिवेशक चित्र नहि। श्यामानन्द झाक सप्तरिमे विवाहक प्रसङ्ग एहि बदलैत सीमा-व्यवस्थामे एक दैनन्दिन सम्बन्धक यात्रा देखबैत अछि। वंश-पँजीमे दुनू पक्षक मूल-ग्राम-अधिकार मिलि चुकल अछि, मुदा सीमा पर ओ जाँच पर्याप्त नहि।

बरियातक दू बैलगाड़ी, मोटर, साइकिल, बाजा आ वस्तु-पेटीक विस्तृत विवरण एक आम मैथिल विवाहक सामाजिक आदान-प्रदानकें ठोस रूप दैत अछि। बारह धोती, सोलह साड़ी, पीतलक थारी-लोटा, मखान-सुपारी, रेडियो आ सिलाइ-मशीन एकहि प्रयोजन लेल जुटल अछि, मुदा सबकें एक बिलमे समेटल नहि जा सकैत। किछु घरक पुरान सम्पत्ति, किछु उपहार, किछु नव किनल। वस्तुक मूल्य-निर्धारण केवल बजारभाव नहि, स्रोत आ सम्बन्धक अर्थसँ जुडल अछि।

पहरादारक 'भारतीय कि नेपाली?' प्रश्न पँजी-पत्रक मूल-गोत्रक भाषा सँ पृथक नागरिकता-आधारित कोष्ट खोलैत अछि। पँजी-पत्र विवाहक सत्यापनक स्रोत भऽ सकैत अछि, मुदा सामग्री व्यापारक नहि होयबाक प्रमाण नहि। पदाधिकारी लोक पार जाएबाक आ सामग्रीक जाँचक नियम अलग राखैत छथि। एहि स्थितिमे विवाहक समाजशास्त्र आ सीमा-शुल्कक प्रशासनिक वर्गीकरण एक-दोसराकें पूर्णतः बुझि नहि पबैत अछि।

श्यामानन्दक काकाक 'विवाहक उपहार'क उत्तर पर प्राप्तकर्ता, संख्या आ अनुमानित मूल्य लिखबाक निर्देश मिलैत अछि। रामानुग्रह नामक पाँति सँ

वस्तुक पाँति दिस कलम घुमबैत छथि । पुरान थारीक मूल्य, मामा देने साडीक कागज आ घरमे रहल रेडियोक रसीद सन प्रश्न सामाजिक आदान-प्रदानकें कारोबारक लेखामे बदलैत अछि । पँजीक 'सम्बन्ध' आ सीमा-विवरणक 'प्रेषक-प्राप्तकर्ता' दुनू सही अपना प्रयोजनमे, किन्तु दुनूक अर्थ अलग अछि ।

बरियातक लोक आ पेटी अलग-अलग रुकनाइ घटनाक सशक्त दृश्यात्मक केन्द्र अछि । बर, पिता, पुरोहित आ किछु लोक पैदल पार करैत छथि; हारमोनियम रुकैत अछि, छोट झाल आ ढोलक जा सकैत अछि । विवाहक सामाजिक समग्रता यात्रा-नियमक कारण छिन्न होइत अछि । मुदा वधू-पक्षक पड़ोसी घरसँ थारी, पान-सुपारी आ चादर जुटब, नव सम्बन्धक सामूहिक सहकारकें प्रकट करैत अछि । वस्तु-रुकावट संस्कारकें तत्काल असम्भव नहि बनबैत ।

नेपाल दिस कन्याक मामाक नागरिक परिचय, ग्राम आ प्राप्तकर्ता-नाम सीमा-सूचीमे चढैत अछि । पँजीमे ओहि व्यक्तिक वंश आ मूल महत्त्वपूर्ण छल; सीमा-विवरणमे ओकर कानूनी प्राप्तकर्ता होयब । एहि एक पात्रक दू कागज पाठककें पहिचानक परिवर्तनीय प्रशासनिक स्वरूप देखबैत अछि । 'पँजी-पत्रमे सीमा शब्द नहि' आ 'सीमा-विवरणमे मूल शब्द नहि' रचनाक सुचिन्तित प्रतिपक्षी वाक्य अछि ।

विदाइमे सामग्रीक दिशा उलटि जाइत अछि । भारतसँ नेपालक उपहारक पछाति नेपालसँ भारतक कम्बल, गागरी, डाला, अचार, धान आ सन्दूक फेर जाँचक विषय बनैत अछि । सामग्रिक स्वामित्व आ निजी सम्बन्ध बने रहलो पर प्रेषक-प्राप्तकर्ताक सरकारी कोष्ट बदलि जाइत अछि । नव कन्या स्वयं जा सकैत छथि, किन्तु हुनकर सन्दूक रोकल जा सकैत अछि । ई विडम्बना घटनाक सनसनी नहि; व्यवहारिक थकानक बीच सामान्यीकृत नियमक सामाजिक अनुभव अछि ।

एतय दू सूचीमे कन्याक नाम अनुपस्थित होयब अत्यन्त सार्थक अछि। विवाहक केन्द्रीय व्यक्ति वस्तुक प्रेषण-पञ्जीमे विषय मात्र बनैत छथि; वंश-पँजीमे हुनकर नाम अछि, किन्तु गृहसामग्रीक अनुभवक विवरण नहि। नारीक सामाजिक उपस्थितिक दू विरल रूप उपन्यासक पुरान 'अनलिखित' प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। मुदा एहि प्रसङ्गकें सीधे फुलझरीक इतिहासक प्रमाण नहि मानल जाए; ई परिवार आ प्रशासनक भिन्न प्रसङ्गमे नामांकनक समरूप संरचनाक साहित्यिक तुलना अछि।

कथाक पाश्चात्य बहुस्वरिकता विभिन्न कार्यालयी प्रश्न आ पारिवारिक वाणीकें एक संग रखैत अछि; भारतीय औचित्य-विचारमे वस्तु-सूचीक विस्तार विवाहक वास्तविक व्यवहारसँ समर्थित अछि। सीमा-नियमनक बाह्य ऐतिहासिक नियम सत्यापित करबाक लेल पृथक शासन-पत्र चाही; उपन्यास भीतर उपलब्ध ई दृश्य केवल पात्रक अनुभवक प्रमाण अछि। कलात्मक सीमा ई जे वस्तु-संख्या आ सूची दू दिशामे पुनरावृत्त होइत अछि; मुदा एहि दोहरावसँ नैहर-ससुरारक एक सामाजिक सम्बन्ध सीमा-पार दू अलग व्यापार-जेकाँ लेख बनबाक अर्थ प्रबल होइत अछि।

अध्याय २२ — विवाह

मूल उपन्यास, पृष्ठ १४७-१५० . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

बाइसम अध्याय 'विवाह'मे पँजीकार रामानुग्रह स्वयं जाँचक विषय बनैत छथि। दूसराक वंश-पाँति देखनिहार व्यक्ति अपन विवाहक कागजमे ग्राहक बनि कऽ प्रवेश करैत अछि। पितामहक पहिल आदेश—'अपन पाँति अपने नहि जाँचब'—पूर्वक अध्याय ३क आत्मीय हितसँ उत्पन्न पक्षपात-जोखिमक प्रत्यक्ष संस्थागत उत्तर अछि। एतय तटस्थता केवल निजी सदिच्छासँ नहि, स्वतंत्र पँजीकारक परीक्षणक व्यवस्थासँ साधल जाइत अछि।

शारदाक पहिल चिट्ठीमे नाम, पिता आ ग्राम; दोसरमे पिता-पितामह, गोत्र-मूल, मातृक सम्बन्ध; तेसरमे प्रश्नसभक उत्तर। तीन कागजक विस्तार बतबैत अछि जे विवाह पहिने घरमे सम्भावना, तकर पछाति संस्थागत जाँचक प्रक्रिया बनैत अछि। हरिशंकर पँजीकार दुनू पक्षक मूल, मातामहक सम्बन्ध आ पुरान विवाहक निषेध मिलबैत छथि; एक फीक मसिवला पन्ना तिरछा उजासमे पढ़नाइ मूल साक्ष्य-साधनक सूक्ष्म साहित्यिक विवरण अछि।

हरिनारायण मिश्रक नाम प्रपितामहक पाँतिमे आबैत अछि, मुदा कथावाचक ओहि समय फुलझरीक खुरचल पाँतिक इतिहास नहि जनैत छथि। पाठक पहिने एहि नामक विवादित भूमिका पढ़ि चुकल छथि। एहि कारण 'हमरा तखन धरि ज्ञात नहि छल'क कथन कथाक समय-भेद सँ व्यङ्ग्यात्मक गहराई पबैत अछि; विवाहक शुभ प्रसङ्गमे पुरान अभिलेखीय निषेधक छाया पाठकक ज्ञानमे अछि, पात्रक तत्काल चेतनामे नहि।

'नाम पढ़ब आ विवाह करब दू काज अछि'क पितामहीय विवेक एतय पारिवारिक व्यवहारसँ जुड़ैत अछि। निषेधक जाँच समाप्त भेला बाद शारदाक पढ़ब, सिलाइ करब, कम बजब आ दूध पसिन्न नहि होयबाक चर्चा शुरू होइत अछि। ई बात पँजीक कोष्ठमे नहि, घरक स्त्रीसभक सम्भाषणमे बचैत अछि।

सामाजिक व्यक्तित्वक सूक्ष्मता वंशक औपचारिक पहिचानसँ बाहर अछि; जाँच आवश्यक होइतो विवाहक सम्पूर्ण अनुभव नहि।

विवाहक खर्च-बहि चाउर, दालि, घी, तेल, सुपारी, बाँस, खाट आ बाजावला लोकक मात्रा गनैत अछि; विवाह-पँजी नाम, मूल, गोत्र आ अधिकार। 'एतय तोहर मूल कतय?'क प्रश्न पर 'एतय मूल्य अछि' उत्तर दस्तावेजक पृथक प्रयोजनक सजीव उदाहरण अछि। पँजीक जीवनमे एक विवाह दू-दू लेखामे घटित होइत अछि; प्रत्येक कागज दोसरक अभाव भरबाक जगह केवल एक विशिष्ट काम करैत अछि।

मण्डपक क्रम, अरिपन, दीप, शारदाक पानिक पात्र सरकायब आ पुरोहितक मन्त्र कथावाचकक स्मृतिमे केवल किछु दृश्य रूपमे बचैत अछि। एहि सीमित दृश्यकरणमे व्यक्तिगत संकोच आ अभिलेखनक अभ्यास दुनू देखा पडैत अछि। रामानुग्रह गीतक शब्द नहि लिखैत, वरक रूपमे काज करैत छथि।

विवाहक औपचारिक प्रविष्टि हरिशंकर बाबूक हाथे होइत अछि; परिवारक साक्षी-द्वारा ओकर मान्यता स्थापित होइत अछि।

विवाह-पँजीक सम्पूर्ण नकल अध्यायक भीतर देल अछि। वर रामानुग्रह, कन्या शारदा, पितृ-मातृक जाँच, निषेधक अभाव, विधिक साक्षी आ 'परवर्ती लेख'क ठाम एक पूरा संस्थागत क्षण बनबैत अछि। अपन जन्म-पाँतिक खाली ठाम आव भविष्यक सन्तान-सूचनाक सम्भावना पबैत अछि। मुदा साहित्यिक रूपमे ई दस्तावेजक खुलल भविष्य अछि, निश्चित पारिवारिक परिणतिक घोषणा नहि।

समापनमे नव कोठली, पानिक छोट उत्तर, दीप बुतनाइ आ दूनूक चुप्पी दाम्पत्य-जीवनक अशाब्दिक आरम्भ अछि। एतय अध्याय २५क अनाम देहगत 'चुप्पी' सँ सूक्ष्म तुलना सम्भव, मुदा दुनू दृश्यक व्यक्ति आ समय एक मानवाक प्रमाण नहि। उपन्यासक सौन्दर्य एहि द्वैधमे अछि: सामुदायिक

कागज विवाहकै पूरा घोषित कऽ दैत अछि, निजी अनुभव एखन एक छोट अनिश्चित मौनसँ आरम्भ होइत अछि।

अध्याय २३ — अकाल १९६६

मूल उपन्यास, पृष्ठ १५१-१५४ : गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

तेइसम अध्याय 'अकाल १९६६'मे वर्षा अथवा सरकारी उपज-सङ्ख्याक बदला घरक व्यय-बहि घटनाक मुख्य स्रोत अछि। आषाढसँ सावन आ भादव धरि कीनबाक सूचीमे मात्रा घटब आ किछु नाम गायब होयब संकटक क्रमिक आरम्भ बनैत अछि। शून्यक अर्थ वस्तु संसारसँ मेटि गेल नहि, केवल ई जे ओहि मास घर ओकरा नहि कीनलक—कथावाचकक ई स्पष्टता प्रमाणक नकारात्मक अर्थ-परीक्षणक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

घी, अरहरिक दालि, तेल, गुड़, सुपारी, पान आ नूनक मात्रा-दाम परिवर्तित होइत अछि। बनियाँक खड्डियासँ लिखल नूनक दाम बेराबेरी पोंछल जाइत अछि; कागज पर नव अंक आबैत अछि। ई मूल्य-वृद्धिक व्यापक बाह्य आँकड़ाक सट्टा एक घरक खरीदनाइ आ एक हाटक चिन्ह अछि। स्थानीय सूची समाजक समस्त अकालक सांख्यिक प्रतिनिधित्व नहि, मुदा जीवनक ठोस घर्षण देखबैत अछि।

घरक स्त्रीसभ मात्रा बिना घोषणा बदलैत छथि—पैघ बासन ऊपर, छोट देगची नीचे; दूध बालक-बूढ़ लेल, युवा लोकक चाह बिना दूध; बाँचल भातकें फेर उपयोग; चाउर धोएल पानिसँ गोरुक चोकर भीजाओल। ई बिना औपचारिक लेखाक घरेलू अर्थनीति अछि। 'भानसघरमे एक नव गणना'क कथन स्त्रीक श्रमकें एक ज्ञानरूप मान्यता दैत अछि। कागज पर मूल्य देखाइत अछि, मुदा बचत लेल की-की करबाक पड़ैत अछि, ई देहक दैनिक क्रिया देखबैत अछि।

अलग खेत-ठाम आ सामाजिक सम्पत्तिक कारण संकट समान नहि। ऊँच खेतक रोपनीमे दरार, नीचाँ किछु धान बाँचब, धान बचल घरक बजारसँ कम सम्बन्ध—ई सब एकसमान आपदा-कथनकें रोकैत अछि। कथा स्वयं कहैत अछि जे ओकर इलाका राज्यक सबसँ खराब भाग नहि; एहि कारण लेखकक

स्थानिक अनुभूतिकेँ सम्पूर्ण बिहारक अकालक प्रमाणपत्र नहि मानल जाए। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे गृह-बहि, राज्यक समाचार आ क्षेत्रीय कृषि-अवस्था अलग स्रोत अछि।

राशन-पत्रक पाँतिमे परिवारक 'मुँह' गनल जाइत अछि; विधवा अपन बालक संग पहुँचि पति-ग्रामक सूचीमे नहि भेटैत छथि, फेर नैहरक गामक पन्ना खोलल जाइत अछि। पुरान पँजीक पिता-पितामहक जाँच एतय काम नहि करैत। जीवित परिवार आ कागजक कोष्टक अन्तर सामाजिक अधिकारक एक दैनिक अवरोध बनैत अछि। कागजक श्रेणी बदलिते एक स्त्रीक घरक ठाम सेहो प्रशासनिक दृष्टिमे बदलैत अछि।

ऋणक बहिमे वस्तुक मात्रा घटैत, देय राशि बढ़ैत अछि; बनियाँ लाल चिह्न दैत अछि। राहत-काजक सूचीमे माटि काटब, बाट ऊँच करब, पोखरि-सफाइ सन श्रम-दिवस दर्ज होइत अछि। एहि दू बहिक तुलना आर्थिक विवशता आ जीविका लेल सार्वजनिक कार्यक अवसरकेँ एक समांतर समयरेखामे राखैत अछि। मुदा ऋणक लाल चिह्नक अर्थ कथावाचक स्वयं नहि पुछलनि; समीक्षामे ओकरा किसी खास दण्ड अथवा जब्ती-व्यवस्थाक प्रमाण बनायब अनुचित।

शारदाक मोहन लेल दूधक कटोरी अलग रखब आ बालकक थारी पर कटौती अन्तमे पहुँचब परिवारक पोषण-प्राथमिकताक दृश्य अछि। संकटमे नैतिक मर्यादा केवल पैघ वक्तव्यमे नहि, कोन सदस्य कतेक घटाओत एहि निर्णयमे प्रकट होइत अछि। मोहन नूनक डिब्बा खसा दैत अछि; शारदा झाड़ू आनबाक पहिने साफ नून पाँच मिनट लगाकऽ बटोरैत छथि। एहि 'पाँच मिनट'मे अकालक सूक्ष्मतम साहित्यिक सत्य अछि—वस्तुक दामसँ संग ओकरा फेकबाक उपलब्ध स्वतन्त्रता घटैत अछि।

पँजीमे विवाह-जन्म-मृत्युक क्रम चलैत अछि, अकालक विशेष चिह्न नहि।

व्यय-बहि, राशन-पत्र, उधारक पन्ना, देगची आ नूनक डिब्बा ओहि इतिहासक

साक्ष्य बनैत अछि। पाश्चात्य वस्तु-आख्यानक दृष्टिसँ ई बहु-चिन्हात्मक स्रोत-पद्धति अछि; भारतीय करुण-विचारमे मौन घरेलू कटौतीक व्यञ्जना अधिक असरकारी। सीमा ई जे लम्बा खरीद-सूचीक विस्तार किएक-किएक कथाक गति थामैत अछि; मुदा चरम दृश्य मे नून बटोरबाक पाँच मिनट एहि विस्तारकेँ घन भावात्मक केन्द्र दैत अछि।

अध्याय २४ — इन्जीनियर बाबू

मूल उपन्यास, पृष्ठ १५५-१६० · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

चौबीसम अध्याय 'इन्जीनियर बाबू' १९६२मे मोहनक जन्म आ तटबन्धक मरम्मतिक विभागीय सूचनाकें एकहि दिनक कागजमे रखैत अछि। एक पुर्जामे दाइ, रूई, गरम पानि आ साफ कपड़ा; दोसरमे माटि, बोल्डर, मजदूर, ढुलाई आ निविदाक शर्त। कथाकार जन्म आ निर्माणकें काव्यात्मक समानान्तरता दैत छथि, मुदा स्पष्ट कहैत छथि जे दुनूक बीच कारण-सम्बन्ध नहि। ई पृथक्करण आवश्यक अछि, नहि तँ मोहनक भावी पेशा अतिप्राकृतिक पूर्वाभास बनि जाइत।

शारदाक प्रसवक काजमे रामानुग्रह अपन सामर्थ्यक सीमा बुझैत छथि। प्रसव-कोठलीक तैयारी, पीतलक लोटा माँजि राखब, काठ आनब, गरम पानि, दाइ कें पठाओल संदेश—ई सभ घरेलू श्रमक कड़ी अछि, मुदा निर्णय घरक जेठ स्त्रीसभक हाथमे अछि। कार्यालयक दूत आएलाक काल रामानुग्रह निविदाक शीर्षक पढ़बैत छथि, कार्यक वास्तविक परिमाण बिना स्थल देखल निश्चित नहि कहैत। एहि क्षुद्र प्रसङ्गमे सेहो हुनकर पुरान प्रमाण-शिक्षा जीवित अछि।

तटबन्धक 'निर्माण' समाप्ति नहि। मरम्मति, ढाल, रिसैत पानि, चूहाक बिल, नव माटि, बाँस आ बोल्डरक निरन्तर काज संरचनाक चलैत जीवन देखबैत अछि। विभागीय माप-पुस्तिका किलोमीटर, स्पर, घनफुट, श्रम-दिवस आ खर्च चिन्हैत अछि; पाँजी पिता-पितामह, मूल आ अधिकार। दुनू लेख बिना सामाजिक निर्णय आगे नहि बढ़ैत, मुदा दुनूक प्रमाण-उद्देश्य भिन्न अछि।

प्रसवक बेला बाहर बैसल रामानुग्रह मनमे विभागीय शब्द—किलोमीटर, जमानत, मरम्मति—दोहरबैत छथि। एतय कथनक करुण विडम्बना ई नहि जे ओ प्रसवक वेदना सँ उदासीन छथि; ओ स्वयं कहैत छथि जे घरक भीतरी

काजमे हुनकर उपयोग सीमित अछि। लेखनक परिचित शब्दसँ अनिश्चित प्रतीक्षाकेँ सहबाक चेष्टा चरित्रक एक विश्वसनीय मनोवैज्ञानिक संकेत अछि।

मोहनक जन्म-पाँतिमे समय, नाम आ परिवारक मौखिक साक्ष्य मिलान कएल जाइत अछि। जन्म-क्षणक रोदन, दूध, कपड़ाक फेरबदल आ रात्रि-जागरण पँजीमे नहि चढैत। शारदाक 'तोरा ई बात लिखबाक आवश्यकता नहि' कथन घरेलू जीवन पर अभिलेखनक अनावश्यक विस्तार रोकेत अछि। कोनो घटना दस्तावेजमे न आएलासँ ओ तुच्छ नहि; कखनो निजता आ अनुभवक आवरण सेहो आवश्यक होइत अछि।

विभागक कार्यदेशमे ठीकादार, अभियन्ता, तिथि, सामग्री, भुगतान आ निरीक्षणक प्रक्रिया अछि। कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे परिचित डिवीजनमे एहन पैघ काज पहिने नहि देखने छलाह, राज्य वा सम्पूर्ण परियोजनाक पहिल काम कहैत नहि। एहि सटीकतासँ सामान्यीकरणक प्रलोभन टरैत अछि। मापमे न चढल श्रमक भुगतान नहि होब आ माप-पुस्तिकामे न लिखल घरेलू क्षतिक सम्भावना सामाजिक लेखाक सीमाकेँ खोलैत अछि।

काजक मुख्य माप-बहि माटि आ बोल्टडरक मात्रा कहैत अछि, मुदा मजदूरी देरीसँ भेटब, गाडीक धूर आ आँगन पर प्रभाव सन बात केवल शिकायत-पत्रमे आबि सकैत अछि। ई तुलना अध्याय २०क फाइल-विभाजनक विस्तारित रूप अछि। संस्थागत लेखांकन केवल पंजीकृत मूल्य देखैत अछि; जखन जीवनक किछु अंश अलग शिकायतक कोष्ठ चाहैत अछि, तखन ओकर अभिलेखीय महत्त्व घटि सकैत अछि।

पितामह बालक केँ पाँजिक कोठलीमे अनैत छथि आ कहैत छथि जे नाम पछाति पहिचान लेल रहैत अछि। दीर्घ काल पछाति मोहनक अभियन्ता बनबाक जानकारी कथावाचकक परवर्ती कालदृष्टि अछि, जन्म-दिनक पात्रसभक ज्ञान नहि। पाश्चात्य कथाकाल-विवेचनमे अग्रसूचना आ पश्चदृष्टि कथावाचकक दू समय अलग राखैत अछि। भावी पेशाक सङ्केत कलात्मक संगति देत, कारणगत अनिवार्यता नहि।

अध्यायक निष्कर्षमे एक पन्नाक ऊपर बालकक जन्म, नीचाँ मरम्मतिक
कार्यादेश—एहि संयोजनसँ मानवीय वंश आ औद्योगिक-प्रशासकीय संसारक
समांतर उत्पत्ति देखाइत अछि। कथा तटबन्धक निर्माणकें नैतिक
नायक/खलनायक नहि बनबैत; ओकर निरन्तर रखरखावक सामग्रीगत अर्थ
खोलैत अछि। सीमा ई जे जन्मक निजी अनुभूति पर दफ्तरी विवेचन बेसी
स्थान लैत अछि; मुदा एही अनुपातसँ रामानुग्रहक ज्ञान-स्वभाव आ मोहनक
भावी जीवनक पृष्ठभूमि उजागर होइत अछि।

अध्याय २५ — चुप्पी

मूल उपन्यास, पृष्ठ १६१-१६३ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

पच्चीसम अध्याय 'चुप्पी' पूर्व अध्यायसभक दैनिकी, प्रमाण-पञ्जी, घटना-काल आ पदाधिकारीक वार्ता सँ एकदम भिन्न रचना-विधानमे खुलैत अछि। एतय कोनो नाम, वर्ष, वंश-प्रविष्टि अथवा प्रत्यक्ष सामाजिक विवादक व्याख्या नहि। 'ओ' कहल स्त्री-देहक दिन भरिक स्पर्श, गन्ध, स्वाद, ताप, ध्वनि आ थकान गद्यक मुख्य पदार्थ बनैत अछि। पात्रक पहिचान अनिर्दिष्ट अछि; एकरा पाठ-साक्ष्य बिना फुलझरी वा शारदाक निश्चित आत्मानुभव कहल नहि जाए।

भोरक माटिक ठंडक, चटाइक चौकोर छाप, केसक जड़िमे सुखल पसीनाक नून आ कानक पाछाँ तेलक गन्ध आरम्भहि सँ देह केँ साक्षी बनबैत अछि। पूर्व अध्यायमे साक्षी 'हम देखलहुँ', 'हम सुनलहुँ' कहि प्रमाण निर्धारित करैत छलाह; एतय अनुभूति ककरो दोसराक सत्यापन लेल प्रस्तुत नहि। देह भीतरसँ अनुभूत होइत अछि, बाहरी पँजीमे दर्ज नहि। एहि कारण 'चुप्पी' मौनक अभाव नहि, संवेदनाक घन उपस्थिति अछि।

भूकम्पक पछाति भीतक तिरछा चिरासँ झरल बालुकण, कूपक पानिक माटि-जेकाँ स्वाद आ खुलल माटिक गन्ध प्रसङ्गकेँ एक पुरान आपदा-पछातिक भौतिक वातावरणसँ जोड़ैत अछि। मुदा अध्याय कोनो निश्चित दिनाङ्क नहि दैत। पुरान भूकम्पक स्मृतिसँ पाठक सम्बन्ध जोड़ि सकैत छथि, मुदा ई संकेत दृश्यकेँ १९३४क कोन विशेष दिन वा व्यक्ति संग सिद्ध रूपेँ बाँधैत नहि।

चूल्हक आधा-भीजल काठक धुआँ, भातक भाप, नून-मरिच आ काँच आमक खट्ट स्वाद, दाँतक पुरान पीड़ा—एहि सभक बारम्बार घर्षणसँ जीवित देहक सीमित सहनशीलता प्रकट होइत अछि। किछु गन्ध नीक लगैत अछि, किछु

भारी; सूत-साडीक रगड़ कखनो असुविधा दैत अछि, सरिसब तेलक दुइ बूँद शान्ति । ई व्यक्तित्वक सूक्ष्म आधार अछि, जे वंशक नाम वा विवाह-विधिक प्रश्नबिनु सेहो एक मनुष्यक विशेष अनुभव रचैत अछि ।

काँचक चूड़ीक पुड़िया खनकैत अछि आ भीतर दबाओल जाइत अछि; कानक पीतल बाली उतारल गेलाक बाद लोतिक खाली छेद हवा पबैत अछि । एहि वस्तु-स्पर्शमे पहिल अध्यायक फुलझरीक थारी, सूत, कंघी, तकली आ साडी स्मरणमे आबि सकैत अछि । मुदा वस्तुक समानता स्वतः चरित्रक समानता सिद्ध नहि करैत । कलात्मक अर्थ ई जे पहले जकरा घरक आन लोक वस्तु गनि स्मरण करैत छल, एहि दृश्य-जगतमध्ये स्त्री स्वयं वस्तु स्पर्श करैत छथि— एक सम्भावित सौन्दर्यात्मक प्रतिध्वनि, प्रमाणित कथानक-परिचय नहि ।

दूर माटि काटबाक धप-धप, बैलगाडीक आवाज, बछियाक स्वर आ झींगुरक निरन्तर ध्वनि भौतिक परिवेशक एक अपरिभाषित सामाजिकता बनबैत अछि । पात्र बात नहि कहैत छथि, पर घर आ गाम मौन नहि । ‘चुप्पी’ शीर्षक एहि ध्वनि-बहुलताक भीतर व्यक्तिक निजी अज्ञेय अनुभवक नाम बनैत अछि । दृश्य कहैत अछि जे बोलल शब्दक बिना सेहो जीवनक एक सघन इतिहास अछि ।

नदी एतय प्रत्यक्ष देखाइत नहि; ओकर भीजल बालू, काइ, सडल पात आ दूरक जलक गन्ध हावा अनैत अछि । पूर्व तीन ‘कोसी’ खण्डमे नदी अपन ‘हम’ बोलैत छल; एतय ओ एक स्त्रीक श्वास आ इन्द्रियक माध्यमसँ अप्रत्यक्ष उपस्थित अछि । नदीक दीर्घ काव्यात्मक स्वतन्त्रता आ देहक क्षणिक संवेदना एक-दोसरसँ तुलना करब योग्य अछि, मुदा एकैक दोसरक कथनकर्ता मानब अनुचित ।

आँखि मूनिते लाल उजास, धूलिक तैरैत कण, बालीक खाली छेद, पयरक पिंडलीमे मच्छरक चुभन, कमरक धीमा पीडा—एहि विवरणमे कथानकक सूचना लगभग शून्य, अनुभूतिक सूक्ष्मता बहुत अधिक अछि । भारतीय रस-

ध्वनि दृष्टिसँ करुणा एतय स्पष्ट विलापसँ नहि, नित्य देहक थकानक निविड अनुभवसँ उपजैत अछि। पाश्चात्य आन्तरिक चेतना-शिल्पक दृष्टिसँ तृतीयपुरुष कथन निकट देहक अनुभूतिक सङ्ग चलैत अछि, जखन पात्रक सामाजिक नाम हटाओल गेल अछि।

अन्तिम हस्तस्पर्श—माटि स्थिर अछि कि देहक धड़कन सँ हलुक थरथराहट बुझाईत अछि—अनिश्चितता केँ प्रमाण-प्रश्नमे नहि, अनुभूतिक भीतर स्थापित करैत अछि। ई पूर्व अध्यायक अनुसन्धानक 'नहि जानैत' सँ भिन्न अछि; एतय शरीरक संवेदना अपन कारण जानबाक बाध्यता नहि मानैत। चन्द्रमाक उजास मेटाईत देहक श्वास आ दूर जलक ध्वनि रहि जाईत अछि। पाठक एतय समाधान नहि, भौतिक उपस्थितिक एकान्त पवैत अछि।

एहि अध्यायक असाधारण प्राप्ति सामाजिक रूपसँ अनाम स्त्रीकेँ संवेदनाक सम्पूर्ण जगत देब अछि। संगहि स्पष्ट सीमा ई जे घन इन्द्रिय-विवरण कथानकक तात्कालिक प्रगति लगभग रोकि दैत अछि आ अनामिकाक मनोभावक सामाजिक कारण स्वयं पाठमे स्पष्ट नहि। मुदा प्रमाण-पञ्जीक विस्तृत इतिहासक बीच ई विराम उपन्यासकेँ केवल साक्ष्य-संकलन बनबाक संकटसँ बचबैत अछि; ई देखबैत अछि जे मनुष्यक किछु अनुभव कोनो बहिक उपयोगिता सँ स्वतंत्र रहैत अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय २१-२५

दुइ मिथिला • विवाह • अकाल १९६६ • इन्जीनियर बाबू • चुप्पी

एकैसम सँ पच्चीस धरि उपन्यास पाँच अलग दफ्तरी अथवा सामाजिक पञ्जीक सीमा देखबैत अछि: सीमा-पार वस्तुक सूची, विवाह-पँजी, अकालक व्यय-बहि, तटबन्धक माप-पुस्तिका, आ अन्तमे पँजीसँ सर्वथा बाहर एक अनाम देहक संवेदनात्मक समय। एहि संरचनामे नाम, वस्तु, मात्रा, श्रम आ शरीरक अनुभव आपसमा प्रतिस्थापित नहि होइत; एक घटना केहन प्रकारक लेखा माँगैत अछि, ई प्रश्न अध्याय-दर-अध्याय बदलैत अछि।

‘दुइ मिथिला’क सीमा-पडताल आ ‘विवाह’क पारिवारिक जाँच दुनू विवाहसँ सम्बन्धित अछि, मुदा लेखनीक दिशा विपरीत अछि। श्यामानन्दक बरियातमे पँजी विवाहक पात्र सिद्ध करैत, सीमा सूची उपहारक मूल्य/प्राप्तकर्ता माँगैत अछि। रामानुग्रहक अपन विवाहमे बाहरी सीमा नहि, निजी हितक निष्पक्ष जाँच आवश्यक अछि। पहिलमे राष्ट्रक कोष्ठ परम्परागत सम्बन्धकें अपर्याप्त मानैत अछि; दोसरमे परम्परागत पँजीकार स्वयं अपन पाँति न जाँचबाक नियम बनबैत अछि।

शारदाक उपस्थिति विवाह-पत्रमे मूल-गोत्र-अधिकारक माध्यमसँ अछि; विवाहोत्तर निजी मौनमे ओ देहसहित अव्यक्त उपस्थित छथि। अध्याय २५मे एक अनाम स्त्रीक देह-व्यापार कथा-परिवेश बनैत अछि, मुदा कथा नहि कहैत जे ओ शारदा छथि। एहि कारण दाम्पत्यक मौन आ देहगत मौनमे शिल्पगत साम्यता अछि, पात्रगत समता नहि। प्रमाण-सीमा बुझैत साहित्यिक तुलना करब एहि ग्रन्थक नियमक अनुरूप अछि।

‘अकाल १९६६’मे व्ययक मात्रा घटब आ ‘इन्जीनियर बाबू’मे बोल्डर-माटिक माप बढ़ब दिस विपरीत गणनाक लय अछि। पहिलमे घरेलू साधनसँ जीवित रहबाक रणनीति, दोसरमे निर्माणक टिकाउ रखबाक प्रक्रियागत लेखा। दूनू ठाम

संख्या एतबा कहैत अछि जे की किनल वा कतेक माटि भरल गेल; ओ नहि कहैत जे ककर भूख घटल, ककर श्रमक भुगतान रुकल, ककर राति चिन्तामे बीतल। मापनक वस्तुनिष्ठता ओकर प्रयोजन-सापेक्ष सीमा सहित प्रस्तुत अछि।

शारदाक अकालमे खसल नून बटोरबाक पाँच मिनट आ प्रसव-पछाति 'तोरा ई बात लिखबाक आवश्यकता नहि'क कथन अभिलेखन-स्वतन्त्र गृह-ज्ञानक दू सशक्त स्थल अछि। पहिलमे गृह-श्रम लागत आ हानि गणैत अछि, दोसरमे मातृत्वक दैनिक अनुभव बाहरी कलमक अनावश्यक अधिकार रोकैत अछि। एहि नारी-दृष्टिक प्रमाणात्मक मूल्य कोनो सामान्य स्त्री-पूजा नहि, विशिष्ट व्यवहारक संगति पर आधारित अछि।

अध्याय २४क १९६२क जन्म-तिथि आ विभागीय कार्यादेशकें लेखक स्वयं आकस्मिक समय-संयोग कहैत छथि। पाठक मोहनक भावी अभियन्ता बनबाक प्रसङ्ग २००८क कथा-समयसँ जनैत छथि, मुदा सन् १९६२क घरक लोक एहन भविष्य नहि जानैत। एहि पश्चदृष्टिक कला तखन प्रभावी होइत अछि जखन जन्मकें पेशागत नियतिक अलौकिक संकेत नहि मानल जाए।

अकालक दैनन्दिन व्यय-बही आ विवाहक खर्च-बही बीच अभिन्न शब्द—चाउर, नून, तेल, सुपारी—भिन्न आर्थिक अर्थ पबैत अछि। विवाहक अवसरपर मात्रा समारोही, अकालमे घटल मात्रा वञ्चनाक लक्षण। वस्तु एके रहि सकैत अछि, ओकर सामाजिक उपयोग आ उपलब्धता बदलैत अछि। एहि तुलनासँ उपन्यास घरक अर्थनीतिक कालबोध बिना औपचारिक आँकड़ाक शिक्षित करैत अछि।

'चुप्पी' पूर्वक साक्षी-अध्यायसभक 'नहि लिखल' शीर्षक सँ ध्वनि-संबन्ध रखैत अछि, मुदा तकर निष्कर्ष दोसर अछि। अध्याय १५मे मौन प्रमाणक रिक्ति, लेखन-निषेध आ असिद्ध आरोपक रक्षा करैत अछि। अध्याय २५मे मौन एक जीवनक त्वचा, स्वाद, श्वास आ गन्धक भरा हुआ समय अछि। पहिल मौन

इतिहासक ज्ञान-सीमा, दोसर अनुभूतिक अखण्डता। ई विभाजन उपन्यासकें अति-एकाङ्गी अभिलेख-विचारसँ बचबैत अछि।

नव्य न्यायपरक विवेचनमे बीसमक पुनर्वास-पत्र, एकैसमक सीमा-प्रपत्र, बाइसमक विवाह-जाँच, तेइसमक वस्तु-शून्य आ चौबीसमक माप-पुस्तिका अलग सन्दर्भक प्रमाण अछि। प्रत्येकमे अनुपस्थित सूचना आवश्यक रूपसँ अनुपस्थित घटना नहि। ई भेद पच्चीसम अध्यायमे नव सीमा पबैत अछि: इन्द्रिय-अनुभव सत्य होइतो ओकरा सार्वजनिक प्रमाण-पत्रक नापमे सीमित करब स्वयं अनुचित होइत अछि।

पाँच अध्यायक वर्णन-लयमे अत्यन्त विचलन अछि। सीमा-विवरणक संवाद आ वस्तु-सूची, विवाह-पत्रक क्रमबद्ध प्रस्तुति, अकालक गृह-वस्तुक सङ्ग्रह, विभागीय निर्माण-प्रक्रिया, आ पच्चीसमक दीर्घ इन्द्रिय-वर्णन—एहि रूप-बहुलतासँ उपन्यासक विधागत प्रयोग सम्पन्न होइत अछि। सीमा ई जे लम्बा सूचीक बारम्बार प्रयोग कथानकक प्रवाहमे रुकावट आनि सकैत अछि, तथापि अन्तिम 'चुप्पी' ई स्थूल सूचीसभक विपरीत अत्यन्त सूक्ष्म देहगत आवृत्ति द्वारा अलग सौन्दर्य स्थापित करैत अछि।

एहि बैचक समेकित उपलब्धि ई जे लेखा आ अनुभवक भेद केवल प्रशासन बनाम समाजक दोसरूपा द्वन्द्व नहि। परम्परागत पँजी सेहो सीमित अछि; दफ्तरी सूची सेहो अपन काममे आवश्यक; परिवारक खर्च-बहि सेहो सब बात नहि कहैत; देहक संवेदना सेहो पूरा सामाजिक इतिहास बताबय सक्षम नहि। कृति प्रत्येक लेखाक उचित प्रयोजन आ ओकर बाहरी मौन एक संग पाठकक आगाँ रखैत अछि।

अध्याय २६ — कोसी — ४

मूल उपन्यास, पृष्ठ १६४-१६५ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

छब्बीसम अध्यायमे कोसी फेर प्रथम पुरुषमे बजैत अछि, मुदा पूर्व 'कोसी' खण्डसभक अपेक्षा एहि बेर ओकर स्वरक केन्द्र माटिक भीतर दबायल देह-अवशेष अछि। आरम्भक माटि, चूना, राख, हड्डीक उज्जर कण आ लाल माटिक लसलसाहट केवल प्राकृतिक पदार्थक सूची नहि; ई वस्तु-क्रम पाठककें अगिला अस्थि-अन्वेषण लेल तैयार करैत अछि। तथापि नदी स्वयं 'अपराध' अथवा 'निर्दोष'क निर्णय नहि करैत। उपन्यास एतय प्रकृतिक भौतिक अस्तित्व आ मानव समाजक नैतिक अर्थारोपणक बीचक दूरी शुरूहिसँ स्पष्ट राखैत अछि।

'हम ढलान पढैत छी हम दबाव पढैत छी'—नदीक एहि पाठ-क्रियामे 'पढब' शब्दक अर्थ पँजीकारक पठनसँ सर्वथा भिन्न अछि। रामानुग्रह अक्षर, हस्तलिपि, साक्षी आ तिथिक सम्बन्ध पढैत छथि; कोसी वेग, भार, माटिक पकड़ आ तहक स्थिति। एकहि क्रियाक एहि दू भिन्न सन्दर्भसँ उपन्यास अपन मूल शीर्षक 'जल-पाँजि'क द्विध्रुवीय संरचना विस्तृत करैत अछि। जलक भौतिक व्यवस्था मानवक लिखित पाँति स्वीकार नहि करैत, मुदा ओही जलक चलन अभिलेखक जाँच लेल नव सामग्री छोड़ि जाइत अछि।

कोसीक कथनमे 'ई गाम', 'ई टोला', 'ई जाति', 'ई अधिकार' सन क्रमशः बढैत मानवीय वर्गीकरण अछि। एहि क्रममे भूगोलसँ सामाजिक विभाजन धरि रेखा खींचबाक एकहि बौद्धिक प्रवृत्तिक संकेत भेटैत अछि। नदी ई रेखा केवल तखन धरि मानैत अछि जखन माटि स्थिर अछि। नदीकें जातिभेदक नैतिक प्रतिरोधक घोषणाक प्रतीक बना देब सरल, मुदा अनुचित होयतः ओ स्पष्ट कहैत अछि जे ओकरा अपराध, निर्दोषता अथवा मानवक नामक ज्ञान नहि। नदीक उदासीनता सामाजिक न्यायक विकल्प नहि, मानव निर्मित सीमाक अस्थिरताक कलात्मक उद्घाटन अछि।

ई अध्याय देहक चिन्हकें ठोस भौतिक रूपमे रखैत अछि—कलाईक गोल हड्डी, दाँतक कठोरता, खोपड़ीक जोड़। एहि वस्तुसभमे कथावाचक जखन उमेर, लिंग आ चोटक अनुमानक मानवीय प्रयत्न देखबैत अछि, तखन नव्य न्यायसँ सम्बद्ध प्रमाणक सीमा स्मरण होइत अछि। पदार्थक उपलब्धि प्रत्यक्षक आरम्भ भऽ सकैत अछि, मुदा विशिष्ट व्यक्तिक पहिचान तखन धरि सिद्ध नहि जखन धरि अतिरिक्त परीक्षण आ विश्वसनीय साक्ष्य नहि हो। लेखक ई विधिक भेद नदीक आत्मवाणी द्वारा संकेत करैत छथि, प्रत्यक्ष न्यायालयी उपदेश द्वारा नहि।

बालुक तहक अन्तर—ऊपर नव, नीचाँ पुरान, बीचमे बाढ़िक गाद आ कतहु भूकम्पक दरार—उपन्यासक समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिक महत्त्वपूर्ण रचना अछि। एकहि स्थानमे अनेक समय एकसंग उपस्थित अछि; कागज ओकरा पृथक तिथिक पाँतिमे राखय चाहैत अछि। एहि अन्तरसँ लेखनक सुविधा आ स्थानक वास्तविक जटिलताक द्वन्द्व निकलैत अछि। १९३४क स्मृति, पछिला सर्वेक्षण आ २००८क बाढ़िक संसार पाठकक समक्ष एक स्थानक अनेक परत बनि अबैत अछि; मुदा भौतिक परतक सहअवस्थिति ऐतिहासिक घटनाक स्वतः प्रमाण नहि।

पाठमे एक क्षण एक उज्जर टुकड़ा काठ, पाथर अथवा हड्डी बुझाईत अछि। पहिचानक ई स्थगन कथाक रहस्य बढ़बैत अछि, मुदा ओकर बेसी महत्त्व ई जे वस्तुक विषयमे पहिल अनुमान आ परीक्षणोपरान्त निर्णय अलग अछि। लोकक हाथ आगाँ बढ़ि रुकैत अछि; ओकर बाद डोरी, बाँस, कपड़ा आ सरकारी कर्मीक आवाहन होइत अछि। एहि प्रक्रिया द्वारा सामान्य खेत-किनार 'जाँचक ठाम' बनि जाइत अछि। वस्तुक भौतिक स्वरूपक अपेक्षा ओकरा घेरबाक सामाजिक प्रक्रिया कथात्मक गति देवामे निर्णायक अछि।

एहि खण्डक विरामहीन लम्बा वाक्य पानिक प्रवाहक नाटकीय अनुकरण करैत अछि। वाक्यक भीतर पुनरावृत्त 'हम', 'आ', 'जखन' आ 'मुदा' सँ एकटा एहन लय बनैत अछि जे विरामचिह्नक आश्वासन नहि दैत। शिल्पक ई विशेषता

एकदिस पाठककें नदीक अनवरत गतिक अनुभव करबैत अछि; दोसर दिस दीर्घ निर्बाध वाक्यमे अर्थक पृथक बिन्दु खोजब कष्टकर बना सकैत अछि। ई सम्भावित पाठकीय कठिनाइ लेखकक सजग प्रयोगक कलात्मक मूल्यकें नकारैत नहि, ओकर सीमा चिन्हित करैत अछि।

नदी बीचमे 'ई उपमा मनुष्यक अछि हमर नहि' कहि अपनहि प्रतीकात्मक उपयोग पर रोक लगा दैत अछि। आधा देखाइत हड्डी आ आधा बचल लेख बीचक समानता पाठक स्थापित करैत अछि; नदी ओकरा अपन प्राकृतिक अर्थ नहि मानैत। एहि आत्म-सचेत वाक्यसँ मानवीकरणक भीतर एक आलोचनात्मक दूरी स्थापित होइत अछि। नदीक स्वर मनुष्यक भाषामे लिखल अछि, मुदा लेखक ओकरा पूर्ण मानवीय मनोविज्ञान दऽ मानवीकरणक सरलता सँ बचैत छथि।

प्रथम 'कोसी' खण्डसभसँ एहि भागक अन्तर निर्णायक अछि। एतय नदीक आवाज मात्र विस्थापन अथवा सीमाक रूपक नहि, अस्थि-प्राप्तिक कथानकक पूर्वरचना बनि गेल अछि। अध्याय ३०मे जखन वास्तवमे अस्थि भेटैत अछि, पाठक छब्बीसम अध्यायक विस्तारित प्राकृतिक समयक स्मृति लऽ कऽ घटनाकें देखैत अछि। तथापि एहि पूर्वरचनासँ हड्डीक उमेर, व्यक्ति अथवा मृत्यु-कारण निर्धारित नहि होइत; कथाक अग्रसंकेत कें तथ्यात्मक समाधान मानब शिल्पक गलत पठन होयत।

भारतीय ध्वनि-विचारक दृष्टिसँ 'माटि', 'पाँति' आ 'रिक्ति'क बारम्बार आगमन अभिधासँ आगाँ मृत्यु, स्मृति आ अभिलेखीय विस्थापनक अर्थ खोलैत अछि। करुण अनुभूति मानवीय मृत देहक प्रत्यक्ष वर्णनसँ नहि, ओहि देहक नाम नहि बुझल जा सकबाक अपूर्णतासँ जनमैत अछि। नदीक उदासीन वाणी आ मनुष्यक बेचैन नाम-खोजक समवेत प्रभाव एहि अध्यायक प्रमुख कलात्मक उपलब्धि अछि।

एहि अध्यायक अन्तिम समाहारमे 'देह आ अभिलेख दुनू अपन अपन अधूरापनमे' पड़ल अछि। ई वाक्य समूचा उपन्यास लेल एक सीमाबोध

उपस्थित करैत अछि; भौतिक अवशेष अभिलेखीय रिक्ति स्वतः नहि भरैत आ अभिलेखीय नाम वस्तुक पहिचान स्वतः नहि तय करैत । छब्बीसम अध्यायक साहित्यिक उपलब्धि ई द्वैतक घनीभूत प्रतिपादन अछि; ओकर सीमा ई जे प्रकृतिक दार्शनिक आत्मवाणी विस्तृत होइत-होइत पाठकसँ प्रत्यक्ष मानवीय संवादक दूरी बढबैत अछि ।

अध्याय २७ — अनुराधाक स्वर-सन्देश एक

मूल उपन्यास, पृष्ठ १६६-१६९ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

सत्ताइसम अध्यायमे उपन्यासक कथन-माध्यम आकस्मिक रूपसँ बदलैत अछि। दिल्लीक राति २:१७ बजे दर्ज अनुराधाक स्वर-सन्देश दैनिकी आ पँजीक अपेक्षाकृत व्यवस्थित वाक्यक स्थानपर बोलबाक विराम, अधूर स्वर आ अस्पष्ट श्रव्यांश अनैत अछि। आरम्भमे रात्रि-सेवा, विभागीय कक्ष आ आपात चिकित्सा सम्बन्धी सूचना केवल आधुनिक वातावरण स्थापित नहि करैत; ई देखबैत अछि जे कागजसँ चलैत मानवीय उत्तरदायित्वक दोसर व्यवस्था मैथिली गामसँ बहुत दूर सक्रिय अछि।

अनुराधा अपन बाबा रामानुग्रहक अस्सी वर्षक उमेर, घुटनाक सूजन आ समयपर भोजन-औषधिक चिन्ता करैत अछि। ओहि चिन्ताक बीच पँजीकारक प्रसिद्ध अंक-निष्ठा पर हलुक व्यङ्ग्य अछि: अस्सी यदि अंक अछि तँ रक्तचापक माप सेहो अंक अछि। एहि घरेलू स्वरक महत्त्व ई जे पुरान अधिकार-संबन्धमे नातिन केवल आज्ञा माननिहार नहि; अपन चिकित्सकीय अनुभवक आधारपर ओ बाबाकेँ निर्देश देबाकेँ सक्षम मानैत अछि। उपन्यास एहि भूमिका-परिवर्तनकेँ घोषणापत्र बनौने बिना संवादमे स्थापित करैत अछि।

चिकित्सालयमे एक वृद्धाक उमेर कागज आ पुत्रक कथनमे अलग अछि। चिकित्सक कहैत छथि जे उपचार लेल तत्काल अनुमान पर्याप्त भऽ सकैत अछि; अनुराधा पँजीकार बाबाक तीन साक्षीक माँग स्मरण करैत अछि। एतय चिकित्सीय आवश्यकता आ वंश-अभिलेखनक प्रमाण-मानक एक नहि अछि। उपन्यासक बौद्धिक सूक्ष्मता एहि अन्तरक पहिचानमे अछि: उपचारमे तात्कालिक उपयोगिता निर्णायक भऽ सकैत अछि, मुदा वंश-जाँचमे दीर्घकालीन विवरणक प्रमाण-संगति प्रमुख अछि। दोसर क्षेत्रक पद्धति पहिल पर अनिवार्य रूपसँ थोपल नहि जाइत।

वृद्धा अनुराधाक नाम 'राधा' बुझैत छलीह आ अनुराधा एकरा नहि सुधारैत अछि। एहि लघु घटनामे व्यक्तिक निज पहिचान, रोगक परिस्थिति आ शय्या-संख्याक प्रशासनिक महत्त्वक टकराव व्यक्त अछि। अस्पतालमे शय्या-संख्या पैघ आ नाम छोट होएबाक विडम्बना अभिलेखक अमानवीयता मात्र नहि; अनेकरा एकहि समय उपचार देबाक बाध्यताक परिणाम सेहो अछि। एहि द्वैध अर्थक कारण तुलना सरल संस्था-विरोधी भाषण नहि बनैत।

अनुराधाक हस्तान्तरण-पत्रमे शय्या-संख्या, औषधि-एलर्जी आ परिवारक फोन-संख्या पुनः जाँचबाक प्रसङ्ग विशेष उल्लेखनीय अछि। एक अंकक त्रुटि आपातकालमे गलत लोक धरि सूचना पहुँचा सकैत अछि। पँजीक गलत अक्षर वंशक्रम बदल्यबाक आशङ्का आ चिकित्सालयक गलत अंकक तत्काल मानवीय परिणाम एक-दोसराक समक्ष अबैत अछि। भारतीय औचित्य-विचारसँ देखल जाए तँ दुनू अभिलेखक शुद्धता अपन-अपन प्रयोजनक अनुरूप आवश्यक अछि; समानता अस्तित्वगत नहि, उत्तरदायित्वपरक अछि।

'कागज देहक बदला नहि अछि', किन्तु कागज बिना देहक आवश्यक बात अगिला पालीधरि नहि पहुँचैत—अनुराधाक ई बोध नव अध्यायक सर्वाधिक प्रखर विचार अछि। एहि वाक्यमे 'देह आ जाति'क आगामी अध्यायक रूपरेखा सेहो ध्वनित होइत अछि। शब्दशः लिखल सूचना वास्तविक रोगी नहि, मुदा सूचना नष्ट भेलाक सामाजिक अथवा चिकित्सीय हानि वास्तविक अछि। लेखक अभिलेख-विरोध आ अभिलेख-पूजा दुनूसँ दूर एक व्यावहारिक नैतिक स्थिति निर्मित करैत छथि।

गामक लोकसँ चिकित्सालयमे मैथिली भाषाक पहिचान आ मौसीक घर लेल प्रयुक्त 'छल' शब्द अनुराधाकँ अस्वस्थ करैत अछि। एतय भूतकालक एक क्रियारूप भूगोलक संभावित लोपक मार्मिक संकेत बनैत अछि। घर 'छल' अर्थात् अब नहि अछि—एहन निष्कर्ष ओ नहि काढैत अछि; वास्तवमे लोककँ एखन घरक स्थिति ज्ञात नहि। ध्वन्यात्मक करुणता एहि अनिश्चिततामे अछि। विदेहक समानान्तर ऐतिहासिक पठनमे दिल्लीक रात्रिक चिकित्सालय आ कोसीक गाम एकहि विस्थापनक अलग अनुभव-क्षेत्र रूपमे खुलैत अछि।

चिकित्सालयक घड़ीक समय आ परिजनक प्रतीक्षाक समय पर अनुराधाक टिप्पणी कथाकालक दोहरी संरचना उजागर करैत अछि। औषधि ढाड़ बजे, तापमापन तकर बाद, मुदा बाहर प्रतीक्षा करैत लोक लेल समय दरबज्जा खुजबाक ध्वनिसँ मापल जाइत अछि। रामानुग्रहक मिनट-दर-मिनट दैनिकी आ बाढिमे फँसल लोकक असमय अनुभूति बीच एही तरहक दूरी छल। पात्रक समयबोध कहियो एक सार्वभौमिक घड़ीमे समा नहि सकैत।

सन्देशमे विरामक आवृत्ति उच्चारणक स्वाभाविक टूटनकें चिह्नित करैत अछि। मुदा मूल स्रोतमे प्रयुक्त श्रव्य-संकेत आ अंग्रेजी चिकित्सकीय शब्दक अत्यधिक उपस्थिति शुद्ध मैथिली गद्यक सामान्य प्रवाहसँ जानि-बुझि कऽ भिन्न अछि। ई पात्रक जीवित कार्यक्षेत्रक भाषिक मिश्रण अछि; एकरा सम्पादकीय अशुद्धि मानि यान्त्रिक रूपसँ बदलि देब चरित्र-स्वरक ऐतिहासिकता नष्ट करत। आलोचक लेल पाठक भाषिक संरचनाक उद्देश्य बुझब अधिक उपयुक्त अछि।

अनुराधा अपन अवकाश निश्चित नहि भेला पर सेहो दिल्लीसँ स्वयं गाम आबि सकबाक बात कहैत अछि। 'नातिन आदेश दऽ सकैत अछि' सन वाक्य स्नेह, आत्मनिर्णय आ पीढ़ीगत सत्ता-सम्बन्धकें एकहि ठाम अनैत अछि। ओ मोहनकें स्टेशनपर लोक पटेबाक बात एखन नहि जनबय चाहैत अछि। एहि छोट इच्छामे अनुराधा केवल पारिवारिक सहायक पात्र नहि, स्वतंत्र गतिशील व्यक्तिक रूपमे विकसित होइत अछि।

अन्तिम अंशमे अनुराधा तीन नामक चर्चा घर आबि कऽ सुनब चाहैत अछि, चिकित्सालयक बीच फोनपर नहि। एहि स्थगनसँ कथा रहस्य बनबैत अछि, मुदा ओ स्थगन स्वायत्त सुनबाक परिस्थिति चुनबाक निर्णय सेहो अछि। सूचना ककरा, कतय आ कोन माध्यमसँ देल जाए—ई प्रश्न पंजीकारक कथन-अधिकारसँ आगाँ बढ़ि सम्बन्धक नैतिकता तक पहुँचैत अछि। पहिल स्वर-सन्देशक शक्ति घरेलू स्नेह आ दफ्तरी दायित्वक संगहि राग-विरागक लय

राखब अछि; ओकर सीमा ई जे लम्बा एकपक्षीय कथनमे बाबाक तत्काल प्रतिक्रिया अनुपस्थित रहैत अछि।

अध्याय २८ — देह आ जाति

मूल उपन्यास, पृष्ठ १७०-१७२ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

अट्टाईसम अध्याय 'देह आ जाति' उपन्यासक बीचमे एक विस्तृत वैचारिक केन्द्र प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भिक वाक्यसभ पाँजीमे देहक रंग, उँचाइ, श्रमक कठोरता, प्रसव-चिह्न आ पीडाक अनुपस्थितिक सूची बनबैत अछि। एहि नकारात्मक सूचीक पछाति कथावाचक बतबैत छथि जे पाँजी देहक वर्णन नहि करैत, मुदा देहसभक बीच समाजक मानल सम्बन्धक सीमा अवश्य लिखैत अछि। एहि तार्किक उलटबदलीमे अध्यायक मूल प्रत्यय अछि: अभिलेख ककरो जीवनक सम्पूर्णता नहि लिखितो सामाजिक परिणाम उत्पन्न कऽ सकैत अछि।

पाँजीक पुरुषकेन्द्रित वंशक्रममे स्त्रीक देह प्रायः जन्म, विवाह आ कुल-विस्तारक माध्यम बनि रहैत अछि। शारदाक पूर्व अध्यायसभमे विकसित अनकहल अनुभव आ पच्चीसम अध्यायक अनाम स्त्रीक देह-बोध एहि विश्लेषणक पाठगत पृष्ठभूमि अछि। मुदा कथावाचक अनुभवक अभावकें काल्पनिक विवरणसँ भरबाक अनुमति नहि दैत छथि। एहि संयमसँ स्त्री-विमर्श तैयार प्रमाण-सिद्धान्तक विरुद्ध नहि, बल्कि प्रमाणक अपूर्णताकें स्वीकार करैत विकसित होइत अछि।

जाति-विषयक चर्चा विवाहक मान्यता सँ भोजन, जल, आँगनक प्रवेश आ सामूहिक पाँतिधरि फैलैत अछि। एहि प्रसङ्गमे पाँजीकें सम्पूर्ण जाति-व्यवहारक एकमात्र स्रोत मानल नहि गेल अछि; कथावाचक स्पष्ट कहैत छथि जे सभ व्यवहार पाँजीमे नहि लिखल होइत। तखनहु विवाह-अधिकारक लिखित निर्णय व्यापक सामाजिक मर्यादाकें दृढ़ करि सकैत छल। एहि ऐतिहासिक अन्तःसम्बन्धकें पढ़ैत 'अभिलेखीय प्रभाव' आ 'सामाजिक व्यवहार'क भेद राखब जरूरी अछि।

ककर नाम प्रवेश पावत, ककर सम्बन्ध संक्षेपमे रहत आ ककरा कात रिक्ति छोड़ल जाएत—ई सभ निर्णय इतिहासक उपलब्ध सामग्रीकेँ परिवर्तित करैत अछि। उपन्यासक एक प्रमुख मौलिकता ई जे पँजीक मूल्यकेँ केवल संरक्षित कृत्य मानि नहि, चयन, विलोपन आ बहिष्कारक सम्भावित औजार मानि आलोचित करैत अछि। किन्तु ई आलोचना पँजीक सभ प्रविष्टिकेँ असत्य घोषित नहि करैत। जकरा लेल पाठ-साक्ष्य अछि तकर सत्यापन आ जकरा लेल नहि अछि तकर रिक्ति दुनू अलग-अलग रहैत अछि।

पुरान हस्तलिपिक दाब, ‘र’क आकार, मात्रा आ अन्तराल द्वारा लेखकक हाथक भौतिक उपस्थिति अनुमानित होइत अछि। ई विवरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ पँजी जे देहक निजी अनुभव अनुपस्थित रखैत अछि, ओही पँजी अपन लिखनिहारक देहक चिन्ह सुरक्षित राखैत अछि। हस्ताक्षर-विज्ञानक औपचारिक परिणाम एतय दाबी नहि कएल गेल; केवल पाठक भीतरक भौतिक चिह्न आ कथावाचकक तुलना उपलब्ध अछि। नव्य न्यायसँ देखल जाए तँ लिपिक मेल संभावित हेतुक एक भाग अछि, अन्तिम सिद्धि नहि।

मेटायल पाँतिक रेशा, घर्षणक दिशा, मसिक अवशेष आ भिन्न समयक खुरचन जाँचबाक पद्धति अध्यायकेँ अमूर्त जाति-चर्चासँ बचबैत अछि। कथावाचक पहिले दर्ज करैत छथि जे लेख छल आ पछाति ओकर सतह बदलल गेल; ओहि आधारपर तत्काल ‘शुद्ध’ अथवा ‘अशुद्ध’क नैतिक निर्णय नहि लिखैत। एहि अनुशासनक भीतर सामाजिक आलोचनाक शक्ति कम नहि, बढ़ैत अछि: भौतिक क्षति देखल गेल अछि, मुदा क्षतिक हेतु आ सम्पूर्ण सामाजिक परिणाम एखन जाँचक विषय अछि।

कथावाचकक परिवारक भीतरक सम्भावित सम्पृक्ति एहि अध्यायक निर्णायक मोड़ अछि। अपन पुरखाक हाथक लिखावट मेटायल पाँतिसँ सम्बन्धित होयबाक प्रश्न उठैत अछि। पूर्व रामानुग्रह आनो परिवारक अभिलेख परीक्षक छलाह; आब अपन घरक अभिलेखक आलोचनात्मक पाठक बनबाक बाध्यता अछि। बाह्य निष्पक्षता आ व्यक्तिगत उत्तरदायित्वक ई टकराव मनोवैज्ञानिक

गहराई अनैत अछि। 'हमर परिवार कयलक कि नहि' पाठमे प्रश्न अछि; एकरा लेखकक प्रमाणित अभियोग बनायब ठीक नहि।

सात बिन्दुक जाँच-सूची—मूल पन्नाक अवस्था, स्याहीक कालभेद, लिपिक मेल, नकलक रिक्ति, विवाहक मौखिक उल्लेख, हरवाहक 'हत्या' शब्द आ अस्थिक स्थल—बहु-स्रोत प्रमाण-संयोजनक पाठशाला अछि। एक बिन्दु पर्याप्त नहि; अनेक बिन्दु रखलाक बादो निष्कर्ष अनिश्चित रहि सकैत अछि।

एतय 'हत्या' शब्द पात्रक कथनक उल्लेख अछि, सिद्ध घटना नहि। अस्थिक ठाम पातक सम्बन्ध निर्धारित करबाक स्वतंत्र साधन नहि। एहि सावधानीसँ उपन्यास न्यायसङ्गत संदेह आ अनुमानसिद्ध आरोपक सीमा खींचैत अछि।

पँजीक 'अधिकार' आ देहक 'अपन सम्बन्ध चुनबाक अधिकार' बीच अर्थगत अन्तर मार्मिक अछि। पुरान अभिलेख कोन विवाह मान्य, से लिखैत अछि; कथावाचक दैनिकीमे एहन स्वतन्त्र निर्णयक अधिकार दर्ज करैत छथि जे पँजी प्रायः नहि लिखैत। एहि दुई अलग दस्तावेजमे अलग सत्य-विधि अछि:

पहिल ऐतिहासिक व्यवस्था पढ़ैत अछि, दोसर वर्तमान नैतिक उत्तरदायित्व स्वीकरैत अछि। एकटा वाक्यकें दोसराक स्थानपर रखलासँ उपन्यासक सूक्ष्मता नष्ट भऽ जाएत।

अन्तिम दृश्य—पोथी छुबिते लागल फूँद, मसि आ धूलि धोयब—सामाजिक 'शुद्धि'क बहुचर्चित कल्पनासँ भिन्न साधारण शारीरिक क्रिया अछि। कथावाचक स्पष्ट करैत छथि जे ई शुद्धिक विधि नहि। तथापि अँगुरिक रेखामे बाँचल मसिक पातर चिन्ह भौतिक साक्ष्य आ नैतिक स्मृतिक द्विस्तरीय ध्वनि उत्पन्न करैत अछि। प्रतीकक महत्त्व मूल वाक्यक अर्थ बदलल बिना ओकर सन्निकट तनावमे निहित अछि।

पाश्चात्य आलोचनाक सत्ता-ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न एहि अध्यायमे उपयोगी होइत अछि, मुदा बाह्य सिद्धान्तक नाम लऽ कऽ स्रोतक स्थानीय ऐतिहासिक विशिष्टता दबाएब अनुचित होयत। मिथिलाक पँजी, मूल-ग्राम, विवाह-अधिकार आ मुसहर टोलाक प्रसङ्गक अपन संस्थागत संरचना अछि। कथाकार एहि स्थानीय सामग्रीद्वारा सभ्यतागत अधिकार-व्यवस्थाक आलोचना

करैत छथि। अध्यायक उपलब्धि विचारक गहनता आ प्रमाण-विनम्रता संग रखब अछि; सम्भावित सीमा ई जे कथात्मक घटना किछु देरि वैचारिक विवेचनक पाछाँ सरकि जाइत अछि।

अध्याय २९ — स्वर-सन्देश दुइ

मूल उपन्यास, पृष्ठ १७३-१७५ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

अनुराधा पहिल फोटोमे श्रीधर मिश्रक नाम आ घिसल ठाम, दोसरमे फुलझरी, जगेसर सदा आ हरिनारायणक नाम पढ़ि सकल अछि। शेष छायाचित्र अस्पष्ट अछि। ओ एहि सीमाकेँ स्पष्ट कहैत अछि; सर्वज्ञ कथावाचकक भाँति कागजक अनदेखल भाग अपने नहि भैत। बहुस्तरीय अभिलेख-परम्परामे ई 'फोटो देखल' आ 'मूल पृष्ठ जाँचल' बीचक मौलिक अन्तर अछि। आधुनिक उपकरण साक्ष्यक दूरस्थ साझेदारी सम्भव करैत अछि, मुदा ओकरा सम्पूर्णता प्रदान नहि करैत।

अनुराधा अपन प्रश्नक केन्द्र सामाजिक जाति-विवाहक नियमक व्याख्यासँ हटाकऽ परिवारक इतिहास पर लैत अछि। 'जँ हरिनारायण हमर पुरखा छथि'—एहि शर्तक भीतर पाँति मेटेबाक सम्भावित कार्य निजी उत्तरदायित्व बनैत अछि। ई शर्त महत्त्वपूर्ण अछि: पात्र पुरखाक पहिचान आ लेखकक हस्तक्षेपकेँ एकसंग प्रमाणित तथ्य रूपमे घोषित नहि करैत। मुदा प्रश्न पुछबाक नैतिक अधिकार प्रमाणक अन्तिम निष्कर्ष धरि स्थगित सेहो नहि राखैत।

सन्देशमे चारि स्पष्ट प्रश्न बारम्बार आबैत अछि—फुलझरी के छलीह, श्रीधरसँ हुनकर सम्बन्ध की, जगेसर सदा संग कतेक प्रकारक सम्बन्ध दर्ज

छल, आ हरिनारायण पाँति किएक मेटौलनि। एहि प्रश्नसभक पुनरावृत्ति सूचना-लालसाक परिचय मात्र नहि; मेटायल नामकें मानव सम्बन्धक प्रसङ्गमे फेर उपस्थित करबाक प्रयत्न अछि। 'हमर घर अपन पोथीमे अपनहि परिवारक एक स्त्रीकें किएक मेटौलक'—ई वाक्य अनुराधाक प्रश्नक नैतिक संक्षेप अछि, न्यायालयक सिद्ध निर्णय नहि।

चिकित्सालयक एक रोगिणी अपन रोगक बात घरक लोककें नहि कहय चाहैत छथि; अनुराधा हुनकर गोपनीयताक अधिकार स्वीकार करैत अछि आ सहमतिक पत्र प्राप्त करैत अछि। एहि छोट प्रसङ्गसँ 'मौन'क दू स्थिति विभक्त होइत अछि—स्वयं चुनल गोपनीयता आ दोसर द्वारा थोपल चुप्पी। पच्चीसम अध्यायक अनुभूत मौन, पन्द्रहम अध्यायक 'जे लिखल नहि गेल' आ एखन परिवारक दबाओल सम्भावित मौन एकहि शब्दमे समा नहि जाइत। एहि भेदक पहिचान अध्यायक सर्वाधिक परिपक्व नैतिक उपलब्धि अछि।

रोगिणीक अनुमति आ ऐतिहासिक पँजीक मेटाओल पाँति बीच सीधा विधिक समतुल्यता नहि अछि। पहिल जीवित व्यक्तिक उपचार-सम्बन्धी गोपनीयताक निर्णय, दोसर पुरान वंश-अभिलेखक ऐतिहासिक संशोधनक सम्भावित प्रश्न। लेखक दुनूकें मानवक बोलबाक अथवा नहि बजबाक अधिकारक आलोकमे समक्ष अनैत छथि, मुदा एकर भिन्न तथ्यात्मक परिस्थिति बचल रहैत अछि। नव्य न्यायपरक दृष्टिसँ ई उपमानक वैध सीमाक उदाहरण अछि: समान मौन अर्थमे समान कारण नहि।

अनुराधा अपन अट्टाइस वर्षक उमेर, रात्रि-सेवामे रोगीक दायित्व आ मृत्युसम्बन्धी सूचना देबाक अनुभवक आधारपर कहैत अछि जे असुविधाजनक पारिवारिक तथ्य सुनबाक क्षमता ओकरा अछि। एहि आत्मवक्तव्यक शिल्प ककरो वीरगाथा नहि बनबैत; ओ बारम्बार बाबाक दवा, घुटना आ भोजन सेहो पुछैत अछि। एतय स्नेह आ प्रतिप्रश्न प्रतिपक्ष नहि। नव पीढ़ीक नैतिक स्वायत्तता पारिवारिक सम्बन्ध तोड़ि नहि, ओकर भीतर संवादक शर्त बदलि स्थापित होइत अछि।

ओ न्यायालयक बयान नहि, चारि पाँतिक उत्तर माँगैत अछि—पहिचान, जगेसर, हरिनारायणक सम्बन्ध आ मेटेबाक प्रमाण। ‘जतेक निश्चित अछि ततेक’ कहैत ओ रामानुग्रहक अपन सात नियमक मूल अनुशासन पुनः हुनकासँ माँगैत अछि। पीढ़ीगत शिक्षाक ई प्रत्यावर्तन कथानकक महत्त्वपूर्ण विडम्बना अछि। जे पिता अथवा बाबा दूसराक अभिलेख पढ़बाक सावधानी सिखौने छथि, हुनक अपन घरक प्रसङ्गमे ओही सावधानीक निष्कपट उपयोगक माँग उठैत अछि।

एक शब्दक उत्तर—‘हँ’ अथवा ‘नहि’—माँगबाक आग्रह कथाक तनाव चरमपर पहुँचबैत अछि। मुदा कथा स्वयं दिखबैत अछि जे एहि दू उत्तरक पाछाँ प्रमाणक जटिलता अछि; तीससम अध्यायमे रामानुग्रह एही विकल्पक सम्मुख ठाढ़ रहि उत्तर नहि पठबैत छथि। तँ अनुराधाक अपेक्षित उत्तरक तात्कालिकता आ पँजीकारक प्रमाण-सङ्गतिक कठोरता बीच वास्तविक नैतिक तनाव अछि। एक पक्षकें पूर्णतः उचित आ दोसरकें दोषी बनौने बिना पाठक ओहि तनावमे प्रवेश करैत अछि।

सन्देशक आरम्भमे चिकित्सालयक सफाइक गाड़ीक आवाज, फिनाइलक गन्ध आ भोरक उजास अछि; अन्तमे अनुराधा फोन मौन करि सुतबाक तैयारी करैत अछि। ई परिवेशगत चक्र प्रश्नक तीव्रताकें मात्र वैचारिक उद्घोषणा होयबासँ रोकैत अछि। ओ एक काम करैत, थाकल, विश्राम चाहैत मानवीय पात्र बनी रहैत अछि। स्वर-सन्देशक एकपक्षीयता कथात्मक विलम्ब उत्पन्न करैत अछि, मुदा ओही विलम्बसँ पाठक बाबाक सम्भावित उत्तरक प्रतीक्षा करैत रहैत अछि।

अध्यायक मुख्य उपलब्धि ई जे कोनो खोआइल नामक ‘सुधार’क प्रश्न इतिहासक तकनीकी कार्य नहि रहि अपन परिवारक नैतिक आत्मपरीक्षा बनि जाइत अछि। संगहि सीमा ई जे अनुराधाक प्रश्नसभ एकहि केन्द्रीय आरोपक कात बेराबेरी लौटैत अछि; जँ पाठक एकर पुनरावृत्तिकें केवल सूचना मानय तँ विस्तार अधिक बुझा सकैत अछि। मुदा सजीव मौखिक कथनक शिल्पमे ई लौटब धड़कन-जेकाँ तनाव उत्पन्न करैत अछि।

अध्याय ३० — हड्डी

मूल उपन्यास, पृष्ठ १७६-१७७ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

तीससम अध्याय 'हड्डी' छब्बीसम 'कोसी — ४'क प्राकृतिक आत्मवाणीकें मनुष्यक संस्थागत अन्वेषणमे रूपान्तरित करैत अछि। जल घटलाक तेसर सप्ताहमे राहतक कच्ची बाटक कात माटि हटबैत दू मजूर एक लम्बा हड्डी देखैत छथि। ओ पहिने मवेशीक अवशेष बुझल जाइत अछि, पछाति आन टुकड़ा भेटिते काज रोकल जाइत अछि। पहिल अनुमान, वस्तुक देखाइत नवल भाग आ काम रोकबाक निर्णय—ई क्रम जाँचक कथा बनबैत अछि।

रामानुग्रहकें अस्थि-पहिचानक विशेषज्ञ मानि नहि, पुरान बसावट विषयक अभिलेख राखनिहार मानि बजाओल जाइत अछि। ओ १९३४क स्थल-रेखा, १९५४क सर्वेक्षणक नकल आ अपन दैनिकी अनैत छथि। तीनूक माप आ उत्तर-दिशाक चिन्ह समान नहि; पोखरिक मेड़, पीपड़िक टूँठ आ नीच भूमि सन साझा स्थलचिह्न मिलैत अछि। एहि बारीक भेदसँ लेखक नक्शाकें स्थानक तटस्थ प्रतिकृति नहि, मानवीय मापनक ऐतिहासिक उपकरण रूपमे प्रस्तुत करैत छथि।

थानाक अधिकारी वस्तु छूबय नहि दैत छथि, फोटो लैत छथि, दूरी नपबैत छथि आ स्थानीय साक्षीसभक नाम पृथक कागजमे दर्ज करैत छथि। माटि धीरे हटाओल जाइत अछि; कियो अधिकारी तत्काल 'मानव' शब्द लिखबाक अनुमति नहि दैत छथि। एहि प्रक्रियात्मक विवरणमे सनसनीक बदला संयम अछि। अस्थिक ठाम, उठेबाक क्रम आ साक्षीक विवरण कथानकक नाटकीय वस्तु बनि जाइत अछि; घटना केवल रहस्य-उपन्यासक चमत्कार नहि रहैत।

साँझसँ पहिने पहुँचल चिकित्सक मानव-अस्थि होयबाक सम्भावना कहैत छथि आ विधि-विज्ञानक जाँच आवश्यक मानैत छथि। ई कथन निर्णायक सीमा अछि: पाठमे विशिष्ट व्यक्तिक पहिचान, उमेर, मृत्यु-कारण अथवा हत्या सिद्ध

नहि भेल अछि। पाठक फुलझरीक पाँति, जगेसरक प्रसङ्ग आ हरवाहक कथन स्मरण कऽ सहजहि निष्कर्ष बनबय चाहि सकैत अछि, मुदा उपन्यास रामानुग्रह द्वारा एहन छल्लाँग रोकैत अछि। प्रमाणक अनुशासन कथा-रोमांचक विरोध नहि, ओकर संरचनात्मक शक्ति अछि।

पुरान मुसहर टोलाक ऊँच भाग अस्थि भेटल स्थानसँ लगभग बाइस हाथ दक्षिण-पश्चिम मानल जाइत अछि, ओहो १९३४क मेडकें आधार बनौने। १९५४क नकलमे सीमा उत्तर सरकल देखाइत अछि। भूकम्प, कटान, बाढ़ि अथवा सर्वेक्षण-सुधार—एहि संभावित कारणसभमे कोन निर्णायक, से कथावाचक नहि कहैत छथि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ देखल जाए तँ अलग समयक दू नक्शाकें मिलाकऽ स्थान-अन्तर चिन्हित करब प्रमाण-संगत अछि; ओकर कारण बिना अतिरिक्त स्रोत निश्चित करब नहि।

स्थलपर भेटल काँच, जंग लागल तार, कोयला, शंखक खोल आ माटिक नमुना कई कालक भौतिक वस्तु होयबाक सम्भावना राखैत अछि। सबहक समय एक नहि मानल गेल अछि। बरखासँ सरकल गाद पुरान आ नव वस्तु एक संग राखि सकैत अछि—एहि कारण स्थानगत सहअवस्थिति एकहि ऐतिहासिक घटनाक स्वतः पुष्टि नहि। उपन्यासक स्थल-परीक्षणक सूक्ष्मता अस्थिक संदर्भ मेटाओल बिना संभावित व्याख्या खोलि राखैत अछि।

अस्थिक सतह धोयबाक प्रस्ताव चिकित्सक द्वारा रोकल जाइत अछि, कारण माटि स्वयं परीक्षणक अंश भऽ सकैत अछि। एहि दृश्यकें भीजल पँजीक पन्ना बलपूर्वक साफ नहि करबाक रामानुग्रहक पुरान संयमसँ जोड़ल गेल अछि। कागज आ अस्थि, दुनू पर लागल 'मैल' सम्भावित सूचना-स्रोत अछि। भारतीय औचित्यविचारक दृष्टिसँ एहि वस्तुसभक संरक्षणक नियम ओकर प्रयोजनानुसार अछि; स्वच्छ देखेबाक इच्छा अनुसंधानक क्षति बनि सकैत अछि।

साक्ष्य क्रमांकित, अलग-अलग आवरणमे रखल आ मुद्राबन्द कएल जाइत अछि। किन्तु कथावाचक जाँचक आधिकारिक प्रतिलिपि नहि पवैत छथि। ओ

अपन दैनिकीमे पाँच सीमित पाँति रखैत छथि: जल घटल, टोलाक निकट अस्थि, मानव-अस्थिक सम्भावना, अज्ञात पहिचान आ परीक्षण शेष। एहि अभिलेखमे फुलझरी अथवा जगोसरक नाम नहि जोडल गेल अछि। कथा एही लघु सूची द्वारा कल्पनासँ अलग ज्ञानक स्वाभिमान प्रदर्शित करैत अछि।

गाममे अस्थि लेल २००८क बाढ़ि, पुरान श्मशान आ भूकम्पक भिन्न कथा फैलैत अछि। दू वृद्ध श्मशानक दाबी नकरैत छथि, मुदा एहिसँ अस्थि कतयसँ आयल, से स्वतः सिद्ध नहि होइत। मौखिक विरोध, स्थल-अवशेष आ नक्शाक जानकारी अलग-अलग प्रमाण-माध्यम अछि। नव्य न्यायपरक विश्लेषणमे एक अनुमानक विरोध स्वतः दोसर अनुमानक पुष्टि नहि। लेखक ग्रामीण अफवाहकें लोकस्मृतिक सामाजिक प्रक्रिया रूपमे रखैत छथि, निर्णायक घटना-वृत्तान्त रूपमे नहि।

अनुराधाक प्रश्न फोनमे प्रतीक्षा करैत अछि। रामानुग्रह 'हँ', 'नहि' आ 'एखन प्रमाण अपर्याप्त' लिखबाक विकल्प देखैत छथि, मुदा कोनो उत्तर नहि पठबैत। एतय हुनकर मौन दोसर स्वर-सन्देशक नैतिक अपेक्षाक पाछाँ पढल जा सकैत अछि। ई मौन अपराध-स्वीकार नहि, मुदा सम्पूर्णतः निर्दोष तटस्थता सेहो अपने नहि ठहरैत: पारिवारिक संवादक उत्तरदायित्व प्रमाणक सावधानीसँ अलग प्रश्न अछि। एहि द्वैतक कारण चरित्र एकरेखीय नैतिक प्रतीक नहि बनैत।

अध्यायक समापनमे 'अस्थिक ठामक पुष्टि पुरान नक्शासँ पूर्ण नहि, आंशिक' लिखि खाली स्थान छोड़ल जाइत अछि। उपन्यास एतय रिक्तिकें आलस्य नहि, भविष्यक परीक्षणक लेल सुरक्षित अवकाश बनबैत अछि। हड्डी पर नाम नहि रहैत; ओकर स्थान, माटि आ आसपासक वस्तु मिलला पर प्रश्नक आकार बदलि सकैत अछि। एहि अन्तिम विचारसँ वस्तुक अनाम उपस्थिति सामाजिक रूपसँ मेटायल नामक अन्वेषणक संग जुड़ैत अछि, मुदा ओकर समानता सिद्ध परिचय नहि बनैत।

तीससम अध्यायक कलात्मक शक्ति विवरणक मितव्ययी अनिश्चितता,
बहुकालीन नक्शाक तुलना आ मानवीय अधीरताक सम्मुख विधिक संयम
अछि। सम्भावित सीमा ई जे पुलिस आ चिकित्सकक प्रक्रियाक सूक्ष्म विवरण
कथात्मक भावोद्रेककें थामि दैत अछि; तथापि एहि ठहराव बिना पंजीक
घिसल पाँति आ अस्थिक बाँचल चिह्नक बीच लेखकक मुख्य नैतिक भेद
अविश्वसनीय भऽ जाएत।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय २६-३०

कोसी — ४ • अनुराधाक स्वर-सन्देश एक • देह आ जाति • स्वर-सन्देश दुइ • हड्डी

छब्बीसमसँ तीससम धरि उपन्यास पाँच पृथक कथन-व्यवस्थाकें एकसाथ चलबैत अछि: नदीक विरामहीन प्रथमपुरुष आत्मवाणी, दिल्लीसँ पठाओल पहिल रात्रिक स्वर-सन्देश, रामानुग्रहक वैचारिक अभिलेख-पठन, दोसर नैतिक प्रश्नपूर्ण स्वर-सन्देश आ अस्थि-स्थलक प्रक्रियात्मक गवाही। ई केवल दृष्टिबिन्दुक परिवर्तन नहि, ज्ञान ककरा कोन माध्यमसँ भेटि सकैत अछि तकर तुलनात्मक परीक्षण अछि।

‘कोसी — ४’मे अस्थिक उज्जर टुकड़ा प्राकृतिक पदार्थक एक रूप अछि; ‘हड्डी’मे ओही प्रकारक वस्तु अधिकारी, चिकित्सक, स्थल-रेखा, साक्षी आ सम्भावित प्रयोगशाला-परीक्षणक द्वारा जाँचक विषय बनैत अछि। एक दिशामे समय परतदार आ अविभाज्य, दोसर दिशामे तिथि आ वस्तु-क्रम विभाजित अछि। एहि द्वैध प्रस्तुति मे नदीक काव्यात्मक स्वर मानव-विधिक प्रमाणक स्थान नहि लैत, ओकर भौतिक कठिनाइ बुझबैत अछि।

अध्याय २७ आ २९क दुनू स्वर-सन्देशक क्रममे अनुराधाक चरित्र विकसित होइत अछि। पहिलमे सुरक्षित घर, स्वास्थ्य, पँजी सुखेनाइ आ चिकित्सालयक ड्यूटीक अनुभव मुखर अछि; दोसरमे परिवारक मेटायल स्त्री-पाँतिक प्रश्न। पहिल सन्देशक अन्तिम स्थगन दोसरमे प्रश्नक प्रत्यक्ष उद्घोष बनैत अछि। एहि विकासकें आकस्मिक विद्रोह कहब अनुचित होयत: दुनू संदेशमे बाबा लेल औषधि आ भोजनक स्नेह उपस्थित अछि।

अध्याय २७क वृद्धाक उमेर आ अस्पतालक अभिलेख, अध्याय २८क वंश-पँजी आ देहक अव्यक्त अनुभव, अध्याय २९क रोगिणीक गोपनीयता आ अध्याय

३०क अनाम अस्थि—चारू मानवीय देहक अलग-अलग अभिलेखीय स्थिति अछि। नाम देहकें पूर्णतः धारण नहि करैत, तथापि नामक अनुपस्थिति वा त्रुटि जीवनक व्यवहारपर असर दैत अछि। ई द्वैत पुस्तकक मूल सांकेतिक क्षेत्र विस्तार करैत अछि।

‘देह आ जाति’मे विवाह-अधिकारक सामाजिक व्यवस्था केन्द्रीय अछि; ‘स्वर-सन्देश दुइ’मे अनुराधा अपन सम्बन्ध चुनबाक नैतिक अधिकारक प्रश्नकें परिवारक भीतर अनैत अछि। एहि दू अध्यायक सान्निध्यमे परम्परागत वंश-विधि आ व्यक्तिक स्वायत्तता प्रत्यक्ष विरोध रूपमे उठैत अछि। तथापि अनुराधा पुरान अभिलेख नष्ट करबाक नहि, सत्यापित पाँति, मेटेबाक हाथ आ प्रमाणक सीमा जनबाक माँग करैत अछि। तें नव मूल्य केवल अतीत-विच्छेद नहि, अतीतक आलोचनात्मक पुनर्पठन अछि।

पच्चीसम ‘चुप्पी’क अनाम स्त्रीक इन्द्रिय-अनुभव अट्टाइसम अध्यायक वैचारिक तर्कक अन्तर्लक्षित आधार अछि। पच्चीसम अध्याय अनुभवकें बोलिते बिना उपलब्ध करैत अछि; अट्टाइसम बतबैत अछि जे देहक ओहि अनुभवक लेल पँजीमे कोष्ट नहि; उनतीसममे अनुराधा थोपल चुप्पीक विरोध करैत अछि। मुदा एहि अनुक्रमसँ पच्चीसम अध्यायक अनाम स्त्रीक पहिचान फुलझरी सिद्ध नहि होइत। कथा जानि-बुझि कऽ एहि पहिचानक रिक्ति सुरक्षित रखैत अछि।

साक्षीक चारि पारम्परिक श्रेणीसँ आगाँ ई बैच नव माध्यम खोलैत अछि: चिकित्सालयक हस्तान्तरण-पत्र, फोनपर श्रव्य सन्देश, दूरसँ खींचल छायाचित्र, माटिक नमुना आ भिन्न समयक नक्शा। प्रत्येक माध्यम अपना प्रकारक त्रुटि राखैत अछि। स्वर-सन्देशमे शब्द अस्फुट भऽ सकैत अछि; फोटोमे अक्षर अस्पष्ट रहि सकैत; नक्शामे माप भिन्न रहि सकैत; अस्थिक स्थलक माटि अनेक कालक भऽ सकैत अछि। प्रमाणक आलोचनात्मक उपयोग माध्यमक सीमाक पहिचानसँ शुरू होइत अछि।

नव्य न्यायपरक विचारमे प्रत्यक्षसँ भेटल वस्तु, लिखित पाँतिक शब्द-साक्ष्य, मौखिक साक्षीक कथन आ विभिन्न नक्शासँ कएल अनुमान अलग स्तरपर राखब चाही। तीससम अध्यायक अस्थि-प्राप्ति फुलझरीक मृत्यु वा हिंसाक कारणक साक्षात् सिद्धि नहि। दोसर स्वर-सन्देशक 'हरिनारायण मेटौलिन कि नहि' प्रश्न सेहो हस्तलिपिक मेल आ कालगत जाँच बिना सिद्ध निष्कर्ष नहि। एहि बैचमे निर्णायक कलात्मक अनुशासन ई अछि जे कथाक तनावक बावजूद प्रमाण-सीमा भंग नहि होइत।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टिसँ दिल्लीक चिकित्सालय, कोसी क्षेत्रक २००८क राहत-परिवेश, १९३४क स्थल-स्मृति, १९५४क सर्वेक्षण आ पारम्परिक पँजी-व्यवस्था एक ऐतिहासिक काल्पनिक आख्यानक अलग रेखासभ अछि। ई रेखासभक अन्तरसँ मिथिलाक सामाजिक भूगोलक बहुविध चित्र बनैत अछि। किन्तु उपन्यासक भीतर उल्लिखित ऐतिहासिक प्रसङ्ग आ बाहरी इतिहासक स्वतंत्र प्रमाण अलग प्रश्न अछि; समीक्षा मूल पाठक रचनात्मक आयोजनकें ऐतिहासिक अभिलेखक स्वतन्त्र सत्यापन मानि नहि चलैत।

भारतीय रस-ध्वनि-विचारक आलोकमे करुणा ई पाँच अध्यायमे एके ढङ्गसँ नहि उठैत। नदीक अनाम हड्डीमे दूरीसँ जनमल करुणा, अनुराधाक बाबाक औषधिक चिन्तामे वात्सल्य, 'देह आ जाति'मे सामाजिक अपमानक स्मृतिसँ व्यथा, दोसर संदेशमे पारिवारिक जवाबदेहीक तीव्रता आ अन्तिम अध्यायमे अस्थिक अज्ञात पहिचानक अधूर आशंका—ई सभ मिलि एक मिश्रित भाव-क्षेत्र तैयार करैत अछि। करुण रसक एक सूत्र सभ आवाजकें समरूप नहि बनबैत।

शिल्पक लयमे सर्वोच्च विरोध अध्याय २६क लगभग विरामहीन नदी-वाक्य आ अध्याय २९क बारम्बार रुकैत स्वर-सन्देश बीच अछि। नदी बिना ठहरने बहैत अछि; अनुराधा थामि-थामि शब्द चुनैत अछि। अध्याय २८क व्यवस्थित विचार-गद्य आ ३०क क्रमांकित जाँच-विवरण दुनू लयक बीच पृथक

संरचना बनबैत अछि। एकहि उपन्यासमे पाँच अनुक्रमिक अध्यायक ई शैलिक अन्तर कलात्मक प्रयोगक साहस अछि; पाठकीय एकाग्रताक दृष्टिसँ अचानक परिवर्तन कठिन सेहो भऽ सकैत अछि।

एहि बैचक समेकित निष्कर्ष कोनो अपराधक समाधान नहि, बल्कि प्रश्नक मान्य आकारक परिशुद्धीकरण अछि। पँजीमे मेटायल पाँति, अनुराधाक नैतिक प्रतिप्रश्न, नदीक पदार्थगत स्मृति आ स्थलपर भेटल अस्थि परस्पर अर्थपूर्ण संगति बनबैत अछि; तथापि ई सभ मिलि विशिष्ट हत्याकर्ता, मृत व्यक्तिक पहिचान अथवा हटायल पाँतिक सम्पूर्ण पाठ प्रमाणित नहि करैत। उपन्यासक साहित्यिक सफलता एहि अपूर्णताकें कमजोर कथा नहि, उत्तरदायी ज्ञानक आधार बनायब अछि।

अध्याय ३१ — मोहनक स्वीकार

मूल उपन्यास, पृष्ठ १७८-१८२ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

एकतीसम अध्याय 'मोहनक स्वीकार' उपन्यासक अभिलेखीय नैतिकताकें परिवारक दोसर पीढ़ीमे वास्तविक उत्तरदायित्वक प्रश्न बनबैत अछि। अस्थिक स्थल देखलाक दोसर साँझ मोहन सरकारी जीप छोड़ि मोटरसाइकिल पर घर अबैत अछि; नीला प्लास्टिकक फाइल आ मोडल बाँहि सन विवरण ओकर असामान्य गम्भीरता व्यक्त करैत अछि। रामानुग्रह ओकरा कथन आ प्रमाण पृथक रखबाक शर्त कहैत छथि। एतयसँ कथा निजी अपराधबोधक अनियन्त्रित उद्गार नहि, परीक्षण योग्य स्वीकारक क्रमबद्ध विवरण बनैत अछि।

२००७क बरखासँ पहिने तटबन्धक रक्षण-काजमे माटि भराइ, बालु-बोरा, बाँस आ सुरक्षाक सामग्री स्वीकृत छल। मोहन कनिष्ठ अभियन्ताक रूपमे वास्तविक मात्रा नपवाक काज करैत छल। ओ कमी देखलक, लाल पेन्सिलसँ लिखलक, फेर सहायक अभियन्ता आ संवेदकक संग भेंटक पछाति टिप्पणी काटि प्रस्तावित मात्रा प्रमाणित कयलक। एहि क्रममे प्रमाणित तथ्य ई जे मोहन अपन कथनमे जानि-बुझि गलत मात्रा लिखबाक बात स्वीकार करैत अछि; विभागक सभ अधिकारीक व्यक्तिगत भूमिका ओहि स्वीकार मात्रसँ समान रूपेँ स्थापित नहि।

रामानुग्रह मोहनक हस्ताक्षर चिन्हैत छथि, मुदा लिखावटक पहिचान आ सामग्रीक वास्तविक मात्रा प्रमाणित होयबाक भेद दैनिकीमे दर्ज करैत छथि। मूल भण्डार-पुस्तिका, प्राप्ति-पत्र आ स्थल-अभिलेखक आवश्यकता सेहो लिखैत छथि। एतय पँजीकारक हस्ताक्षर-साक्ष्य आ अभियान्त्रिकी दस्तावेज बीच रोचक समानान्तर अछि। मोहनक कथन स्वीकार्य महत्वपूर्ण सूचना अछि; ओकर सत्यापन लेल मूल कागज आ स्वतंत्र भौतिक लेखा अलग चाही।

जमा-पच्चीमे चालीस हजार रुपैयाक धनराशि अछि, आ मोहन कहैत अछि जे संवेदकक लोक चाय-दोकानक पछिला कोठलीमे लिफाफा देने छल। ओ धन

स्वीकारि बैंकमे जमा कएलक, एहि बातक उल्लेख स्वयं करैत अछि। कथा एतय रिश्वतक नीतिगत भयावहता न्यून नहि करैत; तथापि जमा-पर्वी स्वयं भुगतान देनिहारक व्यक्तित्व वा धनक स्रोतक सम्पूर्ण स्वतंत्र सिद्धि नहि। उपन्यासक प्रमाण-विचारक ई सूक्ष्म भेद अनिवार्य अछि।

धनक किछु भाग घरक ऋण आ अनुराधाक नर्सिंग प्रवेशक शुल्कमे लगबाक स्वीकार निजी लाभ आ पारिवारिक आवश्यकताक कठिन संगति प्रस्तुत करैत अछि। एहि उपयोगसँ गलत प्रमाणन उचित नहि भऽ जाइत—रामानुग्रहक प्रतिक्रिया एहि बातकें स्पष्ट करैत अछि। तथापि परिवारक शिक्षा, करजा आ राज्य-निर्माणक भ्रष्ट व्यवहार बीच रचल आर्थिक सम्बन्ध पात्रकें एकरेखीय 'दोषी'क सरल रूपसँ बचबैत अछि। कथा साधनक अनैतिकता आ ओकर सामाजिक उपयोगक जटिलता एकसंग देखबैत अछि।

कुसहा कटानक प्रत्यक्ष कारण विषयक प्रश्न पर मोहन बतबैत अछि जे ओकर गलत मापन मूल कटान-बिन्दुसँ पृथक खण्ड पर छल, यद्यपि भुगतानक व्यवस्था सम्बद्ध छल। रामानुग्रहक दैनिकीमे तीन पृथक तथ्य रहैत अछि—अनुचित प्रमाणनक स्वीकार, अनुचित धनक स्वीकार, आ कटानक कारण-सम्बन्ध असिद्ध। एहि तेसर वाक्यकें छोड़ि सम्पूर्ण बाढ़िक उत्तरदायित्व मोहनपर डालब मूल पाठक विरुद्ध होयत। नव्य न्यायमे कारणक व्याप्ति आ मात्र कालगत अथवा संस्थागत सान्निध्यक भेद एतय अत्यन्त सुस्पष्ट अछि।

हरिनारायणक सम्भावित पाँति-मेटावन, फुलझरी आ जगेसरक प्रश्न, तथा मोहनक अभियान्त्रिकी स्वीकार—ई सभ एक ही घरक कागजमे पड़ल अछि, मुदा लेखक एकरा एक अज्ञात षड्यन्त्रक प्रमाण घोषित नहि करैत। मोहन अपन हस्ताक्षरवला फाइल चुनैत अछि आ आन प्रसङ्ग चुप रहैत अछि। कथावाचक स्वयं नोट करैत छथि जे ई स्वीकार अनुराधाक चारिमे सँ एको प्रश्नक उत्तर नहि। एहि अपूर्ण प्रत्यक्षतासँ कथा अनेक नैतिक कर्जक समानान्तर अस्तित्व देखबैत अछि।

मोहनक नीला फाइल रामानुग्रह अपन लग मूल रूपमे राखि नहि लैत छथि; छायाप्रति माँगैत छथि। संग्रह आ मूल दस्तावेजक अधिकारक ई विवेक पंजी-संरक्षणक पूर्व पद्धतिक विस्तार अछि। प्रमाण जुटायब आ ओकर स्वामित्व पर

कब्जा कऽ लेब एक बात नहि। कथा एहि निर्णयकें लघु दृश्य बनाकऽ शोध-पद्धतिक उत्तरदायित्वक संकेत दैत अछि।

अन्तिम दृश्यमे मोहन बाहर ठाढ़, अनुराधाक सन्देश फोनमे, रामानुग्रहक उत्तरक कोष्ठ फेर रिक्त अछि। दोसर पीढ़ी अपना अपराधक कागज प्रस्तुत करैत अछि, तेसर पीढ़ी पुरखा द्वारा मेटायल पाँतिक उत्तर माँगैत अछि, आ पहिल पीढ़ीक अभिलेखपाल दुनूक बीच मौन रहैत छथि। ई त्रिकोण परिवारक भीतर सत्यक अलग-अलग प्रकारक बहाव रचैत अछि। अध्यायक कलात्मक उपलब्धि स्वीकारक सीमितता आ कारण-संगतिक कठोर संरक्षण अछि; संभावित सीमा ई जे प्रक्रियात्मक संवादक सूक्ष्मता भावनात्मक विस्फोटकें जानि-बुझि स्थगित करैत अछि।

अध्याय ३२ — जकर नाम नहि

मूल उपन्यास, पृष्ठ १८३-१८६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

बत्तीसम अध्याय उपन्यासक शीर्षकगत विचारक एक निर्णायक नवल रूप प्रस्तुत करैत अछि—‘प्रति-पाँजि’। रामानुग्रह पुरान सन्दूकसँ रिक्त हरियर जिल्दवला बहि निकालैत छथि। ई मूल पँजीक नकल नहि, ओकरा नष्ट करबाक अभियान नहि; मूलमे जे दर्ज नहि भऽ सकल, ओकर स्रोत-निष्ठ प्रश्न सुरक्षित रखबाक वैकल्पिक स्थान अछि। कथाक मूल संस्थागत आलोचना एतय केवल विचार नहि रहि वस्तुगत लेखनक अभ्यास बनि जाइत अछि। पाँच आरम्भिक नियम—अनुमानकेँ तथ्य नहि लिखब, ज्ञात स्रोत संग लिखब, अनुपस्थित नाम केवल साक्ष्य सहित जोड़ब, शंका लेल रिक्त छोड़ब आ मूल पाँति नहि काटब—अध्याय ३क पँजीकारक विधिक पुनर्सृजन करैत अछि। किन्तु उद्देश्य बदलल अछि: पूर्व नियम स्थापित वंश-पाँतिक परीक्षणक लेल छल, नव नियम इतिहासमे अनुपस्थित लोकक सम्भावित स्मृतिसँ निपटबाक लेल। ई परिवर्तन परम्पराकेँ शून्य करि नहि, ओकर प्रमाण-सिद्धान्तक विस्तार करैत अछि।

श्रीधरक उत्तरवर्ती पाँति पर घर्षण आ हरिनारायणक लिखावटसँ मेल दर्ज अछि, मुदा रामानुग्रह ‘हरिनारायण मेटेलनि’ नहि लिखैत छथि। लिपिक साम्यसँ क्रियाकर्ताक प्रत्यक्ष पहिचानक निष्कर्ष सहजहि निकलैत, मुदा मूल पाठ ओकरा रोकैत अछि। अनुमानक हेतुक पर्याप्तता आ व्यक्तिक विरुद्ध कथनक प्रमाण-सीमा एहि क्षणमे खास महत्त्व रखैत अछि। न्यायसङ्गत संशय कमजोर इतिहास-लेखन नहि, जिम्मेवार लेखनक लक्षण बनैत अछि।

फुलझरीक नाम चारि प्रकारक मौखिक आ अभिलेखीय संकेतक संग जोड़ल जाइत अछि, मुदा मूल पँजीमे हुनकर अनुपस्थिति स्पष्ट रहैत अछि। जगेश्वर सदाक नाम हरवाहक कथन आ पुरान बसावट-स्मृतिक संगतिक आधारपर

लिखल अछि। विवाहक दावा केवल एक स्रोतमे प्रत्यक्ष, आनमे परोक्ष; हत्या सम्बन्धी शब्द उपलब्ध, मुदा मृतकक पहिचान सिद्ध नहि। एहि बहुस्तरीय प्रविष्टिसँ समान स्रोत-भार मानि देबाक गलतीसँ कथावाचक बचैत छथि।

अस्थिक स्थल, पुरान नक्शासँ आंशिक मेल आ पुलिसक परीक्षण पृथक पृष्ठ पबैत अछि। नामक कोष्ठ खाली राखल जाइत अछि। मोहनक नीला फाइल सेहो अलग पृष्ठ पर रहैत अछि—मापन, चालीस हजारक जमा-पच्ची, स्वीकार आ कारण-सम्बन्धक अनिश्चितता सहित। अलग-अलग सामग्रीकेँ केवल घरेलू रहस्यक आकर्षणमे एक सम्बन्ध-रेखासँ जोड़ब प्रति-पाँजिक प्रारम्भिक नियमक विरुद्ध होयत। ई संरचनात्मक पृथक्करण अध्यायक नैतिक उपलब्धि अछि।

‘जकर नाम नहि’ शीर्षकक नीचाँ स्त्री, पुरुष आ सम्भावित सन्तानक अलग-अलग पाँति बनैत अछि। सन्तानक शब्द लिखलाक बाद रामानुग्रह ओकरा ‘सम्भावना’ चिह्नित करैत छथि। एहि एक चिन्हमे अज्ञात जीवनक प्रति संवेदना आ ऐतिहासिक दावा करबाक संयम दुनू उपस्थित अछि। रिक्ति भाव-विस्फोटक स्थान नहि, अन्वेषणक खुलल परिसर बनैत अछि।

अनुराधाकेँ उत्तर देबाक कोशिश—‘तोहर प्रश्न पढ़ल अछि’—लिखि मेटा देल जाइत अछि। एहि छोट असफल पत्रव्यवहारमे लेखनीय कार्य आ मानवीय सम्बन्धक उत्तरदायित्वक अन्तर प्रकट अछि। रामानुग्रह भविष्यक लेल प्रश्नक साक्ष्य बना सकैत छथि, मुदा वर्तमानमे जीवित नातिनकेँ तत्क्षण उत्तर देबाक कठिनाई शेष अछि। प्रति-पाँजि उपलब्ध भेला मात्रसँ संवादक समस्या समाप्त नहि होइत।

अन्तिम कथनमे मूल पाँजी आ प्रति-पाँजि एक घरमे रहितो एकहि सत्यक एकमात्र अधिकारी नहि रहल। ई रूपक संस्थागत बहुलताक एक आलोचनात्मक प्रस्ताव अछि। मूलक प्रमाणक मान समाप्त नहि, मुदा ओकर रिक्तिकेँ भीतरी अन्तिम सत्य मानबाक एकाधिकार टूटैत अछि। अध्यायक प्रभाव ‘अज्ञात’क प्रतीक बनबामे नहि, प्रश्नकेँ स्रोतक संग टिकाऊ लेखा

बनायबामे अछि। संभावित शिल्पगत सीमा ई जे नियमक विस्तृत सूची कथा-
विन्यासक गति धीम करैत अछि; मुदा उपन्यासक आन्तरिक विधिसँ ई
धीमापन सुसंगत अछि।

अध्याय ३३ — मस्कट

मूल उपन्यास, पृष्ठ १८७-१९१ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

तेतीसम अध्याय 'मस्कट'मे अनुराधाक प्रवासक निर्णय रोजगारक अमूर्त आकांक्षासँ नहि, दिल्लीक वेतन-पर्ची, किराया आ नर्सिंग ऋणक किस्तक गणनासँ आरम्भ होइत अछि। एहि आर्थिक गणनामे पात्रक स्वतन्त्रता आ बाध्यता एक संग देखाइत अछि। ओ परदेस लेल केवल रोमानी मुक्ति नहि खोजैत, दीर्घकालीन वित्तीय उत्तरदायित्व निर्वाह करबाक साधन खोजैत अछि। प्रवासक कथा एही कारण ठोस घरेलू अर्थव्यवस्था पर टिकैत अछि। केरलक सहकर्मी रेशमा द्वारा देल सलाह—वेतन सुनबाक योग्य, मुदा कागज पढ़ने बिना यात्रा करबाक योग्य नहि—अध्यायक प्रमाण-अनुशासन स्थापित करैत अछि। अनुराधा कार्यालयमे पहिने शुल्क पुछैत अछि, तकर बाद अस्पतालक नाम, नियुक्ति-पत्र आ अनुबन्ध। स्रोतमे अरबी-अंग्रेजी पत्र आ काजक शर्तक उल्लेख अछि। एहि प्रसङ्गकेँ स्वतः सुरक्षित भर्ती-व्यवस्था अथवा निश्चित धोखाधडीक प्रमाण नहि मानल जाए; पात्र सुरक्षा सुनिश्चित करबाक लेल निरन्तर सत्यापन करैत अछि।

पासपोर्टमे नाम, पिता, जन्मतिथि आ स्थायी पता एक छोट दस्तावेजमे समाहित अछि। रामानुग्रहक विशाल पंजीमे जे बहुविस्तृत वंश-पहिचान छल, ओ राज्यक यात्रा-अभिलेखमे सीमित कोष्ठ बनैत अछि। एहि भिन्न प्रयोजनक कागजसभक तुलना लेखकक प्रमुख शिल्पगत साधन अछि। पासपोर्ट प्रस्थानक सुविधा दैत अछि, मुदा व्यक्ति आ परिवारक सम्पूर्ण कथा नहि।

विदेशी रोजगारक चिकित्सकीय जाँचमे अनुराधा स्वयं 'विदेश जाएब योग्य देह' बनैत अछि—रक्त, छाती-किरणचित्र, दृष्टि, वजन आ रक्तचापक क्रमांकित परीक्षण। दिल्लीक अस्पतालमे ओ रोगीक कलाई-पट्टी जाँचैत छल; एतय अपन शीशीक क्रमांक याद रखैत अछि। चिकित्साकर्ता आ परीक्षणाधीन देहक भूमिकाक ई उलटफेर अध्याय २७क अनुभवकेँ नव अर्थ दैत अछि।

‘फिट’ लिखल प्रतिवेदन शरीरक सम्पूर्णता नहि, रोजगारक निश्चित प्रशासनिक आवश्यकता लेल बनाओल निर्णय अछि।

शुल्क-रसीदक अधूर रकम पर अनुराधा पृथक कागज माँगैत अछि; भर्ती-अभिकर्ताक पञ्जीकरण संख्या, अवधि आ पता मिलबैत अछि; अनुबन्धक अस्पष्ट पासपोर्ट-धारण प्रावधान संशोधित करबबैत अछि। एहि घटनाक्रममे प्रमाण-जाँच पँजीकारक विरासत मात्र नहि, स्त्रीक आर्थिक स्वायत्तताक व्यावहारिक उपकरण बनैत अछि। लेखक चेतना आ कर्म बीचक सम्बन्ध वस्तुक क्रिया द्वारा दिखबैत छथि—फोटो लेब, प्रति राखब, प्रश्न पुछब, संशोधन माँगब।

मस्कट जाएबाक वस्तु-सूचीमे कागज, जूता, औषधि आ फोनक चार्जर रखल अछि, मुदा घरक माटि नहि। परदेस-जात्राक परम्परागत भाव-प्रतीक लेल पात्रक असहमति ओकरा आधुनिकता प्रति सरल मोहग्रस्त नहि बनबैत; ओ अपन तात्कालिक जीवनक उपयोगी वस्तु चुनैत अछि। घरक गन्ध संग नहि लऽ जा सकबाक अनुभूति पछिला ‘कोसी’ खण्डमे फेर आबैत अछि। वस्तु-प्रतीकक एहि अनुक्रममे अनुपस्थित माटि स्वयं स्मृतिक भिन्न रूप सुझबैत अछि।

गाममे दादा पासपोर्ट पढैत छथि, अनुराधा दू वर्षक अनुबन्ध बतबैत अछि, मुदा पुरान प्रश्नसभ ओहि दिन नहि उठबैत अछि। विदेशक कागज मेज पर आ पुरान पँजी सन्दूकमे—दुनू बीच केवल चारि हाथक दूरी। ई माप भौतिक रूपसँ छोट, मुदा समय, जीविका आ पारिवारिक इतिहासक प्रश्नक दृष्टिसँ पैघ अछि। लेखक एहि दृश्यकेँ भावुक भाषण द्वारा नहि, चीजक स्थान द्वारा गढ़ैत छथि।

विमानतल पर अतिरिक्त वजनक कारण पुस्तक आ साड़ी निकालल जाइत अछि, मुदा कागजक फोल्डर हाथ-सामानमे रहैत अछि। आगमनपर चालक पासपोर्ट नहि माँगैत, केवल नाम मिलबैत अछि। एहि दृश्यसभमे परिचयक वैधता अलग प्रशासनिक सीमा पार करैत अछि। दिल्ली आ मस्कटक समयक

अन्तर फोन स्वयं बदलि दैत अछि; कथाकाल एकहि पात्रक जीवनमे अनेक घड़ी बनि जाइत अछि।

अन्तिम स्वर-सन्देशमे अनुराधा केवल पहुँचबाक सूचना आ 'कागज सभ हमर लग अछि' कहैत अछि; दादासँ पुछबाक तेसर वाक्य रोकि दैत अछि। एहि मौनमे प्रथम दू स्वर-सन्देशक संघर्षक निरन्तरता अछि। प्रवास ओकर प्रश्न मेटबैत नहि, केवल उत्तरक समय आ माध्यम बदलैत अछि। अध्यायक महत्त्व आर्थिक अनिवार्यता, सूचना-सुरक्षा आ भावनात्मक अनिर्णयकैँ एक प्रवास-कथामे जोड़ब अछि; तथापि लम्बा प्रक्रियागत विवरण पाठकक धैर्य माँगैत अछि।

अध्याय ३४ — कोसी — ५

मूल उपन्यास, पृष्ठ १९२-१९४ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

चौतीसम 'कोसी — ५'मे नदी पहिल बेर दीर्घकालीन श्रम-प्रवासक असरक स्वर ग्रहण करैत अछि। जलक कात पयर घटैत अछि, नावक भार हलुक होइत अछि, घरक सन्दूक बढैत अछि आ कुञ्जी पड़ोसीक लग पहुँचैत अछि। बाढिक एकाएक विनाशक अपेक्षा एहि परिवर्तनक गति धीम अछि। नदी ओकरा 'परदेस' नहि कहैत, पयरक कमी आ घरक बदलैत वस्तुसभ द्वारा चिन्हैत अछि। एहि सीमित प्राकृतिक दृष्टिक कारण मानवक आर्थिक प्रवाहक चित्र अनोखा बनैत अछि।

दूर देशक श्रमसँ उत्पन्न धन बैंकक अंक बनि विद्यालय शुल्क, औषधि, टीनक छत, मोटर-पम्प आ विवाहक खर्चमे रूपान्तरित होइत अछि। नदी रुपैयाक अदृश्य तार नहि देखैत, धरती पर ओकर वस्तुगत परिणाम देखैत अछि। एहि कारण आर्थिक प्रवासनक वर्णन प्रत्यक्ष उपयोगी वस्तुक सूचीमे रूपान्तरित अछि। घरक सुधरल भौतिक स्थिति आ कम भेल भीतरी आवाजक विरोध अध्यायक सामाजिक दर्द प्रकट करैत अछि।

नदीक कथनमे घरेलू श्रमक असमान बँटवारा विशेष स्थान पवैत अछि। बाहर गेल सदस्यक स्थानपर घरमे बचल स्त्री आ वृद्धक काज बढैत अछि, खेतक निराइ आ मरम्मतक लेल बाहरक लोक अबैत अछि। ई विवरण प्रवासक लाभ-हानि दुहरी लेखा प्रस्तुत करैत अछि। प्रवास आर्थिक साधन अनैत अछि, मुदा अनुपस्थित व्यक्ति द्वारा करैत घरेलू आ सम्बन्धगत काज स्वतः नहि अनैत।

घाटक खाली सीट, फोनक छोट चमक आ दूर देशक समयसँ जागल परिवार— ई तीन दृश्य प्रवासक अलग-अलग प्रमाण अछि। नदी ओकरा ध्वनि सुनबाक दावा नहि करैत; फोनक प्रकाश आ झुकल मुख देखैत अछि। नदीक आत्मवाणी अपन भौतिक ज्ञान-सीमा बनौने रखैत अछि, यद्यपि लेखक ओकर

माध्यमसँ पैघ समाजशास्त्रीय अर्थ खोलैत छथि। एतय मानवीकरण आ आत्म-सीमांकनक संघर्ष पाठक लेल विचारक स्थल बनैत अछि।

‘स्थायी पता’वला घर वर्षक अधिकांश दिन बन्द रहब, एहि विडम्बना द्वारा राज्यक दस्तावेज आ देहक रोजगार-भूगोलक अन्तर चित्रित अछि। पँजीमे वंश-पाँति चलैत रहैत अछि, मुदा पाँतिक लोक अलग-अलग देशक समयमे जीबैत अछि। एहि दृश्यक समानान्तर भविष्यक इतिहास-लेखनमे निवासक अर्थक जटिलता उद्घाटित होइत अछि। मूल ग्राम भौगोलिक जन्मस्थल रहितो दैनन्दिन जीवनक पूर्ण स्थान नहि रहि जाइत अछि।

अनुराधाक मस्कट पहुँचलाक रोकल तेसर वाक्य नदीक एहि खण्डमे रूपक रूपेँ घुसैत अछि। फोन खोलि पुनः जेबमे राखि देनिहार बूढ़ पिता आ दू वाक्य पठबिते तेसर रोकि देनिहार दूरस्थ स्त्रीक दृश्य एक प्रकारक संवाद-अपूर्णताक रूपक बनैत अछि। ‘कोसी — ४’मे नदी नामक अर्थ नहि जानैत छल; एतय ओ मौनक अर्थ नहि पुछैत। एहि निषेधसँ पाठकक व्याख्यात्मक सक्रियता बढैत अछि।

विरामहीन प्रवाहक लय एतय नदीक जल जतेक नहि, जन-गमन, धन-प्रवाह, फोन आ प्रतीक्षाक फैलाव प्रतिध्वनित करैत अछि। ‘जाइत छथि’, ‘अबैत अछि’, ‘रहैत अछि’ आ ‘घटैत अछि’क आवृत्ति सामाजिक समयक चक्र बनबैत अछि। एहि लम्बा वाक्यक कलात्मक लाभ सामूहिक अनुभवक वेग अछि; सीमा ई जे असंख्य वस्तुसूची कथानकक विशिष्ट पात्रसभकेँ किछु देरि पाछाँ करैत अछि।

अध्यायक अन्तमे टीनपर पडल बरखाक आवाज घरमे बचल लोक सुनैत अछि; प्रवासी ओहि घरक बरखा प्रत्यक्ष नहि देखैत। आर्थिक श्रमक उत्पाद आ भावानुभवक असमान स्थानिकता एहि दृश्यमे मार्मिक ढङ्गसँ भेटैत अछि। ई नदीक आत्मवाणी श्रम-प्रवासकेँ केवल पलायन वा सफलता कहि समाप्त नहि करैत; भौतिक समृद्धि आ सम्बन्धक रिक्तक संगहि उपस्थिति देखबैत अछि।

अध्याय ३५ — हम सभ

मूल उपन्यास, पृष्ठ १९५-२०० · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

पैंतीसम अध्याय 'हम सभ' एकल 'हम'क स्थानपर अनेक अनुभवक सामूहिक सर्वनामक प्रयोग करैत अछि। कथावाचकक पहिचान कोनो एक प्रवासी नहि; पंजाबक खेत, दिल्लीक निर्माण-स्थल, सूरतक करघा, होटल, अस्पताल, घरेलू सेवा आ गाममे बचल परिवार सभ अपन-अपन आवाज एक बहुवचनमे जोड़ैत अछि। एहि बहुवचनक भीतर भिन्न पेशा, दूरी, अवसर आ असुरक्षा सुरक्षित अछि। शीर्षकक 'हम' एकता चाहैत अछि, मुदा पाठ सजीव अन्तरसभकेँ नष्ट नहि करैत।

प्रवासक आरम्भ एक महत्त्वपूर्ण घरेलू सूत्रसँ होइत अछि—रोजगारक समाचार, ठेकेदारक परिचय, बहनोइक वचन, टिकट अथवा छोट कागज पर फोन-संख्या। एहि लघु वस्तुसभसँ प्रवासक अनौपचारिक सम्बन्ध-जाल बनैत अछि। राज्यक योजना अथवा पैघ आर्थिक सिद्धान्तक उल्लेख बिना कथा श्रमक गतिशीलता कोना बनैत अछि से देखबैत अछि। घरसँ देल सत्तू, चूड़ा, कम्बल आ गमछा पहिचानक भौतिक निरन्तरता बनैत अछि।

अध्याय केवल बाहर गेल लोकक कथा नहि। गाममे बचल स्त्री, वृद्ध, बालक आ अशक्त लोकक बढल घरेलू श्रम विस्तारसँ लिखल अछि। खेती, विद्यालय, औषधि, बैंक, राशन, विवाह, मरम्मत आ फोनक प्रतीक्षा—ई सभ अनुपस्थित श्रमिकक परिणामस्वरूप नव बँटवारा पबैत अछि। 'घरमे रहनिहार'क निष्क्रिय पहिचान लेखक स्वयं अस्वीकार करैत छथि। एहि कारण सामूहिक 'हम'मे प्रवासीक परिवारक अदृश्य श्रम सेहो शामिल अछि।

पत्रसँ फोन धरि माध्यमक परिवर्तन संवादकेँ शीघ्र बनबैत अछि, मुदा भावक सम्पूर्णता नहि। 'हम कुशल छी'क छोट वाक्य दुनू कातक आधा सत्य सम्हारैत अछि। प्रवासी अपन कठिनाइ लुकबैत, घरक लोक छतक चुबन आ उधारक औषधि लुकबैत अछि। एतय मौनक अर्थ अध्याय २९क थोपल चुप्पीसँ

भिन्न अछि: किछु वाक्य परस्पर चिन्ता घटेबाक प्रयासमे दबाओल जाइत अछि। तथापि एहि सुरक्षात्मक मौनक आर्थिक आ भावनात्मक मूल्य कम नहि।

पठाओल धनसँ घर बनैत अछि, पढाइ सम्भव होइत अछि, ऋण उतरैत अछि आ उपचार चलैत अछि; मुदा बालकक पहिल पयर देखबाक समय, रोगाक्रान्त बूढक संग बैसब आ जन्मोत्सवक ठाम उपस्थित रहबाक अवसर वापस नहि अबैत। ई द्वितीय लेखा उपन्यासक अभिलेख-समस्या पुनः खोलैत अछि। बैंक रुपैया दर्ज करैत अछि, मुदा अनुपस्थित साँझ आ प्रतीक्षा-बेला लेल ओकरा लग कोष्ट नहि।

स्थायी पताक कागज आ दूर देशमे वास्तविक देहक काज बीचक भेद चौतीसम अध्यायक नदी-वाणी सँ सीधे जुड़ैत अछि। गामक मूल, विद्यालयक प्रमाणपत्र, मतदाता-पञ्जी, राशन-पत्र, भूमि-अभिलेख व्यक्ति केँ एक ठाम चिन्हैत अछि; नौकरीक अनुबन्ध आ पासपोर्ट ओकर दैनिक समय दोसर ठाम बाँटैत अछि। अतः पँजीक एक पाँति व्यक्ति-वृत्तक सम्पूर्ण भूगोल नहि दऽ सकैत। एहि समानान्तर संस्थागत पाठमे मिथिलाक बाहर प्रवास सेहो स्थानीय इतिहासक अविभाज्य अंश बनैत अछि।

लेखक प्रवासनकेँ एकरेखीय दुःखक रूपमे नहि गढ़ैत छथि। किछु स्त्री पहिल बेर अपन बैंक खाता सँभालैत अछि; ऋण उतरैत अछि; घरमे शिक्षा आ उपचारक अवसर बढ़ैत अछि। दोसरा दिस विवाहक दूरी, बालकक संकोच, वृद्धक एकसरापन, बन्द घर आ खेतक बदलैत उपयोगक प्रभाव अछि। लाभ आ क्षति एकहि वित्तीय पर्चीमे नहि समाएब अध्यायक मूल सामाजिक निष्कर्ष अछि।

श्रमिकक साझी कोठलीमे आठ जन लेल चारि पलंग, दिन-राति पालीक कारण एकहि बिछ्छाओनक बारम्बार बदलैत देह, आ वेतन भेटिते घरक रकम अलग राखबाक क्रम प्रवासक देहगत व्यवस्था खोलैत अछि। शहरक आर्थिक समय आ गामक ऋतु-आधारित समयक विरोध एहि विवरणमे ठोस अछि। बाहरी

स्थानक नागरिकता आ घरेलू सम्बन्धक दोहरा दबाव व्यक्तिक शरीर, निद्रा, भाषा आ भोजनक समय बदलैत अछि।

सामा-चकेबा, छठि, अरिपन आ विवाहक गीत फोनक पर्दा पर पहुँचैत अछि, मुदा आँगनक गन्ध आ माटिक स्पर्श नहि। एहि द्वैध अनुभवसँ सांस्कृतिक निरन्तरता आ संवेदनात्मक क्षति एकसाथ उपस्थित अछि। लेखक एहि स्मृतिकेँ केवल अपरिवर्तित परम्पराक प्रशस्ति नहि करैत; शहरसँ घुलल लोकक बोलि आ समयक बदलल ढङ्गक उल्लेख सेहो करैत छथि। जीवनक गतिक सहगमनमे संस्कृति स्थिर वस्तु नहि।

विवाहक तिथि रोजगारक छुट्टी आ टिकटसँ जुडैत अछि; कखनो वर विवाहसँ दू दिन पहिने अबैत, चारि दिन पाछाँ घुरैत अछि। एहि दृश्यसँ पँजीक परम्परागत विवाह-विधि आ आधुनिक श्रम-अनुबन्धक समय एक जगह मिलैत अछि। विवाहक सामाजिक स्वीकृति केवल मूल-ग्रामक प्रश्न नहि रहैत, अनुपस्थित दम्पतीक नव गृहस्थी बनबैत अछि। ई कथा उपन्यासक पुरान विवाह-अधिकारक प्रश्नकेँ परोक्ष नव सन्दर्भ दैत अछि।

अन्तिम पाँतिसभमे 'हम सभ'क नाम केवल बाहर गेल लोक नहि, प्रतीक्षा करनिहार, रुपैया लेनिहार, कुंजी रखनिहार, घुरि आबि फेर जाएनिहार सभ अछि। ई सामूहिकता पुस्तकक मुख्य प्रमाण-विचारक मानवीय विस्तार अछि। पँजी जन्म आ विवाहक पाँति लिखि सकैत अछि, मुदा दूरीक वर्ष, पिताक स्क्रीनपर पहिल दर्शन आ प्रवासक रात्रिक एकाकीपन नहि। अध्यायक सौन्दर्य एक बहुवचनक भीतर अनुभवक अनेक लय रखब अछि; सीमा ई जे दीर्घ सूची आ समान वाक्य-विन्यास किछु पाठक लेल पुनरावृत्तिपूर्ण लगि सकैत अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय ३१-३५

मोहनक स्वीकार • जकर नाम नहि • मस्कट • कोसी — ५ • हम सभ

एकतीसमसँ पैतीसम धरि पाँच अध्यायक स्वर-क्रम घरक नीला विभागीय फाइलसँ शुरू भऽ 'प्रति-पाँजि'क नवल हरियर बहि, प्रवासी नातिनक दस्तावेज, नदीक श्रम-प्रवास दृष्टि आ अन्ततः सामूहिक 'हम सभ' धरि पहुँचैत अछि। प्रत्येक अध्याय कागजक भिन्न उपयोग सामने अनैत अछि— भ्रमित करबाक, सत्यापन करबाक, प्रश्न बचायब, रोजगार सुनिश्चित करबाक अथवा प्रवासक स्थायी पता लिखबाक। एकहि वस्तु 'अभिलेख' सभ ठाम समान नैतिक भूमिका नहि निभबैत।

'मोहनक स्वीकार'मे लिखल मात्रा वास्तविक सामग्री सँ मेल नहि खाइत, 'जकर नाम नहि'मे मूल पँजीक रिक्ति वास्तविक सम्भावित जीवनसँ मेल नहि खाइत। पहिल प्रसङ्गमे लिखल अतिरिक्त सूचना आ दोसरमे मेटायल सूचना—दुनू अलग अभिलेखीय दोषक सम्भावना अछि। मोहन अपन लिखित गलत प्रमाणन स्वीकार करैत अछि; हरिनारायणक हस्तक्षेपक पूरा क्रियाकर्ता-पहिचान एखन स्रोतक भीतर निश्चित नहि। समान नैतिक प्रतीक बनबैत तथ्यगत भेद मिटेनाइ समीक्षाक उद्देश्य नहि।

प्रति-पाँजिक पाँच नियम मोहनक फाइल पढ़बाक पद्धति सेहो बनैत अछि। नकद स्वीकार आ असत्य मापन पृथक दर्ज होइत अछि; कुसहा कटानक कारण-सम्बन्ध सिद्ध नहि घोषित होइत। रामानुग्रह अपन वंशक सम्भावित घर्षणक प्रसङ्गमे सेहो मूल लिपिक साम्यकें निश्चित व्यक्ति-दोष नहि लिखैत छथि। ई समानान्तर संयम उपन्यासक नव्य न्यायपरक सुसंगति अछि: दू स्रोतक मिलन निष्कर्षक प्रेरणा भऽ सकैत अछि, अपने प्रमाण नहि।

अनुराधाक मस्कट-प्रवासमे कागज गलत प्रयोगक मात्र उपकरण नहि, स्त्रीक सुरक्षा आ अधिकारक साधन बनैत अछि। पासपोर्ट अपन संग राखबाक

संशोधित शर्त, शुल्कक पृथक रसीद, पञ्जीकरणक जाँच आ चिकित्सकीय प्रतिवेदनक प्रति एहि बातक ठोस उदाहरण अछि। बत्तीसम अध्यायक प्रति-पाँजि ऐतिहासिक अनुपस्थितिक प्रतिकार करैत अछि; तेतीसमक दस्तावेज भविष्यक सम्भावित शोषणसँ रक्षा करबाक प्रयास करैत अछि। दुनू लिखित क्रियाक समय-दिशा पृथक अछि।

‘मस्कट’मे अनुराधाक रोकल तेसर वाक्य चौतीसम ‘कोसी — ५’क बूढ़ पिता द्वारा फोन खोलि फेर बन्द कयल दृश्यसँ भावात्मक संगति रखैत अछि। एहि समानान्तरतामे नदी सम्बन्धक अर्थ नहि जनबाक घोषणा करैत अछि, मुदा पाठक दूर देशक समय आ घरक प्रतीक्षाक असर स्पष्ट बुझैत अछि। अनुचित होयत जे एहि काव्यात्मक साम्यसँ तत्काल कथानकक अनकहल उत्तर अनुमानित कएल जाए।

‘कोसी — ५’मे प्रवास नदीक बाहरी दृष्टिसँ गामक बन्द घर, नावक घटल भार आ टीनक छत बनि प्रकट होइत अछि। ‘हम सभ’मे वएह परिवर्तन भीतरक श्रमिक आ परिवारक आवाजसँ प्रकट अछि। पहिलमे प्रकृतिक भौतिक संकेत, दोसरमे अनुभवक बहुवचन; दुनू एक-दोसराक प्रतिनिधि नहि, पूरक रचना-विधान अछि। एहि युग्मसँ उपन्यास अपन पर्यावरणीय आ सामाजिक कथनक बीच सफल सेतु बनबैत अछि।

अनुराधाक व्यक्तिगत प्रवास व्यावसायिक नर्सिंग रोजगारक अनुबन्ध द्वारा संचालित अछि; पैतीसम अध्यायमे खेत-मजूर, निर्माण-कर्मी, घरेलू श्रमिक आ आन लोकक असंख्य स्थिति अछि। एकर तुलना करैत भिन्न वर्ग, अवसर, ऋण-भार आ नियन्त्रणक स्वरूप बचाकऽ रखब आवश्यक अछि। दिल्लीसँ मस्कट जाएब आ श्रमिकक पंजाब जाएब एकहि प्रकारक अनुभव नहि, तथापि घरसँ दूरी आ दोहरा समयक अनेक साम्य सम्भव अछि।

‘हम सभ’क बहुवचन पँजीक पुरुष-वशांशकें एक व्यापक सामाजिक समुदायसँ प्रतिस्थापित करबाक भाषिक प्रस्ताव जेकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। मुदा पात्र स्वयं दुनूक अन्तर बतबैत अछि: पँजी वंश लिखैत अछि, दूरीक वर्ष नहि। ई

प्रतिपादन अभिलेखक उपयोगिता अस्वीकार करैत नहि, ओकर विषय-सीमा स्पष्ट करैत अछि। मूल वंश-पाँजि आ प्रति-पाँजि बीचक सम्बन्ध एहि सामाजिक बहुवचनमे विस्तार पबैत अछि।

भारतीय ध्वनि-विचारसँ देखल जाए तँ बन्द दुआरक कुंजी, आधा लिखल पत्र, मुडल बैंक-पर्ची, विमानतलक मोहर आ मोबाइलक रोकल तेसर वाक्य नित्य-जीवनक वस्तु रहितो गहिर सामाजिक विच्छोहक अर्थ उत्पन्न करैत अछि। करुणा एहि संग्रहमे सर्वत्र एक समान नहि—कखनो स्वीकारक लज्जा, कखनो मेटायल नामक पीडा, कखनो स्नेहयुक्त प्रवास, कखनो प्रतीक्षाक थकान। एहि अनेक भावक अन्तर सुरक्षित रहला परे समेकित प्रभाव उत्पन्न होइत अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे २००७क विभागीय रक्षण-अभिलेख, २००८क बाढ़ि-पछातिक जाँच, मिथिलाक वंश-पँजी, दिल्लीक चिकित्सालय आ ओमानक रोजगार-अनुबन्ध एक जीवन-जालक भिन्न संस्था बनि सामने अबैत अछि। कथा एहि संस्थासभक अन्तरसम्बन्ध कल्पित पात्रक जीवनक माध्यमसँ अन्वेषित करैत अछि; ओकर आधारपर कुसहा घटना सम्बन्धी बाह्य ऐतिहासिक दायित्व स्वतः निर्धारित नहि कएल जा सकैत।

ई बैच उपन्यासक अन्वेषणकें व्यक्तिगत पापस्वीकारसँ व्यापक सामाजिक जीवन धरि विस्तार दैत अछि। नीला फाइलक हस्ताक्षर, प्रति-पाँजिक रिक्ति, पासपोर्टक ठप्पा आ प्रवासीक स्थायी पता—सभ ककरो जीवनक एक आवश्यक कड़ी दर्ज करैत अछि, मुदा कोनो अकेले जीवनक पूर्ण उत्तर नहि। अध्याय ३१-३५क समेकित कलात्मक उपलब्धि एहि बहुविध अपूर्णताकें विशेष घटना, घरेलू वस्तु आ सामूहिक स्वरक माध्यमसँ व्यक्त करब अछि।

अध्याय ३६ — गाम जे खाली भेल

मूल उपन्यास, पृष्ठ २०१-२०५ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

छत्तीसम अध्याय 'गाम जे खाली भेल'मे विस्थापन बाढिक तात्कालिक दृश्य नहि, घरक भीतर दीर्घ समय धरि पसरल अनुपस्थितिक रूपमे प्रकट होइत अछि। सन् २०१६क जेठमे रामानुग्रहकें पूर्वी टोलक बन्द घरक कुंजी देल जाइत अछि। परिवारक बेटा सूरत आ दिल्लीमे, बेटी नेपालक ससुरारमे, वृद्ध स्त्रीक मृत्यु दू वर्ष पहिने भऽ चुकल। पाँजीक प्रति खोजबाक सीमित प्रयोजन कथावाचककें घरमे प्रवेश दैत अछि; मुदा घरक वस्तुसभ एहि सीमित प्रयोजनसँ बहुत विस्तृत जीवनक अंश उजागर करैत अछि।

पीतल-रंगक कुंजीमे जंग, छल्लामे लाल सूत, टूटल पट्टावला चप्पल, २०११क फागुनपर अटकल कैलेण्डर आ सात बजि अठारह मिनट पर थमल घड़ी—ई वस्तुसभ मिलि घटनाक कोनो एक निश्चित दिन प्रमाणित नहि करैत। घड़ीक काँटा रुकल अछि, मुदा घरक लोक ओही घड़ी बाहर गेल छलाह, ई उपन्यास नहि कहैत। एहि अन्तरकें लेखक बनौने रखैत छथि। वस्तुक दृश्य-शक्ति ओकरा ऐतिहासिक प्रमाणक समकक्ष नहि बनबैत।

भानसघरक सिलौट, कड़ीपर धुआँक तह, तीन थारी, भाँड़क भीतर सूखल कीड़ा आ सन्दूकमे तह कएल पाँच साड़ी जीवनक श्रमक रूपरेखा बनबैत अछि। एहि वर्णनमे व्यक्तिक अनुपस्थिति निरर्थक रिक्ति नहि: उपयोगक घिसाइ बचल अछि, मुदा उपयोगकर्ता नहि। स्त्रीक तीन काँचक चूड़ी आ एकटा जोड़ी-बिनु पायल एक सम्भावित कथा पाठकक मनमे जगबैत अछि, किन्तु कथावाचक ओकर स्वामिनी, बिछोहक कारण अथवा मृत्यु-क्षण गढ़ैत नहि। ई अनिश्चितता एहि अध्यायक नैतिक संयम अछि।

घरक सन्दूकमे विद्युत् बिल, जीवन-बीमा रसीद, विद्यालयक शुल्क-पुस्तिका, मस्कटसँ पठाओल धनक पर्ची आ दिल्लीक अस्पतालक औषधि-पर्चा एकहि ठाम भेटैत अछि। एतय घरेलू अर्थव्यवस्था बहु-स्थानिक अछि: घर गाममे

ठाढ़, ओकर आय, चिकित्सा, शिक्षा आ पारिवारिक सम्बन्ध परदेशक बाट चलैत अछि। अधलिखल पत्रक आरम्भ—‘माय, हम कुशल छी’—ओहि आर्थिक लेखासँ पृथक स्नेहक अपूर्ण प्रमाण अछि। पत्र अधूर किएक रहल, ई लेखक अनुत्तरित रखैत छथि।

कथा स्पष्ट कहैत अछि जे घरक वस्तु एकहि समयक नहि; पीतलक थारी, हवाई-अड्डाक तसवीर, बैंक-पर्ची आ मोबाइलक खाली डिब्बा अलग-अलग कालक अछि। ई वस्तुगत कालक्रम २०१६क भेटक भीतर अनेक वर्षक आवागमन देखबैत अछि। घर ‘एक दिन’ खाली नहि भेल, ई कथावाचकक पाठाधारित अनुमान अछि; किन्तु ककर निर्णयसँ, कोन विवशतासँ, कतेक बेर घरमे लोक घुरल—एहिमे पूर्ण निश्चितता नहि। आख्यानक समय एहि प्रकार निश्चल घड़ीक विरुद्ध बहुसंस्तरीय बनैत अछि।

तेसर बेर सन्दूकक तल्ला उठेलापर भेटल पोदरी अध्यायक अन्वेषणक निर्णायक केन्द्र अछि। विवाह-पत्र, दू जन्मपत्री, पीयर वंश-सूची आ खर्चक छोट बहि भेटैत अछि। घरेलू वंश-सूचीमे एक स्त्रीक नैहर-ग्राम लिखल अछि, मुदा मुख्य पँजीमे नहि। रामानुग्रह निजी नकलकँ स्वतः मूल पँजी नहि मानैत; दू विवाह-तिथिक एक दिनक अन्तर सेहो दर्ज करैत छथि। एहि ठाम पाठ स्त्रीक अभिलेखीय अदृश्यता विषयक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा कारण अथवा दोषी पहिचान करबाक दावा नहि करैत।

खर्चक बहिक अन्तिम पाँति ‘कुंजी छोटक लग’ ओहि कथात्मक पद्धतिक छोट मुदा तीक्ष्ण उदाहरण अछि। ‘छोट’ के छल—कुंजी देनिहार चचेरा भाइ, घरक दोसर सदस्य, वा कोनो आन व्यक्ति—ई तथ्य अनुपलब्ध अछि। कियो सम्भावित व्यक्ति आँखिक सोझाँ होइतो रामानुग्रह अनुमानकँ प्रविष्टि नहि बनबैत। नव्य न्यायसँ देखल जाए तँ नामसाम्य अथवा परिस्थितिजन्य निकटता मात्र निर्णायक व्याप्ति नहि; साध्य सिद्ध करबाक अलग प्रमाण अपेक्षित अछि।

मचान पर रेल-टिकटक दिल्ली, लुधियाना आ सूरत गन्तव्य घरक प्रवासन-मानचित्र रचैत अछि। मुदा टिकट पर नामक मेलसँ केवल बाहर जाएबाक समयक संकेत भेटैत अछि, स्थायी पलायनक घोषणा नहि। भीत पर बालकक लम्बाइक २००१-२००३क रेखासभ, फाटल सिंचाइ पाइप आ पड़ोसी द्वारा लगाओल नवल काँटेदार तार अपन-अपन स्तरपर घरक अवरुद्ध आ जारी जीवन दिखबैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे भूमि, श्रम, सीमा, पीढ़ी आ कागजक ई क्रम पृथक राखल आवश्यक अछि।

घर लौटाओलाक समय रामानुग्रह पोटरी ओहि स्थानपर राखैत छथि, कुंजी फेर देलनि, आ प्रति-पाँजिमे केवल स्त्रीक नैहर-ग्राम सम्बन्धी स्रोत-आधारित सूचना लिखैत छथि। घरक घड़ी, चूड़ी अथवा आधा पत्र पाँजीक प्रमाण नहि बनैत। ई चयन व्यक्तिगत जिज्ञासा आ सार्वजनिक अभिलेखक सीमा स्पष्ट करैत अछि। वस्तुक अनावश्यक विवरण व्यक्ति-जीवनक संवेदना जगबैत अछि; स्रोतक चयन शोध-कर्तव्यक अनुशासन सिखबैत अछि।

भारतीय ध्वनि-दृष्टिसँ बन्द दुआर आ एकल पायल करुणाक आलम्बन-जेकाँ काज करैत अछि; तथापि कथा ओकरा सहजबोधसँ निकसल निष्कर्षमे बन्द नहि करैत। वस्तु-पञ्जीक बहुत लम्बा विस्तार कतहु-कतहु कथाक गति अवरुद्ध करैत अछि, आ पाठककेँ मर्म-निर्माणक लेल पर्याप्त अवसर देबासँ पहिने विवरणक भार बढ़ा दैत अछि। मुदा एहि विस्तारक शिल्पगत कारण सेहो अछि—घरक जीवनक अनेक असम्बद्ध अवशेषकेँ एक नाटकीय रहस्यक कड़ी बनायबासँ बचायब। अन्तिम दृश्य: छत पर नव टीन, बदलबा ताला, भीतरक वस्तुक वर्तमान स्थिति अज्ञात—एहि संयममे अध्यायक उपलब्धि सुरक्षित अछि।

अध्याय ३७ — स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच

मूल उपन्यास, पृष्ठ २०६-२०९ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

सैंतीसम अध्याय तीन पृथक समय-बिन्दु पर अनुराधाक स्वर-सन्देश प्रस्तुत करैत अछि। मस्कट पहुँचबाक तीन मास, चारि मास आ छह मास पछातिक प्रतिलेख क्रमशः आर्थिक स्थापन, श्रमक नियमितता आ उत्तरक प्रतीक्षा बदलैत भावनात्मक सम्बन्ध देखबैत अछि। एतय कथावाचकक वर्णन कम, अनुराधाक अपन बोली अधिक अछि; प्रत्येक विराम शब्द चुनबाक प्रक्रिया, कामक थकान आ अपूर्ण संवादक ध्वनि बनैत अछि।

तेसर सन्देशमे पूर्ण मासक वेतनक सकल राशि आ हाथमे आयल राशि अलग अछि। बीमा आ प्रशासनिक मदक कटौती अनुबन्धक परिशिष्टमे लिखल छल, मुदा ओकर व्यावहारिक अर्थ अनुभव भेला पर खुलैत अछि। एहि ठाम कागज पढब आ ओकर प्रभाव बुझब बीचक अन्तर कथा-कथ्य बनल अछि। नियुक्ति-पत्र स्वीकारि लेब आर्थिक स्वतन्त्रताक अन्तिम बिन्दु नहि; नव रोजगार-व्यवस्थाक भाषिक आ गणनात्मक साक्षरता सेहो अनिवार्य अछि।

अनुराधा ऋणक किस्त, घर पढेबाक धन आ अपन मासिक व्ययक सीमा तीन भागमे बाँटैत अछि; खाता-संख्या, प्रेषण-शुल्क आ विनिमय-दर फेर-फेर मिलबैत अछि। ओ दादाकेँ पठाओल रकमक प्रचार नहि चाहैत, किएक तँ धन ओकर श्रमक वेतन अछि, उपहार नहि। एहि वाक्यक सामाजिक अर्थ पैघ अछि: घरक प्रति दायित्व निभेनिहार स्त्री अपन अर्जित धनपर अर्थनिर्धारणक अधिकार सेहो चाहैत अछि। स्नेहक सम्बन्धमे कृतज्ञता थोपल जाए, ताहिसँ ओ बचैत अछि।

बैंकक पर्चीमे ओहि दिनक विनिमय-दरकेँ अनुराधा समय-बद्ध सत्य रूपमे चिन्हैत अछि। ई पाँजीकार दादाक तिथि-स्रोतवला अनुशासनक स्पष्ट

अन्तरपीढीय रूपान्तरण अछि। नव्य न्यायगत दृष्टिमे अंक-प्रमाणक सीमा ओकर प्रयोजन आ समयसँ निर्धारित; आजुक पर्ची काल्हिक बदलल दरक पूर्ण विवरण नहि दैत। साहित्यिक दृष्टिसँ ई अभिलेख-नैतिकता नर्सक आत्मरक्षाक व्यावहारिक उपकरण बनैत अछि।

तेसर सन्देशक अन्तमे अनुराधा अस्पतालक चिकित्सकीय पञ्जीक रिक्त कोष्ट आ घरक मौनक भेद उठबैत अछि। अस्पतालमे खाली कोष्ट केवल नहि लिखल सामग्री अछि; परिवारमे कोन बात अज्ञानवश नहि कहल गेल आ कोन बात जानि-बुझि रोकल गेल, ई प्रश्न अधिक कठिन अछि। लेखक एहि तुलना द्वारा अध्याय ३२क प्रति-पाँजिक मूल दुविधाकेँ दूरदेशक श्रमजीवी स्त्रीक आवाजमे पुनः खोलैत छथि। ओ एक पाँतिक कुशल-संवाद माँगैत अछि; मूल इतिहासक सम्पूर्ण निर्णय नहि।

चारिम सन्देशमे अतिरिक्त पारी आ छुट्टीक दिनक श्रमसँ जमा धन बढ़ैत अछि। घर पठाओल रकम छप्परक मरम्मत आ दादाक औषधिक व्ययमे बदलैत अछि। मुद्रा केवल बैंकक अंक नहि, घरक वस्तु आ जीवन-सुरक्षाक रूप लेइत अछि। कमराक तीन सहवासी स्त्री अपन-अपन प्रेषणक दिन अलग रखैत छथि; प्रत्येक बैंक-सन्देशक पाछाँ घरक ऋण, पढाई, औषधि अथवा छतक भार अछि। ई बहुस्त्रीय समानान्तरता एक पात्रक व्यक्तिगत संघर्षकेँ व्यापक स्त्री-श्रमक अर्थव्यवस्थासँ जोड़ैत अछि।

अनुराधाक राखल पासपोर्टक प्रति, अनुबन्ध, पारी-सूची, वेतन-पर्ची, स्वास्थ्य-बीमा आ धन-प्रेषणक रसीद अपन जीवनक नव पँजी बनैत अछि। मुदा ओ स्पष्ट करैत अछि जे दादाक पोथी आ अपन फोल्डरक काज अलग। एक वंश-सम्बन्ध व्यवस्थित करैत अछि, दोसर श्रम-अधिकार आ आर्थिक दायित्व। समानता 'जे नहि लिखल' तकर भविष्यक कठिनाइमे अछि; कार्यक्षेत्र अलग रखबाक विवेक कथाक उपलब्धि अछि।

पाँचम सन्देश आरम्भहि सँ छोट अछि: वेतन, प्रेषण, अपन खातामे बचत । छह मासक दूरी भाषामे संकोच आ थकान दुनू पैदा करैत अछि । अस्पतालक लिफ्ट, औषधिक गन्ध आ साझा कोठली दोहराइत अछि । तथापि अपन बचत राखबाक सूचना देखबैत अछि जे श्रमक अर्जन घर पठायब मात्र नहि, स्वयं लेल स्थान बनायब सेहो अछि । आख्यानक गति तीनसँ चारि आ पाँच धरि विवरणसँ छाँटल शब्दक दिशामे सिमटैत अछि ।

नवल दू नर्सक जन्म-ठाम अलग कागजमे दर्ज अछि, मुदा रातिक पारीमे ओ सभ एके घण्टी सुनैत छथि । अनुराधा परिवारमे सेहो एहन समानताक कामना करैत अछि, फेर मानि लैत अछि जे घर अस्पताल नहि । ई तुलना नायकाक जाति-विमर्शक पूर्व प्रसङ्गसँ जुडैत अछि, मुदा अस्पतालकें सामाजिक भेदभावसँ सर्वथा मुक्त संस्था प्रमाणित नहि करैत । ई अनुराधाक अनुभवजन्य आकांक्षा अछि, समाजशास्त्रीय सार्वकालिक नियम नहि ।

अध्यायक सबसँ प्रभावी रचना-उपकरण सन्देशक भीतरक विराम अछि ।

विरामक चिह्न पर मुद्रित अंग्रेजी संकेत मूल पाठमे रहैत अछि, मुदा आलोचनाक आधार ओकर नाटकीय परिणाम: एकतर्फी स्वर-सन्देश उत्तर नहियो भेटलापर सम्बन्धक लेल सुनबाक ठाम राखैत अछि । कथात्मक सीमा सेहो एहि रूपमे अछि जे तीनू आवाज लगातार विचारपूर्ण आ सुव्यवस्थित सुनाइत अछि; कार्यस्थलक अचानक बोलचालक अव्यवस्था अथवा सहकर्मीक प्रत्यक्ष विरोध कम भेटैत अछि । तथापि अन्तिम सन्देशक प्रश्न नहि माँगबाक निर्णय दादाक मौनकें क्षमा घोषित नहि करैत, बल्कि संवादक सम्भावना जीवित रखैत अछि ।

अध्याय ३८ — पँजीकारक ग्राहक

मूल उपन्यास, पृष्ठ २१०-२१५ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

अइतीसम अध्याय पँजीक सामाजिक जीवनकेँ पुरान सन्दूकसँ निकालि मोबाइल, विवाह-वेबसाइट, छायाप्रति-दुकान, सरकारी प्रपत्र आ डिजिटल भुगतानक बदलैत व्यवहारमे रखैत अछि। ग्राहकक पहिल प्रश्न मूल, ग्राम आ पितामहसँ हटि 'पृष्ठक छायाचित्र' लऽ सकबाक प्रश्न बनैत अछि। ई बदलाव केवल यन्त्रक सुविधा नहि, प्रमाणक उपयोगकर्ता द्वारा निर्धारित नव क्रम अछि। लेखक प्रशासनिक आ वाणिज्यिक इच्छाक भिन्नता रोजमर्राक दृश्यसँ देखबैत छथि।

कमजोर पन्नाक कोर दबाकऽ युवक स्पष्ट तस्वीर चाहैत अछि। रामानुग्रह हस्तक्षेप करैत छथि, मुदा कागजसँ धूसर रेशा झडि जाइत अछि। मोबाइलक उजास बढ़लासँ मूल कागज नहि सुधरैत—एहि ठोस क्षणमे प्रतिरूपक दृश्य स्पष्टता आ मूल वस्तुक भौतिक संरक्षणक अन्तर प्रत्यक्ष होइत अछि। छायाचित्र लेनाइ अपने आप संरक्षण नहि; बारम्बार पन्ना खोलबाक दबाव अभिलेखक आयु घटा सकैत अछि।

विवाह-वेबसाइटक चारि कोष्ठ—कुल, मूल, गोत्र, ग्राम—एहि अध्यायक केन्द्रीय शिल्पगत द्वन्द्व अछि। पिता पोथी चिन्हैत छथि, पुत्र डिजिटल परिचय-पृष्ठ। पिता मूल पूछैत, पुत्र पँजीक विस्तृत वंश-रेखाकेँ छोट कोष्ठमे अनबाक बाट खोजैत अछि। छठम पीढ़ी पोथीमे रहितो वेबसाइटक आकारमे नहि समाइत; ओकर अनुपस्थिति जानि-बुझि खुरचल गेल नाम-जेकाँ नहि, मुदा पाठकक दृष्टिसँ ओ ओझर भऽ सकैत अछि।

एक ग्राहककेँ मूल, मातृक ग्राम आ गाम-परिवर्तन जाँचबाक लेल तीन पोथी आ लगभग तीन घण्टा चाही। अन्ततः तीन छायाचित्रमे ग्राहकक काम समटि जाइत अछि। ई समयक अनुपात, श्रमक मूल्य आ ज्ञानक संक्षिप्तीकरण पर सूक्ष्म व्यङ्ग्य अछि। शुल्क शोधक तीन घण्टा नहि, तीन तस्वीरक तुल्य देल

जाइत अछि। एतय पँजीकारक विशेषज्ञ श्रम डिजिटल वस्तु-सुविधामे अदृश्य होइत अछि।

जाति-प्रमाणपत्र लेल आयल ग्राहक राज्यीय कार्यालयक सम्भावित स्वीकारकें पँजीक अधिकारसँ गडुमडु करैत अछि। रामानुग्रह स्पष्ट करैत छथि जे सरकारी प्रमाणपत्रक जाँच आ नियम पृथक; पँजी वंश-अभिलेख मात्र अछि। नवल प्रपत्रक उद्देश्य पुरान वंश-स्रोतमे मनमाने प्रमाणिक बल नहि जोड़ि सकैत। विदेह समानान्तर पद्धतिमे सामाजिक जाति-परिचय, वंशगत स्मृति आ राज्यक प्रमाणन-विधिक क्षेत्रसभ पृथक अध्ययन चाहैत अछि।

एक वृद्ध केवल एक मात्रा बदलाबय चाहैत छथि ताकि सरकारी कागजसँ वर्तनी मेल खाए। रामानुग्रह मूल वर्तनी नहि बदलैत; वृद्ध अन्ततः आवेदनमे दुनू रूप लिखि लैत छथि। ई दृश्य वर्तमान उपयोग लेल अलग लेख तैयार करबाक व्यावहारिक बाट दिखबैत अछि। स्रोत-पाठक ऐतिहासिकता सुरक्षित रहैत अछि, व्यक्तिक वर्तमान कठिनाइकें अस्वीकार कएल बिना। नव्य न्यायमे एक अंशक साम्यसँ सम्पूर्ण पहिचान निर्विवाद नहि; माता-पिता, ग्राम आ स्रोत-मिलान चाही।

एक स्त्री अपन पुत्रीक विवाह लेल अकेली आबि पाँति हाथे उतारैत छथि। ओ एक कनियाँक नाम पुष्टि करबैत छथि; अगिला पाँतिमे स्त्रीक नाम नहि। कथावाचक कारण नहि गढ़ैत। एहि छोट दृश्यकें अध्याय ३६क घरक निजी वंश-सूचीमे उपलब्ध स्त्रीक नैहर-ग्राम आ अध्याय ४०क सप्तरी-सम्बन्धी पत्रसँ मिलाओल जा सकैत अछि। तीनू ठाम स्त्रीक नाम/सम्बन्धक अनुपस्थिति प्रत्यक्ष जाँचक विषय अछि, मुदा सभ अनुपस्थितिक एकहि कारण घोषित करब पाठ-विरोधी होयत।

प्रतिष्ठाक लेल 'पुरान वंश'क दू-पाँतिक प्रशस्ति चाहनिहार ग्राहक पँजीकें विज्ञापन बनयबाक जोखिम सामने अनैत छथि। रामानुग्रह नाम आ स्रोत

देबाक बात करैत छथि, वंश-महिमा लिखबाक नहि। एहि ठाम अभिलेखीय अधिकार आ सामाजिक प्रतिष्ठा बीचक सम्बन्ध आलोचनाक योग्य अछि: कथाक वस्तु ककरो उच्च कुलक पुष्टि सँ अधिक, सत्यापनक सीमा अछि। ई बिन्दु मूल उपन्यासक सामाजिक आलोचनाकें अपनहि संस्थानक विरुद्ध सक्रिय करैत अछि।

डिजिटल भुगतानक समय कथावाचक पर्दापर अंक देखिते 'प्राप्त' नहि लिखैत; खातामे वास्तविक लेखा मिलान करैत छथि, तकर बाद रसीद सुरक्षित करैत छथि। ई पँजीकारक पुरान अनुशासन नवल माध्यममे लागू होयबाक दृश्य अछि। यन्त्रक बदलबा सँ प्रमाण-नैतिकता स्वतः बदलैत नहि, मुदा जाँचक प्रक्रिया बदलैत अछि। ग्राहकक मोबाइल-छवि आ बैंकक हिसाब पर भरोसाक मानक एके प्रकारक नहि।

अध्यायक अन्तमे प्रति-पाँजिमे लिखल कथन—कागजक कोर झड़ैत अछि आ उपयोगकर्ता अर्थक कोर काटैत अछि—स्वयं 'अनुमानात्मक' चिह्न पबैत अछि। एहि आत्मसन्देहमे कथावाचक अपन आकर्षक रूपकें प्रमाणित तथ्य बनेबाक विरोध करैत छथि। भारतीय वक्रोक्ति आ ध्वनि-दृष्टिसँ कोरक ई युगम साहित्यिक दृष्टान्त अछि; नव्य न्यायसँ देखल जाए तँ भौतिक क्षरण प्रत्यक्ष, अर्थक्षरणक दावाक लेल सामाजिक अवलोकनक व्यापक जाँच चाही।

अन्तिम अनजान सन्देश पँजीक 'पीडीएफ' माँगैत अछि। रामानुग्रह जानय चाहैत छथि जे ई कागज, छायाप्रति वा बिनु देहक तेसर रूप अछि। डिजिटल माध्यमक व्याख्या सचेत रूपसँ बूढ़ पँजीकारक सीमित ज्ञानमे राखल गेल अछि। मुदा उपन्यास कतहु-कतहु ग्राहकक भिन्न अनुभवकें प्रकारबद्ध

उदाहरणक रूपमे एकक बाद एक रखैत अछि, जाहिसँ नाटकीय टकराव कम आ तर्क-प्रदर्शन अधिक लगैत अछि। एही श्रृंखलाक वास्तविक कला तखन सघन होइत अछि जखन कमजोर पन्नाक झड़ैत रेशा अथवा स्त्रीक उतारल नाम व्यापक विचारकें ठोस देह दैत अछि।

अध्याय ३९ — कोसी — ६

मूल उपन्यास, पृष्ठ २१६-२१८ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

उनचालीसम 'कोसी — ६' मानव-पाँजी आ नदीक बहावकेँ एक नव माध्यम— डिजिटल प्रतिरूप—द्वारा जोड़ैत अछि। नदीक स्वर लगभग विरामहीन चलैत अछि; अक्षर भुरभुरा भेलापर मनुष्य छवि बनबैत अछि, छविक उजास बढ़बैत अछि, अंक, मुहर आ कार्यालयक पुष्टि खोजैत अछि। एतय कोसी मनुष्यक बनाओल अभिलेख-शृंखलाक बाहरी दर्शक अछि, मुदा स्वयं कागजक प्रमाण नहि दैत।

नदीक कछेरपर पयरक चिन्ह जल चढ़लापर धुलि जाइत अछि; मनुष्य पयरक अनुपस्थिति सँ बचबाक लेल नाम, पिता, पितामह, ग्राम, मूल आ विवाह लिखैत अछि। ई तुलना प्रकृति आ समाजकेँ एकहि विधिसँ नहि चलाबैत। नदीक क्षरण भौतिक; पाँजीक चयन सामाजिक आ संस्थागत। स्वरक साम्यक भीतरहि अन्तर बनल अछि, एहि कारण अध्याय पर्यावरणीय रूपकसँ आगाँ दस्तावेजी शक्तिक प्रश्न बनैत अछि।

डिजिटल पर्दापर अक्षर पैघ कएलासँ पुरान कागज नव नहि होइत; छोट कोष्ठमे पाँच पीढ़ी समा गेलासँ छठम पीढ़ी मेटि नहि जाइत। ई कथन अध्याय ३८क एक ग्राहकक वास्तविक विकल्पक काव्यात्मक पुनरावृत्ति अछि। नदी स्पष्ट करैत अछि जे पर्दाक बाहर रहब आ वास्तवमे नहि रहब एक बात नहि। एहि भेदमे अभिलेखीय अदृश्यता आ अस्तित्वक मध्य मूल नैतिक दूरी बनल अछि।

'कोसी' खण्डसभक पुरान आत्मवाणी जल, बालू, तटबन्ध, गाम आ नावक समय पकड़ैत छल; छठम खण्ड छवि, कोष्ठ, डिजिटल सहेज, दूरदेशक वर्तनी आ प्रतिलिपिक भरोसा जोड़ैत अछि। प्रकृतिक दायरा मानवीय संवादक विस्तारसँ बदलैत अछि। नदी डिजिटल युगक वैज्ञानिक व्याख्याता नहि बनैत; ओ मानवीय प्रक्रियाकेँ अपन धार आ कछेरक बिम्बमे देखैत अछि। एहिसँ पुस्तकक आवर्ती शिल्प स्थिर रहितो विषयगत विस्तार पबैत अछि।

नदीक आत्मवाणीमय कथन जखन कहैत अछि जे छवि मूल पन्नाक स्थान नहि लेइत, तखन पाठककेँ प्रश्न करबाक चाही: मूलक प्रति कतेक विश्वसनीय, आ मूलक स्वयं पहिचान कोन हद धरि सन्देहमुक्त? अध्याय मूलक स्वतन्त्र आलोचनामे बेसी दूर नहि जाइत, यद्यपि रामानुग्रहक प्रति-पाँजिक नियम एहि प्रश्नक आवश्यकता पहिने सँ स्थापित करैत अछि। कथाक सीमा चिन्तनक अतिशय सीधापन अछि—कथावस्तुक जटिलता कखनो-कखनो सूत्रवाक्यमे समेटि जाइत अछि।

भारतीय ध्वनि-विचारक अन्तर्गत जलक चिन्ह-मेटावन, कातक बदलाव आ पुरान कछेरक स्पर्श अभिलेखीय विस्मृतिक व्यञ्जना बनैत अछि। नव्य न्यायसँ देखल जाए तँ छविक अधिक उजास मूल दस्तावेजक अक्षर सम्बन्धी प्रमाणक अभाव नहि भरैत; हेरायल वर्तनीकेँ तकनीकी रूपसँ निश्चित कहब हेत्वाभासक निकट होयत। मुदा काव्यात्मक उपमान स्वयं कठोर वैज्ञानिक अनुमान नहि—एहि दू विधाकेँ अलग राखल आवश्यक अछि।

छठम कोसीक अन्तिम गति अनजान नामक दूरदेशक कागजमे बदलल वर्तनी धरि पहुँचैत अछि। ई बिन्दु आगाँक 'काठमाण्डू आ मधेस'क चारि स्रोतवला नाम-मिलान लेल लयात्मक सेतु बनैत अछि। विरामहीन गद्यक विस्तार अत्यधिक अवधारणात्मक होइत-होइत पात्रक स्वरकेँ विचारक वाहक बना सकैत अछि, मुदा छिटपुट दृश्यात्मक चिन्ह—कछेर, भीजल माटि, नावक पयर—ओकरा पुनः नदीक देहमे घुरा अनैत अछि।

अध्याय ४० — काठमाण्डू आ मधेस

मूल उपन्यास, पृष्ठ २१९-२२५ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

चालीसम 'काठमाण्डू आ मधेस' २०१५क आश्विनमे काठमाण्डूसँ आयल लिफाफासँ आरम्भ होइत अछि। ई अध्याय ३६क २०१६क बन्द घरक पछाति पुस्तकमे राखल गेल अछि; अतः प्रस्तुति-क्रमकें घटनाक सीधा कालक्रम मानब गलत होयत। पत्रक भीतर नेपाली नागरिकता प्रमाणपत्र, जन्म-दर्ता, हाथे बनाओल वंश-रेखा आ पुरान विवाह-निमन्त्रणक नकल अछि। प्रश्न वंश-शाखाक स्थानक अछि, राज्यीय अधिकारक नहि—स्रोतक प्रयोजन पहिलहि वाक्यसभमे निश्चित कएल गेल अछि।

श्यामानन्द झाक विवाहक कन्यापक्षक घरसँ जुडल ई प्रश्न रामानुग्रहकें भीमनगर लगक पुरान सीमा-पार बरियात आ वस्तु-सूचीक स्मृति धरि लऽ जाइत अछि। विवाहक समयक पाँजी-पत्रमे देशक कोष्ट नहि, मुदा सीमा-पत्रमे भारतीय आ नेपालीक प्रशासनिक पहिचान उपस्थित। एके परिवारक सम्बन्धक रूप अलग-अलग संस्थाक कागजमे भिन्न अछि। ई अन्तर कथा द्वारा इतिहास, वंश आ राष्ट्र-राज्यक अभिलेखीय भूगोलकें समानान्तर प्रस्तुत करब अछि।

रामानुग्रह पहिने मूल पाँजी, तकर बाद विवाहक प्रविष्टि, फेर सीमा-पार वस्तु-सूची खोलैत छथि। एहि क्रममे मूल स्रोतक प्राथमिकता तय होइत अछि। नागरिकताक कागज समकालीन परिचयक प्रमाण होए सकैत अछि, मुदा ओकरा पुरान विवाह-संस्थाक मूल स्रोत बना देब अनुचित। एक मात्रा बदलल वर्तनी, नानीक पीढ़ी आ कन्याक मामाक नाम मिलबैत समय कथावाचक तिथि, पिता आ ग्रामक सहायक मिलान करैत छथि। नामक एकसरि दिखनाइ पर्याप्त नहि।

युवक २० सितम्बर २०१५क संविधान-प्रकाशन सम्बन्धी समाचार, जनकपुर-जलेश्वर-राजविराज-वीरगञ्जक विरोध आ सीमापर मालवाहक अवरोधक

काटल समाचार-अंश लऽ अबैत अछि। दू समाचार 'नाकाबन्दी' आ 'सीमा-अवरोध' अलग शब्द प्रयोग करैत अछि। कथावाचक शब्दद्वयक राजनीतिक मतभेद मेटाकऽ एक निश्चित निष्कर्ष नहि दैत। ई उपन्यासक पात्र द्वारा पढल समसामयिक सामग्रीक वृत्तान्त अछि; केवल एहि वर्णनसँ बाह्य राजनीतिक घटनाक समस्त कारण, उत्तरदायित्व आ तथ्य सिद्ध नहि होइत।

युवकक बहिन नेपाली नागरिक, ओकर पति भारतक; परिवार नवल पीढीक मातृक आ पितृक स्रोत मिलायब चाहैत अछि। रामानुग्रह स्पष्ट करैत छथि जे वंश-पँजी नागरिकता निर्धारित नहि करैत। ई सीमा-निर्धारण राजनीतिक उदासीनता नहि; गलत प्रयोजनक कागजकें कानूनी निर्णयक स्रोत बना देबासँ वास्तविक व्यक्तिक हानि सम्भव अछि। नव्य न्यायगत प्रमाण-विवेकमे दस्तावेजक विषय, प्रयोजन आ तिथिक निश्चय बिना ओकरा साध्यक निर्णायक हेतुक रूपमे ग्रहण नहि कएल जा सकैत।

पुरान विवाहक वस्तु-सूचीमे धोती, साड़ी, थारी, लोटा, मखान, रेडियो आ सिलाइ-मशीन देखिकऽ युवक परनानाक नाम चिन्हैत अछि। रामानुग्रह स्पष्ट करैत छथि जे सूची स्वयं वंश नहि जोड़ैत; ओहिमे उल्लेखित व्यक्तिक परिचय आन स्रोतसँ मेल खाए, तखन सहायक संकेत बनैत अछि। एहि छोट संवादमे लेखक प्रमाण-सम्बन्धी आकर्षक निष्कर्षकें तुरंत नियंत्रित करैत छथि। वस्तु-सूची इतिहासक अप्रत्याशित स्रोत बनैत अछि, सर्वशक्तिमान स्रोत नहि।

समाचारक पन्नासँ अलग युवक भानसक चाउर, नून, तेल आ मोमबत्तीक रसीद देखबैत अछि; रसोई गैसक नाम काटल अछि। घरक असुविधा राजनीतिक शब्दक देहधारी परिणाम बनैत अछि। रामानुग्रहकें १९६६क अकालक व्यय-बही मोन पड़ैत अछि; दुनू ठाम समान खाद्य-वस्तु अछि, मुदा समय आ कारण अलग। ओ ई आकर्षक तुलना दैनिकीमे नहि लिखैत। विदेह समानान्तर

ऐतिहासिक पद्धतिक मर्म ई नहि जे सभ ऐतिहासिक संकट समरूप अछि, बल्कि समान वस्तुक भिन्न कालगत-संस्थागत सन्दर्भ जाँचब अछि।

युवक नानीक घरक छोट नाम बतबैत अछि; मौखिक पारिवारिक प्रयोगकें रामानुग्रह तत्क्षण मूल वंश-पाँतिमे नहि जोड़ैत। पुरान पत्र खोजबाक बात कहल जाएत। तकर बाद एक पृष्ठक वंश-सम्बन्धी प्रतिलिपि तैयार होइत अछि, जाहिमे नागरिकता अथवा आन राज्यीय अधिकारक प्रमाण नहि होयबाक सीमा लिखल अछि। 'मधेस' शब्द क्षेत्रीय आत्मपहिचान रूपमे जोड़बाक माँग पर मूल ग्राम आ नवल क्षेत्रीय कथनक स्रोत पृथक राखबाक सुझाव देल जाइत अछि; अन्ततः युवक केवल ग्राम राखबाक निर्णय करैत अछि।

सप्तरीसँ आयल वृद्ध स्त्रीक फोन अध्यायक भावनात्मक केन्द्र अछि। बाबूक नाम पाँजीमे, मायक नाम विवाह-पत्रक नकलमे, मुख्य पाँजीमे नहि। ओ पूछैत छथि जे नाम लिखल जाएत कि नहि। रामानुग्रह स्रोत फेर मिलाकऽ प्रति-पाँजिमे स्त्रीक नाम दर्ज करैत छथि, मूल पाँति नहि काटैत अथवा बढबैत। एहि दृश्यकें अध्याय ३६क घरक निजी सूचीमे भेटल स्त्रीक नैहर-ग्राम आ अध्याय ३८क विवाह लेल आयल स्त्रीक प्रश्नसँ जोड़ला पर उपन्यासक स्त्री-अभिलेख-विमर्श एक व्यवस्थित धारा बनैत अछि।

तीन समाचार-अंशक अलग-अलग विषय—नवल संविधान, विरोध आ वस्तुक अभाव—एक वाक्यमे समेटल नहि गेल। पुरान सीमा-सूची आ नवल कागज अलग रखल गेल, कमजोर पन्नाक दुनू कात संरक्षण-पत्र देल गेल। अभिलेखकें एकत्र करबाक अर्थ सभ स्रोतक उद्देश्य आ विश्वसनीयता समान मानि लेब नहि। एहि व्यवहारक चित्रणमे लेखक राजनीतिक भाषणक बदला दैनन्दिन प्रमाण-संग्रहक कार्यनैतिकता चुनैत छथि।

अध्यायक कलात्मक उपलब्धि सीमाक दोहरी अर्थछवि अछि—राज्यक सीमा, आ प्रमाणक सीमा। भारतीय औचित्य-विचारसँ घरक भानसक रसीद, पुरान विवाहक सूची आ नानीक स्मृति पात्रक चिन्ताक उपयुक्त वस्तु बनैत अछि; पाश्चात्य आख्यानशास्त्रसँ देखल जाए तँ २०१५क प्रसङ्ग २०१६क पिछ्ला अध्यायपछाति राखि लेखक सीधा समयकें तोड़ैत छथि। तथापि कागज मिलानक बारम्बार स्पष्टीकरण कतहु-कतहु संवादकें शिक्षात्मक बनबैत अछि। एकर बावजूद अन्तिम सूत्र—वंश-अभिलेख आ राज्यीय कागज परस्पर सहायक, मुदा एक-दोसरक विकल्प नहि—उपन्यासक मूल जटिलताक प्रमाण-निष्ठ निष्कर्ष अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय ३६-४०

गाम जे खाली भेल • स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच • पँजीकारक ग्राहक • कोसी —
६ • काठमाण्डू आ मधेस

छत्तीसमसँ चालीसम अध्याय धरि उपन्यासक मुख्य वस्तु पाँच अलग रूपमे प्रकट अछि—बन्द घरक निजी कागज, प्रवासी नर्सक स्वर-सन्देश आ धन-प्रेषण रसीद, पँजीकारक ग्राहकक डिजिटल छवि, नदीक अभिलेख-विषयक आत्मवाणी, आ सीमा-पार परिवारक राज्यीय कागज। सभमे अनुपस्थित व्यक्ति अथवा अधूर परिचयक प्रश्न उठैत अछि, मुदा स्रोतक प्रयोजन आ प्रमाणिक बल भिन्न अछि। ई अन्तर मेटि देल जाए तँ उपन्यासक कलात्मक उपलब्धि आ आलोचनात्मक अनुशासन दुनू नष्ट होयत।

‘गाम जे खाली भेल’मे कुंजी घरक प्रवेश दैत अछि, सत्यक सर्वाधिकार नहि। सन्दूकक निजी वंश-सूची स्त्रीक नैहर-ग्राम देत अछि, जकर मुख्य पँजीमे अभाव अछि। ‘पँजीकारक ग्राहक’मे मोबाइल मूलक छवि दैत अछि, मुदा मूल पन्नाक क्षरण रोकैत नहि। ‘काठमाण्डू आ मधेस’मे सीमा-सूची परनानाक नामक मिलानमे सहायक अछि, मुदा नागरिकताक निर्णायक प्रमाण नहि। तीनू ठाम भौतिक वस्तु आ कथनक अधिकारक दायरा पृथक राखल गेल अछि।

अध्याय ३६क २०१६क भेट आ अध्याय ४०क २०१५क लिफाफा प्रस्तुति-क्रममे उलट अछि। यथार्थ घटनाक कल्पित कालक्रमकेँ ‘गलती’ कहि सुधारब नहि; ई आख्यानक अनैकैखिक विन्यास अछि। एकर बीच तीन मास, चारि मास आ छह मासक अनुराधाक सन्देश क्रमिक समयबोध देत अछि। कोसीक अविराम आत्मवाणी एहि दुनू समय-प्रयोगसँ पृथक प्राकृतिक चक्रीयता आ ऐतिहासिक निरन्तरताक बिम्ब बनैत अछि।

आर्थिक प्रमाणक तीन धरातल बनैत अछि। बन्द घरक मस्कट-प्रेषण पर्ची सम्बन्धक अनुपस्थित पक्ष देखबैत अछि; अनुराधाक प्रत्यक्ष रसीद, शुल्क, विनिमय-दर आ घर पठाओल धन श्रमक वास्तविक शर्त देखबैत अछि; पँजीकारक डिजिटल शुल्कमे तीन घण्टाक शोध-श्रम आ तीन छायाचित्रक मूल्य बीच असमानता उभरैत अछि। धनक अंक मात्र आय नहि, श्रम-विभाजन, पारिवारिक अपेक्षा आ अधिकारक संरचना पर प्रकाश दैत अछि।

पात्रक स्वायत्तता आ संस्थागत सीमा बीच विशेष अन्तर अनुराधा आ रामानुग्रहमे अछि। अनुराधा अपन श्रम-धन उपहार नहि मानैत, प्रमाण-सामग्री सँभारैत, आ दादाकेँ उत्तर देबाक समय स्वयं पर नहि थोपैत।

रामानुग्रह प्रति-पाँजिमे स्त्रीक अनुपस्थित नाम स्रोतसहित लिखैत छथि, मुदा मूल अभिलेखक अनुचित फेरबदल नहि करैत। दुनू लेल साक्ष्य आत्मरक्षा आ न्यायोचित व्यवहारक साधन अछि; तथापि नाती-पोतीक अपेक्षाक तात्कालिक भावनात्मक उत्तर पुरान पँजीकार देबामे असफल रहैत छथि।

नव्य न्यायगत प्रमाण-विचारसँ पाँच अध्यायक भेद स्पष्ट अछि: बन्द घरक घड़ीक समय विदाइ-क्षणक निर्णायक हेतु नहि; वेतन-पर्चीक लिखल राशि वास्तविक शुद्ध प्राप्ति नहि; छायाचित्रक उजास पुरान अक्षरक स्वतः सत्यापन नहि; नदीक कछेरक उपमा अभिलेखक वैज्ञानिक प्रमाण नहि; नागरिकताक कागज वंश-पँजीक ऐतिहासिक विवाह-सूचीक स्थान नहि लैत। प्रत्येक प्रसङ्गमे जँ सम्बन्धित हेतु आ साध्यक व्याप्ति अस्पष्ट, तखन निष्कर्ष स्थगित रखबाक आवश्यकता अछि।

भारतीय रस-ध्वनि-औचित्यक दृष्टिसँ करुणा पाँच अलग माध्यमँ उपजैत अछि। बन्द घरक एकल पायल आ अधलिखल पत्र मौन करुणा जगबैत; अनुराधाक 'सुनबाक लेल ठाम' छोड़ेबाक निर्णय दीर्घ स्नेह-विरहक ध्वनि दैत; कमजोर पन्नाक झड़ैत रेशा स्मृतिक नाशक आशङ्का बनैत; कोसीक पुरान

कछेर समयक अप्रतिष्ठित स्मृति जगबैत; आ सप्तरीक वृद्ध स्त्रीक मायक नाम खोजब सामाजिक अदृश्यताक बिन्दु बनैत अछि। ई अनुभव सभ एके प्रकारक रस-निष्पत्ति नहि करैत।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रक दृष्टिसँ स्वर-परिवर्तन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: रामानुग्रहक संयमित प्रथम-पुरुष दैनिकी, अनुराधाक प्रत्यक्ष श्रव्य प्रतिलेख, ग्राहकसभक संवाद, कोसीक दीर्घ अविराम आत्मवाणी आ सीमा-पार पत्राचार—पाँचो रूप पाठककेँ अलग प्रमाण-स्थिति दैत अछि। दैनिकी चयनित लिखल बात अछि; स्वर-सन्देश एकतर्फी अछि; समाचारक काटल अंश बाह्य घटनाक पात्रगत पठन अछि; नदी मानवीकरणक काव्यात्मक वक्ता अछि। एकर सभ कथनकेँ समान अधिकारक कथन मानब आलोचनात्मक भूल होयत।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे सूरत-दिल्लीक मजदूरी-प्रवास, मस्कटक अस्पतालक विदेशी रोजगार, मिथिलाक पँजीकार संस्था, २०१५क काटमाण्डू-मधेसक समाज-राजनीतिक प्रसङ्ग आ गामक घरेलू अर्थव्यवस्था समानान्तर धरातल छथि। मूल उपन्यास सभकेँ एक परिवारक कागजक बाट जोड़ैत अछि, मुदा सम्बन्धक प्रमाण आ व्यापक ऐतिहासिक कारण एक नहि। विशेषतः २०१५क राजनीतिक शब्दभेद मूल कृतिमे स्रोत-भेद रूपमे अछि; ओकर बाह्य इतिहासक पुष्टिक लेल स्वतंत्र अभिलेख चाही।

पाँच अध्यायक शिल्पगत सीमा सेहो एकहि प्रकारक नहि। बन्द घरक वस्तु-सूची दीर्घ भऽ कथाक गति घटबैत; अनुराधाक स्वर-सन्देश कखनो अस्वाभाविक रूपसँ सुव्यवस्थित विचार बनि जाइत; ग्राहकक प्रसङ्ग क्रमिक उदाहरण बनबैत-बनबैत शिक्षात्मक होइत; कोसीक भाषण अवधारणात्मक दीर्घता लैत; सीमा-पार मिलान विस्तारमे एके प्रमाण-सीमा फेर-फेर समझबैत। तथापि जखन प्रत्येक विचार ठोस दृश्य पबैत—थामल घड़ी, वेतनक रसीद,

कागजक झड़ैत रेशा, नदीक भीजल कछेर, वृद्ध स्त्रीक मायक नाम—तखन गद्य नवल संवेदनात्मक ऊँचाइ प्राप्त करैत अछि।

एहि आठम बैचक समेकित उपलब्धि ई अछि जे मूल पँजीक पर्याय नवल सर्वज्ञ बहि नहि बनल; एक स्रोतक सीमाक भीतर दोसर स्रोतक आवश्यकता निरन्तर खुलैत जाइत अछि। घरक अनुपस्थित लोक, प्रवासी श्रमिकक अर्जन, डिजिटल छवि, नदीक परिवर्तन आ सीमा-पार परिवारक मातृक वंश—सभक अन्तिम सत्य एक कागजमे नहि समाइत। एहि असमाप्तिकेँ लेखक केवल रहस्यक तान नहि, बल्कि अभिलेखीय न्याय आ साहित्यिक कल्पनाक कठिन सहजीवन बनबैत छथि।

अध्याय ४१ — घुरब

मूल उपन्यास, पृष्ठ २२६-२३४ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

एकचालीसम अध्याय 'घुरब' २०२०क मार्चमे अनुराधाक मस्कट अस्पतालक पारी-सूची पर छुट्टी स्थगित होयबासँ आरम्भ होइत अछि। घर-फेरबाक व्यक्तिगत निर्णय एकाएक अस्पतालक कर्मचारी-आवश्यकता, अन्तरराष्ट्रीय उड़ान, राज्यीय अनुमति, चिकित्सकीय जाँच आ स्थानीय सवारीक प्रक्रियामे बाँटि जाइत अछि। दूरी केवल किलोमीटरक नहि रहि कागजक अलग-अलग अधिकार-सीमासँ बनैत अछि। कथा एहि विखण्डनकेँ कोनो व्यापक घोषणाक बदला परिचित नर्सक यात्रा-विवरणमे देखबैत अछि।

अनुराधाक अप्रैलक छुट्टी पहिनेसँ माँगल छल, मुदा टिकट स्वीकृति पर निर्भर छल। महामारीक परिस्थिति आयलापर कागजी छुट्टीक प्रयोजन बदलि गेल। अस्पतालक राति-पारी, ताप-जाँच, सहकर्मिक पृथक्करण आ अतिरिक्त मुखावरणक उल्लेख कार्यरत नर्सक जीवनक ठोस अनुभव प्रस्तुत करैत अछि। ओ घर जाएब चाहैत छथि, मुदा अस्पतालक अनुबन्ध समाप्त नहि; एहि कारण घर-वापसीकेँ केवल पलायन अथवा केवल कर्तव्य-विजय कहब अनुचित।

भारतक बाट पर पैदल चलैत श्रमिकसभक छवि अनुराधा फोन पर देखैत छथि। ओ अपन यात्राक व्यवस्थागत बाधा चिन्हैत छथि, किन्तु आन लोकक पयरक थकान केवल पर्दासँ मापि नहि सकैत। एहि आत्मसीमाक स्वीकारमे करुणा दयाक उपरिसँ दृष्टि नहि बनैत; अनुभवक असमानता बचल रहैत अछि। ओकर विशेष उड़ानक प्रवेशाधिकार आ आन श्रमिकक पैदल यात्रा समान व्यवस्था-उत्पन्न संकटसँ सम्बद्ध होइतो एके प्रकारक स्थिति नहि।

भारतीय दूतावासक निबन्धन-प्रपत्रमे पासपोर्ट, वीजा, गन्तव्य, आपत्-सम्पर्क आ घुरबाक कारणक कोष्ठ अछि। अनुराधा 'पारिवारिक कारण' लिखि मेटैत, फेर छुट्टीक अटकल अवधि वर्णित करैत छथि। एहि छोट सुधारमे व्यक्तिगत

आशयक भाषा आ प्रशासकीय रूपरेखाक भाषा बीचक असमंजस प्रकट होइत अछि। निबन्धन-संख्या पर्दापर आबिते ओ छायाचित्रो लैत छथि आ कापीमे लिखैत छथि; माध्यम बदलल रहितो दोहर सत्यापनक संस्कार अक्षुण्ण अछि।

मस्कटक विशेष उडानक समाचार आयलापर अनुराधा तिथि, उडान-संख्या, शुल्क आ पृथक्करण सम्बन्धी निर्देश अलग-अलग तीन बेर पढ़ैत छथि। अस्पतालक कर्मचारी-पहिचानपत्र जमा करब, लॉकरक कुंजीक लेखा आ निवासक व्यवस्था एक अस्थायी प्रस्थानकें संस्थागत समापन-जेकाँ देखबैत अछि; मुदा ओ भविष्यमे मस्कट घुब कि नहि, कियो कागज निश्चित नहि करैत। अतीतमे दिल्ली छोड़बाक 'अन्तिम' अनुभूतिसँ एहि बेरक अनिश्चित प्रस्थानक तुलना पात्र-विकासक सूक्ष्म साधन अछि।

विमानतल पर ताप-जाँच, स्वघोषणा-पत्र, विदेशी मोबाइल-संख्याक कारण अनुप्रयोग सत्यापनक बाधा, फेर दोसर मेज पर कागज—ई सभ यात्रा-शृंखलाक विशिष्ट बिन्दु अछि। अनुराधा सलालाह आ सोहारसँ आयल अनजान यात्रिकसभक पारदर्शी फोल्डर देखैत छथि: आवरण मिलैत, भीतरक दस्तावेज अलग। एकहि रंगक पासपोर्ट व्यक्तिक अनुभवक समानता प्रमाणित नहि करैत। विमानक आकाशमे जाँच-चौकी नहि, किन्तु उतरिते मेज आ वर्गीकरण फेर आरम्भ होइत अछि—यात्राक भौगोलिक आ प्रशासकीय अवरोधक तीक्ष्ण विरोध।

बोधगयाक संस्थागत पृथक्करणमे अनुराधा संक्रमण-निरोधक नियम पर आपत्ति नहि करैत छथि। मुदा नाम पाँच बेर, पता चारि बेर, पासपोर्ट पाँच बेर आ तापमान छह बेर लिखबाक पुनरावृत्ति कापीमे गनैत छथि। एकर आलोचना स्वास्थ्य-सुरक्षा-विरोधी नहि, तन्त्रक विखण्डित सूचना-प्रवाह पर केन्द्रित अछि। नव्य न्यायगत प्रमाण-विवेकमे एकहि परिचय-तथ्यक फेर लेखन ओकर नव सत्यापनक पर्याय नहि; ककरो विभिन्न कार्यालयक प्रपत्र कतेक मान्य, तकर सीमा अलग अछि।

नकारात्मक जाँच आ संस्थागत छुट्टीक पर्ची भेला पर सेहो अनुराधा तुरन्त घर नहि पहुँचैत छथि। गया, जिला, प्रखण्ड आ पंचायतक सवारी-व्यवस्था एक-एक ठाम समाप्त होइत अछि; अन्तिम सात किलोमीटरक उत्तर ओकर पर्यरकें देब पडैत अछि। आध किलोमीटरमे सूटकेसक चक्का ढील, बन्द चापाकल, बाँस सँ रोकल पुल आ मास्कक भीतर पसीना—ई देहगत विवरण प्रशासनिक भाषाक अमूर्तनकें काटैत अछि। दूरीक अन्तिम हिस्सा उपन्यासक सर्वाधिक मूर्त दृश्यसभमे सँ अछि।

मोहन दूरसँ पुरान साइकिल, पानि आ मुखावरण लऽ भेटैत छथि; अनुराधा स्वास्थ्य-नियमक कारण हुनका निकट नहि आबय दैत छथि। गाममे ‘विदेश’ शब्द नामसँ पहिने पहुँचि चुकल अछि। फाटक पर रामानुग्रहक हाथमे पोथी नहि; पोथी ओतहि पाँच हाथ दूर रुकैत छथि। एहि विराममे घर-प्रत्यावर्तनक पारम्परिक आलिङ्गन स्थगित अछि। भारतीय करुणा-ध्वनि-विचारमे प्राप्तिक क्षणमे दूरी प्रेमक अभाव नहि, सावधानीसँ जनमल कठोर संवेदना अछि।

अध्यायक अन्तमे अनुराधाक यात्रा-फोल्डर मेज पर अछि, मुदा तीन पीढ़ीक पुरान प्रश्न एखनहुँ बन्द। भौतिक दूरी घटल अछि, इतिहासक दूरी नहि। शिल्पगत सीमा ई जे प्रपत्र आ जाँचक अत्यधिक क्रम पाठककें थका सकैत अछि; किन्तु एहि दीर्घताक नैतिक प्रयोजन सेहो अछि—यात्राकें ‘विशेष उडानसँ घुलल’ सन एक वाक्यक सफलतामे समेटबाक विरोध। ई कथा वापसीक गन्तव्यसँ अधिक ओकर खण्डित बाटक आख्यान अछि।

अध्याय ४२ — तीन पीढ़ी एक कोठली

मूल उपन्यास, पृष्ठ २३५-२४३ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

बयालीसम अध्याय सात दिनक घरेलू पृथक्करण समाप्त भेलापर अनुराधाक बाहर अबैत दृश्यमे शुरू होइत अछि। प्रखण्ड स्वास्थ्य-कक्षक फोन, ज्वर-खाँसीक प्रश्न आ सावधानीक निर्देश पछाति ओ कोठलीसँ निकलैत छथि, मुदा मोहनक निकट आबि फेर दूरी रखबाक आग्रह करैत छथि। घर लौटब समाप्त घटना नहि; साथ रहबाक नवल पद्धति अब शुरू होइत अछि। लेखक एहि पद्धतिमे पँजीक पैघ वंश-वृक्षक अपेक्षा घरक अल्प स्थानक व्यवहारिक गणना महत्त्वपूर्ण बनबैत छथि।

तीन कोठली, ओसारा, एक रसोई, एक स्नानघर आ एक पाखाना—ई घरक संरचना तीन पीढ़ीक सहवासक संस्थागत नक्शा बनैत अछि। पहिल विवाद वंश अथवा पुरान फुलझरी-पाँतिक नहि, स्नानघरक पालिक अछि। अनुराधा क्रम लिखि किवाड़ पर टाँगैत छथि। रामानुग्रहकँ हस्ताक्षर आ तिथि देखबाक आदत अछि; ओ नियमक लेखनी-विधि विषयमे प्रश्न करैत छथि। एहि लघु हास्यमे पुरान पँजीकारक अभिलेख-चेतना आ नवल चिकित्सकीय अनुशासन समानांतर आबैत अछि।

एकहि तौलिया, गिलास आ मोबाइलक उपयोग विषयक सावधानी, रसोईक कात थैला राखब, सब्जी साफ करबाक भेद, बैंगन आ नूनपर असहमति—ई सभ पारिवारिक जीवनक सूक्ष्म सत्तासम्बन्ध खोलैत अछि। अनुराधा अस्पतालक अर्जित ज्ञान लऽ अबैत छथि; मोहन घरक पुरान चलन जानैत छथि; रामानुग्रह नियम लिखबाक अधिकारकँ सहजहि नहि छोड़ैत छथि। ककर अनुभव कोन प्रसङ्गमे उपयुक्त—ई प्रश्न कखनो हँसी, कखनो असुविधा बनैत अछि।

भोजनमे पहिनुक दू पीढ़ाक स्थानमे तेसर पीढ़ा जुड़ैत अछि। अनुराधा तीनू कँ दूरी राखि त्रिकोण-जेकाँ रखैत छथि। एहि भौतिक दूरीमे एकहिसँ भोजन आ

सावधानीक सहजीवन अछि। तीन जोड़ी चप्पल, तीन फोन आ एक विद्युत्-बिन्दुक प्रयोग उपन्यासक पूर्व डिजिटल-पँजी-विमर्शकें घरक अति सामान्य वस्तुमे उतारैत अछि। पितामहक पुरान मोबाइल आ नातिनक लैपटॉप एके विस्तार-तारपर भेटैत अछि, मुदा एकहि समयमे सबकें प्राथमिकता नहि भेटि सकैत।

विद्युत्-बिन्दु लेल मोहनक फोन, अनुराधाक लैपटॉप आ रामानुग्रहक छोट फोन बीच बनल असहमति पीढ़ीगत संघर्षकें हास्य-रसक मार्ग दैत अछि। नातिनक कामक साधन केवल नवल खिलौना नहि; दादाक फोन सेहो खाली प्रतिष्ठाक चिन्ह नहि। अनुराधा बैटरीक प्रतिशत देखैत छथि; रामानुग्रह अपन डायरिमे उपकरणक उपयोगक लेखा राखैत छथि। एहि ठाम कागज बनाम यन्त्रक सरल द्वैध उपयोगी नहि।

अनुराधा परिवारक स्नानघर आ रसोईक नियम लिखैत छथि, ताहि संग दादाक ग्राहक-आगमन विषयमे प्रश्न उठबैत छथि। विवाह-मिलानक ग्राहक महामारीमे सेहो फोन करैत छथि। रामानुग्रह पुरान वंश-कार्य थामबाक आवश्यकताकें सहजहि नहि बुझैत छथि; नातिन संक्रमणक जोखिमकें दैनिक यथार्थ मानैत छथि। ई द्वन्द्व सेवा-व्यवसाय आ पारिवारिक-धर्मक दू भिन्न अर्थ खोलैत अछि, मुदा कोनो पात्रकें सम्पूर्ण मूर्ख अथवा सर्वज्ञ नहि बनबैत।

पश्चिमक कोठलीक धूरि विषयक शिकायत पर रामानुग्रह पँजीक सन्दूकक अधिकारक रक्षा करैत छथि। अनुराधाक 'ऐतिहासिक धूर' पर टिप्पणी खिन्नता आ स्नेहक मिश्रित वक्रोक्ति अछि। कथावाचक प्रति-पाँजिक कापी ओतहि राखैत, केवल लिफाफा सीधा करैत छथि। लुकेल पोथीक गुप्तता देखि फेर छूबाक भय कथावाचकक अपन व्यवहारमे सेहो लागू होइत अछि—ओ दस्तावेज बचबैत छथि, मुदा प्रश्न टारैत छथि।

मोहन अपन पुरान विभागीय फाइल अनुराधाक आगाँ उलटि दैत छथि। रामानुग्रह ई क्रिया देखैत छथि, मुदा अनुराधा देखने छलीह कि नहि,

निश्चित नहि कहैत। एहि एक कृत्यमे अध्याय ३१क स्वीकारक शेष नैतिक बोझ उपस्थित अछि। फाइलक स्थितिमात्रसँ नव अपराध अथवा दोष सिद्ध नहि; मुदा पिता-पुत्री संवादमे असुविधा स्थापित होइत अछि। मौनक ई भिन्न स्तर बनावटी 'तीन पीढ़ीक मेल'सँ बचबैत अछि।

बिजली गेलापर तीनू फोनक उजास उठैत अछि, नून कम करबाक विवाद डॉक्टरक लिखल निर्देश धरि पहुँचैत अछि, आ राति तीनू पीढ़ीक सूबाक व्यवस्था बनैत अछि। वस्तुक उपयोगमे एक प्रकारक तात्कालिक समझौता सम्भव, मुदा फुलझरीक पाँति, मोहनक फाइल आ रामानुग्रहक प्रति-पाँजि तीन पृथक मौन रहैत अछि। अन्तिम दैनिकीमे तीनू नाम एकहि घरमे उपस्थित रूपमे लिखल अछि। ई दर्ज उपस्थिति सम्बन्धक पूर्ण समाधान नहि; 'एक छत मौनकें समाप्त नहि करैत अछि'—एहि भावसँ अध्यायक समेकित अर्थ बनैत अछि।

भारतीय औचित्य-दृष्टिसँ घरेलू व्यवहारक संक्षिप्त वस्तुसभ पात्रक इतिहासक अनुरूप छथि; पाश्चात्य आख्यानशास्त्रसँ सूक्ष्म हास्य गम्भीर अन्वेषणक मध्य लय बदलैत अछि। तथापि अनेक वस्तुगत विवाद आ छोट संवादक संग्रह अध्यायकें लघु नाट्य-दृश्यसभक क्रम बना दैत अछि, जकर समग्र दिशा अन्तिम मौन-विवेचनमे अधिक स्पष्ट होइत अछि। ई सीमा संगहि कला अछि: वंशक तीन पीढ़ी समाजशास्त्रीय चित्र नहि, एक स्नानघर आ एक बिजली-बिन्दु साझा करैत वास्तविक व्यक्ति बनैत छथि।

अध्याय ४३ — कोसी — ७

मूल उपन्यास, पृष्ठ २४४-२४६ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पौंजि

तैंतालीसम अध्याय 'कोसी — ७' २०२०क महामारी-कालमे विरल बाट, बन्द विद्यालय, रुकल कारखाना आ घरक भीतर दिन तथा देहक संख्या गनैत लोकसभक दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। नदी अपन चढ़ाव, ढाल आ बालूक तह बुझैत अछि, मुदा मनुष्य जँ ज्वर, ताप, साँस आ दूरी गनैत अछि, तकर मानवीय अर्थक निर्णायक व्याख्याता ओ स्वयं नहि। एहि स्वरक सीमित ज्ञान नदीकेँ सर्वज्ञ न्यायाधीश बनबासँ रोकैत अछि।

कोसीक आवर्ती प्रथम-पुरुष कथन पछिला खण्डसभक अपेक्षा एहि बेर देहक भीतरक संकट आ समाजक स्थगित गतिक दूरी पर टाढ़ अछि। नदीक जल बहैत अछि, मुदा रेल आ सवारी रोकल अछि; प्रकृतिक समय आ मानव-निर्मित प्रतिबन्धक समय एकहि घटनाक अलग लय बनैत अछि। उपन्यास संक्रमणक चिकित्सकीय इतिहास एतय नदीक मुँहसँ नहि कहबैत, बल्कि मनुष्यक व्यवहारक दृश्य-बिम्ब नदीक धारक समानान्तर राखैत अछि।

पंजीकार पहिने जन्म, विवाह, मृत्यु, मूल आ ग्राम लिखैत छलाह; महामारीमे अलग पंजीकरण-पत्र, प्रस्थान-प्रवेश सूची, जाँच-प्रतिवेदन आ क्वारन्टीनक अवधि नवल देहगत कोष्ठ बनबैत अछि। कोसीक आवाज एहन नवल अभिलेखक भारकेँ नदीक बाढ़ि-पछातिक नाम-गिनतीक पुरान क्रमसँ जोड़ैत अछि। एक ठाम पानि भूमि बदलैत अछि, दोसर ठाम अदृश्य संक्रमणक भय लोकक व्यवहार बदलैत; समरूपता साहित्यिक अछि, वैज्ञानिक कारण-समता नहि।

रामानुग्रह, मोहन आ अनुराधाक घर-फेरबाक कथा एहि नदी-खण्डक पाठक स्मृतिमे उपस्थित अछि। जाहि घरमे एके स्नानघरक क्रम लिखल जाइत अछि, ओहि घरक बाहर जल अपन धारक अलग गति रखैत अछि। नदी जानि नहि

सकैत जे ककर घरे कतेक भय वा स्नेह अछि; मानवीकरण एहि अज्ञानकें हटाबैत नहि। ई संयम उपन्यासक व्यापक प्रमाण-नैतिकताक नदीगत समानान्तर अछि।

छठम कोसीमे डिजिटल छवि आ कागजक कोरक रूपक छल; सातम खण्डमे दस्तावेजक लिपिक अपेक्षा शरीरक नियम, ताप आ दूरी अग्रिम होइत अछि। आवर्ती नदी-वाणी प्रत्येक बेर विषय बदलैत अछि, किन्तु विरामहीन वाक्य-विन्यास अक्षुण्ण राखैत अछि। लयक निरन्तरता उपन्यासक खण्डसभ जोड़ैत अछि, मुदा अत्यधिक रूपकीय वक्तव्य यदा-कदा अनुभवकें अलंकारक उदाहरण बनयबाक जोखिम लैत अछि।

भारतीय ध्वनि-विचारसँ बन्द हाट, विद्यालयक मौन आ अबाध नदीक आवाज विपरीत अनुभवक व्यञ्जना बनैत अछि। विदेह समानान्तर पद्धतिमे २०२०क सार्वजनिक स्वास्थ्य-नियम, गामक सामाजिक जीवन आ कोसीक प्राकृतिक परिवर्तनीयता पृथक ऐतिहासिक क्षेत्र छथि। उपन्यासक ई अध्याय एकटा काल्पनिक संवेदनात्मक साक्ष्य अछि, महामारीक सम्पूर्ण चिकित्सकीय अथवा प्रशासनिक इतिहास नहि।

अध्याय ४४ — प्रति-पाँजि

मूल उपन्यास, पृष्ठ २४७-२५२ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

चवालीसम अध्याय 'प्रति-पाँजि' एहि उपन्यासक दीर्घ अभिलेख-अन्वेषणकें तीन पीढ़ीक एक प्रत्यक्ष पाठन-दृश्यमे लऽ अबैत अछि। अनुराधा चार्जरक तार खोजैत मेजक नीचाँक झोला निकालैत छथि; ओहिमे फीका हरियर जिल्दवला प्रति-पाँजि भेटैत अछि। खोज योजनाबद्ध भेदन नहि, घरेलू वस्तुक साधारण आवश्यकतासँ उत्पन्न अछि। ई आकस्मिकता रहस्यक नाटकीय उद्घाटनकें जमीन दैत अछि, तथापि तत्क्षण पोथीक अधिकार-विषयक प्रश्न उठैत अछि।

रामानुग्रह पोथी अपन हाथमे लऽ पुनः देखैत छथि, मुदा आँखि कमजोर भेला कारण अपनहि लिखल अक्षर स्पष्ट नहि पढ़ि सकैत छथि। जकर हाथक पाँतिसँ अनेक परिवारक पूर्वज चिन्हल गेल, ओकर लेख आब नातिनक स्वर द्वारा सुनबाक अछि। एहि दृष्टि-द्वांसमे कथावाचकक ज्ञान-सत्ता पूर्णरूपसँ नष्ट नहि, मुदा एक नवल निर्भरता पैदा होइत अछि। लिखित प्रमाणक भौतिक देह आ पाठकक देह दुनू सीमित अछि।

अनुराधा पाँच आरम्भिक नियम पढ़ैत छथि—अनुमान तथ्य नहि, स्रोत संग प्रविष्टि, अनुपस्थित नाम लेल साक्ष्य, शंका लेल रिक्ति आ मूल पाँति नहि काटब। ई नियम अध्याय ३२मे लेखक-स्वीकृत आत्मसंयम छल; आब ओकर वास्तविक पाठक छथि ओही नातिन जिनकर प्रश्न वर्षों सँ अनुत्तरित रहल। पँजीकारक गुप्त कापी नवल पारिवारिक संवादक सामान्य मेज पर आबि गेल अछि। नियमक नैतिकता आब दादाक एकान्त विवेकसँ बाहर जाँचल जा सकैत अछि।

श्रीधरक उत्तरवर्ती पाँति खुरचल, लिखावट हरिनारायणक लेखसँ मेल खाइत, मुदा मेटेबाक हाथक व्यक्तित्व सिद्ध नहि। फुलझरी आ जगेसरक सम्बन्धक स्रोत अलग; विवाहक दावा प्रत्यक्ष एक स्रोतमे, आनमे परोक्ष। अनुराधा पाठ

पढ़ि प्रश्न करैत छथि; रामानुग्रहक उत्तर अनेक ठाम स्थगित अछि। पोथीक पाठक लेल एहि असमाप्तिकेँ दोष-मुक्ति नहि, साक्ष्यक कड़ा अनुशासन बुझब आवश्यक अछि।

अस्थिक पृष्ठमे पुलिसक क्रमांक आ जाँचक सामग्री अछि, मुदा नामक कोष्ठ खाली। मोहनक नीला फाइल मापन-पुस्तिका, चालीस हजारक प्रेषण आ कारण-सम्बन्ध असिद्ध होयबाक विवरणसँ जुड़ल अछि। ई दुनू पृष्ठ साथ पढ़लासँ अनेक दोषक एक रहस्य बनयबाक प्रलोभन होइत अछि, मुदा प्रति-पाँजि स्वयं रोकैत अछि। अनुराधा पिता दिस देखैत छथि, मोहन कहैत छथि जे ओ पूर्वहि ई बात कहने छथि; एहि क्षणमे भावनात्मक तनाव प्रमाणक स्वतन्त्र विकल्प नहि।

पोथीक एक पाँति मूल पँजीकेँ मूलक साक्ष्य, प्रति-पाँजिकेँ प्रश्नक साक्ष्य कहैत अछि। एहि विभाजनमे लेखक सहायक अभिलेखकेँ मूल इतिहासक प्रतिस्थापन नहि बनबैत। मुदा प्रश्न लिखल गेलाक मात्रसँ पीड़ितक उत्तर प्राप्त होइत नहि। अनुराधाक ओ पाठक छथि जिनका लेल सन्देहक लिखित स्वरूप पहिल बेर उपलब्ध भेल। ई पहुँच अपने आप अन्तरपीढीय न्याय सम्पन्न नहि करैत, मुदा प्रमाण आ अनुभवक साझा धरातल बनबैत अछि।

रामानुग्रह प्रति-पाँजिक एक पाँति स्वयं पढ़ि सकैत छथि कि नहि, अनुराधा पूछैत छथि। आतस-काँच अक्षर पैघ करैत अछि, स्पष्ट नहि। एही क्षणमे उपन्यासक अनेक पुरान रूपक—भीजल अक्षर, उज्जर छायाचित्र, खुरचल पाँति—एक बूढ़ व्यक्तिक दृष्टि-क्षीणतामे मानवीय रूप पबैत अछि। प्रकाश बढेबाक अथवा अक्षर पैघ करबाक उपाय सदैव सत्य स्पष्ट नहि करैत; पाठकक शारीरिक सामर्थ्य सेहो प्रमाणक प्रसारक शर्त अछि।

अनुराधा दादाक शब्द धीरे नाटकीय ढङ्गसँ नहि, अस्पतालक औषधिक नाम पढ़बाक जकाँ पढ़ैत छथि। ई साधारण आवाज उपन्यासक भावुक उत्कर्षकेँ संयमित करैत अछि। नर्सक व्यावसायिक स्पष्टता आ पँजीकारक पुरान

अनुशासन एकहि पाठन-क्रियामे भेटैत अछि। नातिन पोथी फेर झोलामे नहि लुकबैत, मेज पर मूल पँजीसँ पृथक राखैत छथि। अधिकारक प्रश्न खुला रहैत अछि, तथापि पहुँचक स्वरूप बदलल अछि।

मोहन बरामदासँ भीतर आबैत छथि, मुदा तात्कालिक सार्वजनिक पश्चात्ताप अथवा दोषी-घोषणा नहि करैत। रामानुग्रह तेसर पाँति लिखबाक लेल कलम उठबैत छथि, फेर नहि लिखैत। एहि अवरोधमे लेखनक पुरान अभ्यास आ जीवित व्यक्तिसँ संवादक कठिनाई एक संग उपस्थित अछि। भारतीय करुणा-विचारसँ कमजोर दृष्टि आ नातिनक आवाजक संगति भावुकता उत्पन्न करैत, मुदा लेखक स्पष्ट क्षमादान वा पारिवारिक एकता घोषित नहि करैत।

अध्यायक शिल्पगत समस्या ई जे प्रति-पाँजिक पूर्व पाँच नियम आ पहिनुक रहस्य एक बेर फेर विस्तारसँ पढल जाइत अछि; पाठक लेल किछु पुनरुक्ति सम्भव अछि। मुदा एहि बेर नियमसँ अधिक महत्त्वपूर्ण ओकर नवल श्रोता अछि। जे सत्य पहिले एक बूढ़ पँजीकारक निजी विवेक छल, से अब अनुराधाक जाँचयोग्य प्रश्न बनल अछि। एही वक्ता-परिवर्तनमे अध्यायक निर्णायक कलात्मक परिवर्तन अछि।

अध्याय ४५ — जे बाँचल

मूल उपन्यास, पृष्ठ २५३-२५९ · गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

पैंतालीसम अध्याय 'जे बाँचल' उपन्यासक पूर्व प्रश्नकें अनपेक्षित रूपसँ जीवित वंश-शाखा धरि पहुँचबैत अछि। अनुराधा प्रति-पाँजिक 'सन्तान अथवा वंश'क पाँति पर साक्ष्य पूछैत छथि। रामानुग्रह १९३४क बाढ़ि-पछातिक घर-क्षति सूची, अन्न-सहायताक बहि आ नव बसावट-पन्ना निकालैत छथि। पुरान मुसहर टोलक सात परिवार विभिन्न ग्राम-नामक नीचाँ दर्ज छथि; एक पाँतिमे 'दलित सदा परिवारक शेष लोक' लिखल अछि। संख्या आ नामक अभाव ओकर अर्थ अस्थिर रखैत अछि।

बुधन सदाक कथनमे जगेसरक बाबूक नाम दलित सदा आयल छल। केवल एहि मेलसँ लक्षित परिवार पहिचान निश्चित नहि। रामानुग्रह नामक निकटता पर पितृत्वक निष्कर्ष नहि लिखैत। अनुराधा दस्तावेजक धुँधल नाम पढ़ि स्थान देखबैत छथि; तीनू—रामानुग्रह, मोहन आ अनुराधा—किछु दिन पछाति स्थलपर जाएबाक निर्णय करैत छथि। पँजीकारक परिचित घरेलू अभिलेख एहि बेर समुदायक जीवित साक्ष्य भेटबाक बाट बनैत अछि।

एगारह किलोमीटर पूब-दक्खिनक मुसहर टोलमे पहिल दृश्य चापाकल, प्लास्टिकक बाल्टी, चप्पल आ अधसिलल कपडा अछि। लेखक टोलकें केवल सामाजिक पीड़ाक अमूर्त प्रतीक नहि बनबैत; ओतय श्रम आ नित्य जीवन चलैत अछि। सिलाइ-मशीनक संग बाहर आयल लक्ष्मी सदा उपन्यासक एतय निर्णायक जीवित पात्र छथि। हुनकर पास बैंकक बहि, विद्यालयक प्रमाणपत्र, बास-पर्चा आ तीन पुरान कागज अछि। वंश-स्रोत एखन पँजीकारक घरक एकाधिकारमे नहि।

लक्ष्मी देल पहिल निजी विवाह-विवरणमे सुगनी नामक कन्या आ हुनकर माता फुलझरी लिखल अछि; पिताक नामक ठाम स्याही पसरल। दोसर कागज सुगनी सँ बिन्देश्वरक सम्बन्ध, तेसर बिन्देश्वर सँ लक्ष्मीक परिवारक क्रम दैत

अच्छि। दस्तावेज तीनू एक प्रकारक नहि—निजी विवाह-पत्र, ग्रामक हस्तलिखित सूची आ घरक पछिला विवरण—मुदा नामक अनुक्रम मिलैत अछि। एहि संगति सँ मातृक वंश-शाखाक प्रमाण महत्त्वपूर्ण रूपसँ सबल होइत अछि।

सब सँ महत्त्वपूर्ण सीमा जगेसर सदाक पितृत्वक अछि। सुगनीक माता फुलझरी होयबाक लिखित सामग्री उपलब्ध, मुदा पिता-स्थान अपठनीय। लक्ष्मी स्वयं मौखिक परम्परामे मतभेद बतबैत छथि; कियो सम्बन्ध कहैत, कियो नकारैत, आ फुलझरीक अन्तिम जीवन विषयमे सेहो एक मत नहि। तँ सुगनीक जीवित सन्तति उपलब्ध भेलाक अर्थ जगेसरक पितृत्व अथवा विवाह-विधिक स्थिति सिद्ध भऽ गेल नहि। नव्य न्यायगत प्रमाण-भेद एहि अध्यायक केन्द्रमे अछि।

टोलक वृद्ध अपन मायक सुनल कथनक आधारपर फुलझरीक ब्राह्मण घरसँ आगमन बतबैत छथि, मुदा ओ स्वयं फुलझरीकेँ देखने नहि। रामानुग्रह ओकरा द्वितीय श्रेणीक मौखिक साक्ष्य चिह्नित करैत छथि। एहि चरित्रगत संयममे स्मृतिक सम्मान आ प्रत्यक्ष प्रमाणक भेद एक संग सुरक्षित अछि। कथावाचक लक्ष्मीक उत्तरक उत्साहमे स्रोतक स्तर बदलि नहि दैत।

लक्ष्मी पूछैत छथि जे एतेक वर्ष पछाति हुनका किएक खोजल जा रहल अछि, आ एहिसँ हुनका की भेटत। एहि प्रश्नक नैतिक भार पुरान वंश-पत्रक पाठो सँ पैघ अछि। रामानुग्रह परिवारक उपेक्षा सुधारबाक इच्छा रखि सकैत छथि, मुदा लक्ष्मीक वर्तमान आर्थिक अधिकार, सामाजिक हैसियत अथवा व्यक्तिगत सम्बन्ध पर एकतर्फी दावा नहि करैत। उपन्यास एकरा क्षमायाचना-समारोह नहि बनबैत; सिलाइ-मशीनक फेर चलि उठब एहि संयमक प्रभावी ध्वनि अछि।

मूल कागजक छायाचित्र लेल लक्ष्मी अनुमति दैत छथि, मुदा स्पष्ट करैत छथि जे मूल एतहि रहत। अनुराधा पहिले सम्पूर्ण पन्ना, फेर नामवला भागक

छवि लैत छथि; कागज दबबैत नहि। एतय अध्याय ३८क मूल-पत्र संरक्षणक नियम नवल पात्र द्वारा अधिक कुशलतासँ पालन होइत अछि। मूल स्रोत पर लक्ष्मीक अधिकारक सम्मान अभिलेखीय न्यायक अनिवार्य पक्ष बनैत अछि। परिवारक खोजक उत्साह मूलक कब्जा लेबाक औचित्य नहि।

गाम लौटि रामानुग्रह प्रति-पाँजिमे तीन स्रोत पृथक लिखैत छथि: सुगनीक निजी विवाह-विवरण, सुगनी-बिन्देश्वर-लक्ष्मीक लिखित क्रम आ टोलक परोक्ष मौखिक स्मृति। 'सम्भावना' शब्द काटल नहि जाइत; कातमे नवल तिथि सहित जीवित शाखाक साक्ष्य दर्ज होइत अछि। अलग पाँतिमे जगेसरक पितृत्व असिद्ध राखल अछि। ई संशोधन स्रोत जोड़बाक अनुशासन अछि, पुरान संशय लुका देबाक नहि।

दक्षिणक मुसहर टोल, उत्तरक पैघ घर आ १९३४क बाढ़ि-पछातिक विस्थापनकें एकर संग रखला पर मिथिलाक सामाजिक श्रेणी, विवाह-अस्वीकृति, भूमि-संकट आ अभिलेखक असमान पहुँचक प्रश्न उठैत अछि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे एहि परिवारक कागजसँ विशिष्ट व्यक्तिसभक कथा समर्थित अछि; सम्पूर्ण जातिगत इतिहासक बाह्य तथ्य एतबसँ प्रमाणित नहि। मुदा कृतिक भीतर सामाजिक नाम-मेटावनक आलोचना सघन होइत अछि।

भारतीय ध्वनि-विचारसँ सिलाइ-मशीनक रोकब आ फेर चलब अतीतक अन्वेषण आ वर्तमान जीवनक स्वायत्त गतिक बिम्ब अछि। अध्यायक सीमा ई जे लक्ष्मीक वर्तमान जीवन अनेक अभिलेखीय प्रश्नक बीच सीमित शब्द पबैत अछि; हुनकर स्वाधीन आवाजक विस्तार आरो सम्भव छल। तथापि कृति एतय 'हेरायल वंश भेटि गेल' सन पूर्ण समाधान नहि चुनैत। जे बाँचल अछि, से जीवित लोक, कागजक सुरक्षित पाँति आ अनुत्तरित पितृत्वक प्रश्न—तीनूकें संग राखबाक कलात्मक शक्ति एतय प्रमुख अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय ४१-४५

घुरब • तीन पीढी एक कोठली • कोसी — ७ • प्रति-पाँजि • जे बाँचल

एकचालीसमसँ पैतालीसम अध्याय पाँच चरणमे निर्मित अछि—महामारीक बहु-प्रपत्र यात्रा, साझा घरक सूक्ष्म व्यवस्था, नदीक सातम आत्मवाणी, प्रति-पाँजिक पारिवारिक सार्वजनिक पठन आ फुलझरीक जीवित शाखाक बाहरी स्रोत-खोज । पहिल तीन चरण देहक गति, दूरी आ मौन बदलैत अछि; अन्तिम दू ज्ञानक स्वामित्व, प्रमाणक सीमा आ सामाजिक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि । ई क्रम समापनक दिस रहस्यक गति बढबैत अछि, मुदा तात्कालिक नैतिक समाधानक घाई नहि करैत ।

अनुराधाक मस्कट-गया-जिला-प्रखण्ड-पंचायत-गाम वापसीमे प्रत्येक संस्था अपन कागज धरि यात्रा देखैत अछि, अन्तिम सात किलोमीटरक दायित्व अपूर्ण रहैत अछि । घरमे एक स्नानघर आ एक विद्युत्-बिन्दुक साझा प्रयोग फेर स्थानीय सीमा रचैत अछि । नदीक निरन्तरता मनुष्यक एहन बाँटल व्यवस्थाक विरोधी बिम्ब अछि, मुदा प्रकृतिक प्रवाह स्वास्थ्य-नियमक पर्याप्त विकल्प नहि ।

तीन पीढीक मौनक संरचना स्पष्ट अछि: रामानुग्रह प्रति-पाँजिक सम्पूर्ण रहस्य साझा नहि करैत, मोहन अपन पूर्व विभागीय स्वीकारक भार सँ जूझैत, अनुराधा पुरान स्त्रीक नाम विषयक उत्तर खोजैत छथि । घरेलू सहवास एहि मौनक दूरी घटबैत अछि, मुदा केवल घर घुरि अबिते सत्य स्पष्ट नहि । प्रति-पाँजिक आकस्मिक खुलनाइ एहि स्थगित संवादक पहिल वास्तविक परिवर्तन अछि ।

‘प्रति-पाँजि’क पठनमे बूढ़ पँजीकारक दृष्टि कमजोर अछि आ अनुराधाक आवाज ओकर लिखावट पढैत अछि । ई देहगत हस्तान्तरण तुरन्त स्रोताधिकारक हस्तान्तरण नहि, मुदा अभिलेखक पहुँचक नव माध्यम अछि । ‘जे बाँचल’मे लक्ष्मी सदा मूल कागज अपन लग सुरक्षित रखैत छथि आ

छायाप्रतिक अनुमति सीमित रूपमे दैत छथि। दुनू प्रसङ्ग ज्ञानक स्वामित्वक एकल पुरुषपरक केन्द्रकें चुनौती दैत अछि।

अध्याय ४१क प्रपत्रमे एकहि नाम पाँच बेर लिखल जाइत अछि; अध्याय ४५क निजी विवाहपत्रमे एक पिताक नाम अपठनीय रहैत अछि। पहिलमे लिखल सूचनाक पुनरावृत्ति प्रचुर, दोसरमे निर्णायक सूचना अनुपस्थित। अभिलेखीय अन्याय केवल भूलल नाम नहि, कखनो अनावश्यक पुनर्लेखन द्वारा देहगत श्रम बढ़ायब सेहो अछि। दुनू प्रसङ्गक प्रमाण-सीमा अलग अछि।

श्रीधरक खुरचल पाँति, फुलझरीक उपस्थिति, जगेसरक विवाह-कथन, मोहनक असत्य मापन, अस्थिक अज्ञात पहिचान आ सुगनीक मातृक वंशशाखाकें एक कारण-श्रृंखलामे बलपूर्वक नहि जोड़ल जा सकैत। अन्तिम नव कागज फुलझरी-सुगनी-बिन्देश्वर-लक्ष्मीक क्रम पुष्ट करैत अछि, मुदा जगेसरक पितृत्व सिद्ध नहि करैत। नव्य न्यायमे एक साध्यक पक्षमे उपलब्ध हेतुकें दोसर साध्यक प्रमाण बना देब हेत्वाभास होयत।

भारतीय रस-ध्वनि विचारमे महामारीक फाटक पर पोती-दादाक पाँच हाथक दूरी, साझा रसोईक लघु हास्य, कमजोर आँखिक सोझाँ नातिनक पठन, आ लक्ष्मीक सिलाई-मशीनक रुकब-चलन करुणा, हास्य आ आशाक भिन्न पुट उत्पन्न करैत अछि। एहि विविध स्वरक कारण उपन्यासक अन्तिम भाग एकल उदास अन्वेषण नहि रहैत।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रमे २०२०क महामारी वैश्विक घटनाक पार्श्वक रूपमे प्रयुक्त अछि, मुदा कथात्मक दृष्टि प्रपत्र, पयर, रसोई आ घरेलू प्रश्न पर सीमित रहैत अछि। अगिला 'प्रति-पाँजि'मे दृश्य उपस्थित पात्रसभक संवाद, पाठन आ मौनसँ बनैत अछि; ओकर पाछाँ 'जे बाँचल' बहीसँ स्थल-पर्यटन धरि बढ़ैत अछि। दृष्टिबिन्दुक ई लगातार विस्तार पुस्तकक मूल प्रमाण-विषयक शिल्पगत उपलब्धि अछि।

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे १९३४क बाढ़ि-बादक मुसहर टोल, २०२०क विदेश-फेरती नर्स, घरक स्वास्थ्य-नियम आ मैथिल पँजीकारक संस्थागत अधिकारकें यथास्थान राखब आवश्यक अछि। मूल उपन्यास एहि अलग कालसभक निजी साक्ष्य दैत अछि; ओहि साक्ष्यसँ व्यापक महामारी-नीति अथवा जातिगत इतिहासक बाह्य निष्कर्ष स्वतः प्रमाणित नहि।

एहि नवम बैचक समेकित आलोचनात्मक उपलब्धि ई अछि जे 'घुरब' केवल व्यक्ति घर अयब नहि, आ 'जे बाँचल' केवल पुरान नाम भेटब नहि। पहिलमे प्रमाणक कोष्ठसँ छूटल देह अन्ततः सात किलोमीटर चलैत अछि; अन्तिममे मूल पँजीसँ छूटल स्त्रीक वंशशाखा जीवित लोकक अधिकारसहित भेटैत अछि। ई दू दृश्य उपन्यासक नैतिक धुरीक दू छोर बनैत अछि।

अध्याय ४६ — नाम लिखब

मूल उपन्यास, पुस्तक-पृष्ठ २६० . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

छियालीसम अध्याय 'नाम लिखब' उपन्यासक लघुतम मुदा निर्णयकारी संरचनात्मक हस्तक्षेप अछि। अनेक वर्ष, अनेक साक्षी आ अनेक अपूर्ण कागजक अन्वेषण पछाति एतय लेखक संवाद, दृश्य, वर्णन अथवा कथावाचकक टिप्पणी हटाकऽ पाठक सोझाँ नौ पृथक अभिलेखीय पाँति रखैत छथि। 'श्रीधर मिश्र। पिता — वाचस्पति। पितामह — रघुपति' सँ शुरू भेल ई लेख एक शाखाक पुरान अभिजन वंशक्रमक परिचित शैलीमे अछि; किन्तु अगिला पाँतिमे मात्र 'कन्या — फुलझरी' लिखिते वंश-स्मृतिक हटाओल सम्बन्ध मुख्य अभिलेखमे घुसैत अछि। कथाक नाटकीय उत्कर्ष कोनो भावुक पुनर्मिलन नहि, लिखबाक एक ठोस क्रिया बनि जाइत अछि।

अध्याय ४५क समाप्तिमे रामानुग्रह मूल पाँजी आ प्रति-पाँजिक बीच लक्ष्मीक कागजक छापल प्रति रखि नाम लिखब अगिला दिन लेल छोड़ने छलाह। छियालीसम अध्याय ओही स्थगित क्रियाक परिणति अछि। पूर्व अध्यायक दृश्यात्मक सघनता आ एहि अध्यायक शुष्क सूची बीचक अन्तर तत्काल अनुभूत होइत अछि; कथाकार सम्पादकीय भाषण नहि देलनि, पाँजीक लेखन-विधि स्वयं अपन परिणाम देखबैत अछि। अभिलेखक पृष्ठ एतय घटना घटबाक ठाम बनल अछि।

'फुलझरी — जगेश्वर सदा संग गृहस्थ-सम्बन्धक कथन। कुल-अनुमति नहि। विवाह-विधि विवादित'—एहि पाँतिमे तीन स्तर एक संग मुदा पृथक सुरक्षित अछि। एक, जगेश्वर संग सम्बन्धक कथन उपलब्ध; दू, कुल-अनुमतिक अभाव ऐतिहासिक सामाजिक अस्वीकृतिक सूचना; तीन, विवाहक विधिक स्थिति विवादित। एहि तीनूकें एकमात्र 'विवाह सिद्ध' अथवा 'विवाह नहि भेल'मे बदलि देब लेखकक रचल प्रमाण-अनुशासनकें नष्ट करब। 'कुल-अनुमति नहि' कहला सँ सम्बन्ध स्वतः अनैतिक नहि ठहरैत; ई तत्कालीन सामाजिक स्वीकृतिप्रणालीक तथ्यक रूपमे दर्ज अछि।

‘सुगनी — माता फुलझरी। पिता — अपठित; जगेसर सदाक पितृत्व असिद्ध’ उपन्यासक सत्यनिष्ठाक सभसँ कठिन पाँति अछि। पैतालीसम अध्यायक तीन वास्तविक कागजमे सुगनीक माय फुलझरीक नाम उपलब्ध छल, मुदा पिताक नामक मसि पसरल छल; लक्ष्मी सेहो परम्परामे मतभेद स्वीकारने छलीह। एहि कारण मातृवंशीय सम्बन्धक प्रमाणक आधार पर जगेसरक जैविक पितृत्व लिखि देब असंगत होइत। कथामे ‘अपठित’ कागजक अवस्था जनबैत अछि, ‘असिद्ध’ निष्कर्षक प्रमाणिक सीमा। ई दू शब्द पर्याय नहि।

सुगनीक पुत्र बिन्देश्वर आ बिन्देश्वरक कन्या लक्ष्मी—एहि दू संक्षिप्त वाक्यमे ऊ शाखा देखाइत अछि जकरा मूल पँजी सामाजिक कारणें बाहर रखने छल। लक्ष्मी जीवित छथि, अपन मूल कागज अपन घरमे राखैत छथि आ छायाचित्र लेबाक अनुमति केवल जाँचक लेल दैत छथि। अतएव मुख्य वंश-पाँतिमे नाम जुड़ब हुनकर घरक कागज पर रामानुग्रहक स्वामित्व स्थापित नहि करैत। ई अभिलेखीय मान्यता अछि, जीवित व्यक्तिक अधिकारक अधिग्रहण नहि।

‘जीवित वंश-शाखा — एगारह किलोमीटर पूब-दक्खिनक मुसहर टोल’ सामाजिक भूगोलकें पाँजिक तटस्थ लगैत भाषा भीतर प्रवेश करबैत अछि। एगारह किलोमीटरक बाटक दूरी अध्याय ४५मे अनुराधाक मोबाइल नक्शासँ मिलल छल, आ भेटक स्थल चापाकल, सिलाइ-मशीन, टीनक छाजन तथा मूल कागज रखबाक घरक रूपमे उपस्थित भेल छल। कथाकार ‘मुसहर टोल’कें मात्र सामाजिक विशेषण नहि बनबैत; मुख्य पँजीसँ बाहर रहल जीवित अभिलेखक वास्तविक ठाम देलनि।

अन्तिम वाक्य ‘फुलझरीक नाम मुख्य वंश-पाँतिमे पुनः प्रविष्ट’ लिखनिहारक संस्थागत संशोधनक सीमा स्पष्ट करैत अछि। ई रामानुग्रह द्वारा इतिहासक सब क्षतिक मरम्मत नहि; मात्र एक अपूर्ण पाँति पर प्रमाण-संगत दुरुस्ती।

जगेसरक पितृत्व, सम्बन्धक विधि, मृतकक अस्थि-पहिचान आ श्रीधरक मेटल

शब्द एखनो निश्चित नहि भेल । मूल पँजिक नवल पाँति प्रश्नसभकेँ मेटाकऽ विजय-घोषणा नहि करैत ।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ एतय औचित्यक उत्कर्ष अत्यल्प शब्दमे अछिः पूर्वक लम्बा वर्णनक बाद कथाकार अत्योक्ति सँ करुणा जगबैत छथि । कोनो विदग्ध संवाद नहि, कोनो विलाप नहि; ‘अपठित’ शब्दक भीतर एक पूरा विस्थापित मातृवंशक अपूर्णता ध्वनित अछि । तथापि एतेक गहन पाठकीय पृष्ठभूमि बिना ई अध्याय नीरस सूची बुझा सकैत अछि; एकर कलात्मक प्रभाव पूर्व पैतालीस अध्यायक साक्ष्य-संग्रह पर आश्रित अछि ।

नव्य न्यायगत प्रमाण-विचारमे कथन, अपठनीय लेख, अंशतः सिद्ध वंशक्रम, विवादित सम्बन्ध आ अभिलेखीय निर्णयक अलग प्रविष्टि एक मूल अनुशासन बनबैत अछि । प्रमाणक विषय जतेक अछि, निर्णय ओतबहि; शेष लेल निष्कर्ष स्थगित । पाश्चात्य आख्यानशास्त्रमे ई असामान्य अभिलेखीय समापन-पद्धति अछि, जतय विस्तृत दृश्यक स्थान सूची लैत अछि । विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति एतय नाम-वंशक परम्परा, जाति-संरचना आ नदीजनित विस्थापनक अलग स्रोतसभकेँ मिलबैत अछि, मुदा ई सभकेँ एकरेखीय कारणक रूपमे सिद्ध नहि मानैत ।

अध्यायक उपलब्धि ई अछि जे न्याय करबाक अधिकार लेखक अथवा पँजीकार अपन सर्वज्ञतासँ नहि लैत; केवल प्रमाणक सीमा भीतर एक सार्वजनिक प्रविष्टि बदलैत अछि । सीमा सेहो स्पष्ट अछि: नाम पुनः प्रविष्टि होयबाक संस्था-मान्यताक अगिला सामाजिक परिणाम कथामे नहि देखाओल गेल अछि । मुदा लेखकक रचनागत चयन अनुरूप ई अनुपस्थिति सन्देश अछि —लिखल गेल मान्यता आ जीवित सामाजिक स्वीकृति दुनू एक नहि होइत ।

अध्याय ४७ — मृत्यु आ पोथी

मूल उपन्यास, पुस्तक-पृष्ठ २६१-२६५ . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

सैंतालीसम अध्याय 'मृत्यु आ पोथी' अभिलेख-रक्षकक मृत्यु आ अभिलेखक भविष्यक बीच जानि-बुझि कऽ दूरी बनबैत अछि। २०२४क वर्षामे रामानुग्रहक दैनिकी दस-पन्द्रह पाँतिसँ दू-तीन पाँति धरि घटैत अछि; आतस-काँच मेज पर स्थायी वस्तु बनि जाइत अछि। शब्द लिखल रहब आ ओकरा अपन आँखिसँ फेर पढ़ि सकबाक क्षमता एके गति सँ नहि घटैत—एहि नश्वर शारीरिक अवस्थाक भीतर उपन्यासक पुरान सूत्र नवल अर्थ प्राप्त करैत अछि। जकर हाथ पाँजि रचलक, ओकरा आब अपन शब्द अनुराधाक आवाजमे सुनय पड़ैत अछि।

फुलझरीक पुनर्लिखित पृष्ठ सन्दूकक ऊपरक तहमे, प्रति-पाँजि नीचाँ, आ लक्ष्मी देल कागजक छापल प्रति पृथक लिफाफामे अछि। लिफाफाक लिखित संकेत 'स्रोत; मूल नहि' सच्चा कागज आ ओकर प्रतिक भेद सुरक्षित रखैत अछि। नामक पुनःप्रवेश पछाति सेहो जगोसर सदाक पितृत्वक आगाँ नवल मसि नहि चढ़ैत। रामानुग्रहक अन्तिम समयमे सत्यक मात्रा बढ़बाक बदला ओकर सीमा अधिक स्पष्ट होइत अछि।

कुंजीक प्रसङ्ग अत्यन्त सूक्ष्म अछि। रामानुग्रह दैनिकीमे लिखैत छथि जे सन्दूकक कुंजी अनुराधाकें देखाओल; ओ 'हमरा किएक?' पुछैत छथि; उत्तर भेटैत अछि—'ठाम ज्ञात रहय'। 'राखब सेहो हमरा?' पर रामानुग्रह उत्तर दैत छथि—'एखन नहि कहल'। एहिसँ कथामे उत्तराधिकार आ केवल कुंजीक ठाम जनबाक अधिकार अलग राखल गेल अछि। विधिक शिक्षा, सामाजिक स्वीकृति आ वास्तविक सामग्री-सँभार एक दोसरक पर्याय नहि।

रामानुग्रहक अन्तिम पूर्ण पाँति 'कुंजी अनुराधा लग देल' अछि। ओकर नीचाँ 'पछिला बरखा...' लिखि कलमक महीन रेखा झुकि जाइत अछि। कथावाचक स्वयं कहैत छथि जे एहि अधपाँतिक अर्थ देबाक कोनो कारण नहि। लेखक अपन रचनामे अधूरा वाक्यकें बनावटी मृत्युपूर्व सन्देश अथवा भविष्यवाणी

नहि बनबैत । पहिल अध्यायमे मोहनक फोन 'वाक्य अपूर्ण' रूपमे दर्ज छल; अन्तिम दैनिकीमे अपूर्णता स्वयं पँजीकारक देहक सीमा बनि घुरैत अछि । मृत्यु-पूर्व घरक श्रम-विन्यास सेहो अर्थपूर्ण अछि । मोहन छप्परक नालीसँ पात हटबैत छथि, अनुराधा पुरान कपडाक गट्टर देखैत छथि, रामानुग्रह पाँच वस्तुक सूची लिखैत छथि । अगिला भोर मोहन चाह लऽ कऽ जाइत छथि, उत्तर नहि भेटैत; चिकित्सक आवैत छथि; मृत्यु-प्रमाणपत्र नाम, उमेर, ग्राम, दिन आ समय दर्ज करैत अछि । ओकर कारणक कोष्ट चिकित्सकीय अछि, मुदा 'पँजीकार' शब्द कतहु नहि । सरकारी प्रमाणपत्र व्यक्तिक मृत्यु दर्ज करैत अछि, ओकर सम्पूर्ण सामाजिक काज नहि । एहि ठाम उपन्यासक शीर्षकमे निहित अभिलेखक सीमा फेर उद्घाटित अछि ।

अन्त्येष्टिक पछाति परिजनसभक प्रश्न मृत्युसँ पोथी दिस सरकैत अछि— कतेक गट्टर अछि, ग्राहक कतय जाएत, आ पाँजि ककरा देल जाए । मोहन 'पहिने सूची बनत' कहैत छथि । ई उत्तर सम्पत्तिक तुरन्त बँटवारा स्थगित कऽ अभिलेखीय वस्तुस्थितिक प्राथमिकता स्थापित करैत अछि । उपन्यासक दीर्घकालिक नैतिक आग्रह एतय पारिवारिक विवादक क्षणमे परीक्षा दैत अछि ।

अनुराधाक 'हम पुरुष नहि छी' वाक्य कोनो तैयार घोषणापत्र नहि । एक कुटुम्बी कहैत छथि जे परम्परामे पाँजि-काज पुरुष करैत आएल छथि; अनुराधा अपन देहगत पहिचान स्वीकारैत छथि, संगहि 'हम पँजीकार बनय चाहैत सेहो नहि छी' स्पष्ट करैत छथि । तीन पृथक तथ्य—हुनका विधिक शिक्षा नहि, ओ पुरुष नहि, आ ओ अधिकार-व्यवसायक इच्छुक नहि—एके समय कुंजी हुनका लग रहबाक प्रसङ्गमे राखल गेल अछि । ई दृश्य स्त्रीक अभिलेख-संरक्षणक क्षमता आ परम्परागत पदप्राप्तिक प्रश्नक अनावश्यक रूपसँ एक नहि करैत ।

सन्दूक खोलैत समय अनुराधा, मोहन आ दू पँजीकार उपस्थित; क्रम पहिने वस्तु गनबाक अछि, फेर निर्णयक । कपडाक गट्टर, ताड़पत्र, विवाह-विवाद पत्र, दैनिकी, प्रति-पाँजि, पुनर्लिखित पृष्ठ—सभक सूची बनैत अछि । अनुराधा पाठ

पढ़ि सुनबैत छथि, मोहन संख्या लिखैत छथि, पँजीकारसभ सूचीबद्ध क्रम बिना पृष्ठ नहि पलटैत छथि। वस्तु-प्राप्ति, साक्षी आ हस्ताक्षरक प्रक्रिया कथा भीतर वास्तविक क्रियाक रूपमे उपस्थित अछि, केवल 'परम्परा सुरक्षित'क सार-वाक्यक रूपमे नहि।

प्रति-पाँजि पर 'ई पोथी मूल पँजीक स्थान नहि लेत' पढ़लाक बाद ओकरा मुख्य पाँजिक बगलमे रखबाक निर्देश अछि। बगलमे, ऊपर नहि—एकहि स्थानगत निर्णयमे स्रोतक सहअस्तित्व आ भिन्न अधिकारक सीमा उपस्थित अछि। फुलझरीक नवल पाँति देखैत पँजीकार तिथि, मसिक नवलपन आ स्रोत-लिफाफा जाँचैत छथि; मोहन सुधारक पुष्टि करैत छथि; अनुराधा स्रोतक उपस्थिति बतबैत छथि। लेखक एतय भावविह्वल सामूहिक पश्चात्तापक दृश्य नहि रचैत; संशोधनक अभिलेखीय सत्यापन मात्र देखबैत अछि।

सूचीक अन्तिम पाँतिमे 'अस्थायी संरक्षणार्थ अनुराधा मिश्रक सँभारमे' लिखल अछि; संगहि 'स्वामित्व अथवा पँजीकार-अधिकारक निर्णय नहि'। किछु कुटुम्बी हस्ताक्षर नहि करैत छथि, हुनकर उपस्थिति दर्ज होइत अछि आ हस्ताक्षर-स्थान रिक्त रहैत अछि। ई रिक्त मतभेदक यथार्थ चिह्न अछि; सर्वसम्मति कल्पना कऽ नहि जोड़ल गेल। सूची सन्दूकक बाहर पृथक संचिकामे रहैत अछि, मृत्यु-प्रमाणपत्र संग। वस्तुक अधिकार आ ओकर व्यवस्थापनक लिखित साक्ष्य अलग राखल गेल अछि।

पहिल नवल ग्राहकक प्रश्न—रामानुग्रहक मृत्यु पछाति पाँजि आब कतय देखब—समाजक व्यवहारिक आवश्यकता सामने अनैत अछि। अनुराधा सन्दूक खोलि तत्काल 'उत्तराधिकारी' नहि बनैत छथि; मोहन लगक गामक पँजीकारक नाम ग्राहककें लिखि दैत छथि। एहि निर्णयमे संस्थागत निरन्तरता रक्षाक व्यावहारिक बाट अछि, मुदा परिवारक सन्दूक निजी रूपें बन्द रहैत अछि। अन्तिम वाक्य 'घरमे पँजीकार नहि रहल। पोथी एखनहुँ रहल' व्यक्ति, संस्था आ दस्तावेजक तीन भिन्न आयु स्थापित करैत अछि।

भारतीय करुण-रसक दृष्टिसँ मृत्यु भावुक विस्तार नहि, वस्तुक क्रम-विन्याससँ व्यक्त अछि—ऐनकक खोल, आतस-काँच, कलम, कुंजी आ औषधिक खाली पट्टी। औचित्यक दृष्टिसँ पँजीकारक मृत्यु-पछातिक सूची बनबाक प्रक्रिया ओकर जीवनक अभिलेख-अनुशासनक स्वाभाविक अन्तिम परीक्षा अछि। पाश्चात्य आख्यानविचारमे प्रथम पुरुष रामानुग्रहक आत्मवृत्त अचानक मृत्यु-पछातिक तृतीय-पुरुष कथनमे सरकैत अछि; ई बदलाव कथावाचकक शरीरक अनुपस्थितिक संग संगत अछि, तथापि आवाज बदललाक ठाम पाठक सजग रहनाइ आवश्यक। नव्य न्यायगत विवेचनमे अस्थायी संरक्षण, स्वामित्व आ व्यावसायिक अधिकार अलग प्रतिज्ञा अछि; एकर प्रमाण दोसरकें स्वतः सिद्ध नहि करैत।

एहि अध्यायक कलात्मक सीमा ई देखाइत अछि जे अन्तिम सामान-पञ्जी आ हस्ताक्षर-विधानक अत्यधिक क्रमबद्धता शोकक अव्यवस्थित सामाजिक अनुभवकें कने संयत बना दैत अछि। मुदा एकर कथावस्तु-संगति मजबूत अछि—सम्पूर्ण उपन्यासक नैतिकता भावना नकारब नहि, भावनासँ अभिलेखक रिक्ति नहि भरब अछि। 'पोथी एखनहुँ रहल' मृत्यु पर अन्तिम विजय-घोषणा नहि; ओकर अगिला पठन, अधिकार आ संरक्षणक प्रश्न एखनहुँ खुलल अछि।

अध्याय ४८ — कोसी — ८

मूल उपन्यास, पुस्तक-पृष्ठ २६६ सँ उपन्यासक अन्त . गजेन्द्र ठाकुर, जल-पाँजि

अडतालीसम अध्याय 'कोसी — ८' नदीक निरन्तर आत्मवाणीमे पूरा उपन्यासक अन्तिम कलात्मक प्रतिध्वनि रचैत अछि। पहिने सात 'कोसी' खण्डमे नदी मनुष्यक अभिलेख, तटबन्ध, धार, गाद आ नामक समानान्तर अनुभव बतबैत रहल; अन्तिम खण्ड मृत्यु-पछातिक बन्द सन्दूक आ अनुराधाक पीतल कुंजीसँ शुरू होइत अछि। घरक एक सीमित दृश्य नदीक भूगर्भीय दीर्घकाल संग रखल गेल अछि। अभिलेखक हाथ बन्द भऽ गेल, किन्तु नदीक बहाव बन्द नहि भेल।

रचनाक वाक्य-विन्यास लगभग अविराम अछि; 'आ'क पुनरावृत्ति, लम्बा श्वास-जेकाँ चलैत पदसमूह आ विरामक न्यूनता नदीक कालातीत प्रवाहक भाषिक रूप बनबैत अछि। ई शैली तथ्यात्मक विवरणक शान्त गद्यसँ पृथक अछि। पहिल पुरुष 'हम' स्वयं नदी अछि; तथापि एहि 'हम'क मानव-न्यायाधीशक नैतिक चेतना नहि देल गेल अछि। नदी ढलान, अवरोध, दबाव आ गादक भाषा बोलैत अछि; मनुष्यक सामाजिक श्रेणी वा न्याय पर अन्तिम निर्णय नहि सुनबैत।

अध्याय १९३४क धरती हिलब, देवाल खसब, कुआँ टेढ़ होयब, दलित टोलक बहि जाएब आ पुरान जलमार्गक पुनः सक्रिय सम्भावनाक स्मृति उठबैत अछि। पछाति २००८क कुसहा तटबन्ध-दबाव आ धारक बाटक उल्लेख अबैत अछि। मुदा लेखक स्पष्ट रखैत छथि जे १९३४ आ २००८क पथ 'एकहि रेखा नहि'—दुनूक नीचाँक माटि, गाद आ ढलान कतहु-कतहु एक दोसरकँ छुबैत अछि। एहि सूक्ष्म वाक्यक कारण ऐतिहासिक समानान्तरता काल्पनिक भौगोलिक अभिन्नतामे नहि बदलैत।

नदी बारम्बार कहैत अछि जे ओ 'काटल आ लिखल'क भेद नहि करैत; ई भेद मनुष्यक पोथी आ सामाजिक व्यवहारमे बनैत अछि। एहि कारण कोसीक आत्मवाणीकँ जातिगत अन्यायक माफीनामा बना देब गलत होयत। जल

सामाजिक कोष्ठ नहि चिन्हैत अछि, मुदा लोक कछेर, कूप आ भोजनक पाँतिमे जाति पूछैत अछि—पूर्व कोसी-खण्डसभसँ आबि रहल एहि भेदक अन्तिम रूप एतय स्पष्ट अछि। प्राकृतिक असंवेदनशीलता सामाजिक निर्दोषताक प्रमाण नहि।

मूल पँजि, प्रति-पाँजि, दैनिकी, मृत्यु-प्रमाणपत्र आ स्रोतक लिफाफा—पाँच प्रकारक लिखित पदार्थ घरक कात अलग-अलग उपलब्ध अछि। मूल पँजि मान्य परम्पराक कथन, प्रति-पाँजि संशोधन आ शंकाक प्रश्न, दैनिकी अनुभूत समयक सीमित लेख, मृत्यु-प्रमाणपत्र प्रशासनिक सूचनाक कोष्ठ आ स्रोत-लिफाफा बाहरी साक्ष्यक ओर संकेत करैत अछि। नदी एहि सभकेँ जलक प्राकृतिक नियमसँ न तऽ प्रमाणित करैत अछि, न खण्डित। भौतिक परिवर्तनीयता आ सामाजिक सत्यापन समरूप नहि।

फुलझरीक नाम पुनः लिखल गेल अछि; मगर नदीक कथन अनुसार 'जे समाज एक नाम फेर लिखैत अछि ओ पुरान हिंसाकेँ मेटा नहि सकैत'। एहि विचारक वास्तविक कलात्मक सामर्थ्य अछि: पँजीक संशोधन आवश्यक छल, मुदा ओ सर्वसमाधान नहि। लक्ष्मीक घरमे मूल कागज रहनाइ, हुनकर 'हमरा की भेटत' प्रश्न, श्रीधरक मेटल अक्षर, जगेशरक असिद्ध पितृत्व आ रामानुग्रहक मृत्यु—सभक कारण ओहि एक पाँतिक सुधारसँ जीवनक सम्पूर्ण बिखराव दूर नहि होइत।

अस्थिक कण, सिक्का, आध-अक्षर आ बहल काठक सम्भावित फेर-पृष्ठापना वर्णनक एक महत्त्वपूर्ण तर्क अछि। जल वस्तु घुराबि सकैत अछि, अर्थ नहि। अर्थ किनार पर बनैत अछि—हाथ उठबैत अछि, आँखि पडैत अछि, मुँह कथन करैत अछि। एतय नव्य न्यायक प्रमाण-सीमासँ गहरा सम्बन्ध अछि: प्राकृतिक पदार्थक उपलब्धि मात्रासँ ओकर पहिचान वा दोष-निर्णय सिद्ध नहि। कोसीक भाषा वास्तवमे उपन्यासक दीर्घ साक्ष्य-विवादक विपरीत धरातल अछि।

नदीक 'उत्तराधिकार' जलक एक उपधारासँ दोसर उपधारामे जाइब अछि; मनुष्यक उत्तराधिकार कुंजी, पोथी, वंश आ व्यवसाय-सम्मत अधिकारसँ बनैत अछि। अध्याय ४७क अस्थायी संरक्षणक प्रक्रियाक संग ई प्राकृतिक अनवरतता एक तनाव रचैत अछि। नदी लेल पुरुष-स्त्री, योग्य-अयोग्य, पीडित-अपराधी श्रेणी नहि; एहि नकारात्मक वाक्यकें मानवीय सामाजिक न्याय लेल प्रतिरूप नहि मानल जा सकैत। मनुष्यकें एही भेदसभ जाँचबाक दायित्व अछि, नदीकें नहि।

'१९३४ क भीजल चिन्ह २००८ क गादक नीचाँ' आ ओकर ऊपर '२०२४ क घास'—ई कालसम्पर्क उपन्यासक ऐतिहासिक रचनाविधानकें संक्षिप्त बिम्बमे लऽ अबैत अछि। तीन तिथिक साम्य काव्यमय अछि; तथापि ई स्थलवैज्ञानिक सर्वेक्षणक प्रमाण नहि। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिसँ पढ़िते नदी-परिवर्तन, विस्थापन, वंश-अभिलेख, जातिगत अस्वीकृति आ समकालीन पारिवारिक परिवर्तनक समयसभ पृथक राखब आवश्यक।

भारतीय ध्वनि-विचारमे एहि समापनक अविराम उच्चारण अनित्यताक अनुभूति दैत अछि, मुदा रचना पूर्ण निराशाक रस नहि जगबैत। नाम बदलैत अछि; शेष कागज सेहो बचैत अछि; कियो ओकरा फेर पढ़ि सकैत अछि। उपन्यास उत्तर निश्चयपूर्वक नहि देत जे पोथी आव ककर हाथमे कतय जाएत, मुदा सम्भावना समाप्त सेहो नहि करैत। नैतिक उत्तरदायित्व मनुष्यक कात छोड़ि कथा अन्त करैत अछि।

कलात्मक सीमामे कोसीक अंतिम एकहि दीर्घ गद्य-प्रवाहक पुनरावृत्ति किछु पाठक लेल भाषिक एकरसता उत्पन्न कऽ सकैत अछि। गाद, ढलान, बालू, बहाव आ पुरान धारक अनेक सूत्र पूर्व खण्डमे आएल अछि। मुदा अन्तिम पुनरावर्तन मात्र विस्तार नहि; एहि बेर बन्द सन्दूक, मृत पंजीकार आ पुनर्लिखित नाम सभ पूर्व प्राकृतिक बिम्बक संग जोड़ल गेल अछि। एहि कारण पूर्वक सात काव्यात्मक स्वरसभ एक अन्तिम अनिर्णीत प्रश्नमे मिलैत अछि।

उपन्यासक अन्तिम शब्द 'जल' अछि; एतय शीर्षकक 'पाँजि'क संग 'जल'क अन्तिम सम्बन्ध स्थापित होइत अछि। पाँजि लिखित क्रम चाहैत अछि, जल स्थिर क्रम अस्वीकार करैत अछि; दुनू जीवनक चिह्न रखैत अछि, मुदा कोनो एक सम्पूर्ण जीवन नहि कहि सकैत। यही द्वन्द्वमे 'जल-पाँजि'क समापनक मौलिक कलात्मक सामर्थ्य निहित अछि।

अन्तराध्यायिक तुलनात्मक अध्ययन • अध्याय ४६-४८

नाम लिखब • मृत्यु आ पोथी • कोसी — ८

अन्तिम तीन अध्याय तीन विधामे समाप्त होइत अछि—अभिलेखीय प्रविष्टि, मृत्यु-पछातिक दृश्यप्रधान गद्य आ नदीक असीमित आत्मवाणी । छियालीसम अध्यायमे प्रमाणित मातृवंशक लघु पाँति स्थिर होइत अछि; सैंतालीसममे एहि पाँतिक लेखक मरैत छथि आ पोथीक अस्थायी सँभारक प्रश्न उठैत अछि; अड़तालीसममे नदी एहि समस्त लिखित संसारक बाहरो चलैत रहबाक बात कहैत अछि । कथात्मक विराम एतय क्रमशः छोटा सूची, मध्यम आख्यान आ एक दीर्घ अविराम गद्य-प्रवाहमे बँटल अछि ।

तीनू अध्यायक केन्द्रमे अलग-अलग अर्थक 'उत्तराधिकार' अछि । 'नाम लिखब'मे फुलझरी-सुगनी-बिन्देश्वर-लक्ष्मीक मातृक शाखा मुख्य पाँजिमे पुनः स्थान पवैत अछि । 'मृत्यु आ पोथी'मे कुंजी अनुराधाक सँभारमे जाइत अछि, मुदा पँजीकारक पद अथवा स्वामित्व नहि । 'कोसी — ८'मे जलक उत्तराधिकार नदीक निरन्तर भौतिक गति अछि, जाहिमे मानवीय पद वा पात्रता निहित नहि । एहि तीन अर्थकें एकहि वंशक साधारण हस्तान्तरण मानि देब मूल उपन्यासक सूक्ष्म भेदकें मेटाएत ।

सम्बन्धक साक्ष्यमे सेहो तीन विभाजन अछि । छियालीसम अध्याय जगेसरक पितृत्व असिद्ध राखैत अछि; सैंतालीसम अध्याय 'स्रोत; मूल नहि' वला छापल प्रति मूल पाँजिसँ अलग रखैत अछि; अड़तालीसम अध्याय नदी द्वारा फेर भेटल पदार्थसँ व्यक्तिक पहिचान निकालबाक मानवीय प्रक्रियाक अपूर्णता याद दियबैत अछि । एहि त्रयीमे 'भेटल', 'पढ़ल', 'सिद्ध' आ 'स्वीकृत' एक-दोसरसँ अलग क्रमिक अवस्था अछि ।

स्त्रीक उपस्थिति तीन तरहें बदलैत अछि । मुख्य पाँजिमे फुलझरीक नाम लौटैत अछि; अनुराधा पोथीक अस्थायी अभिरक्षिका बनैत छथि, मुदा

पारम्परिक पदक दावेदार नहि; कोसीक वाणी मानवीय पुरुष-स्त्री भेदसँ बाहर अछि। एहि कड़ीमे लक्ष्मी अपन घरक मूल कागज स्वयं राखि, अनुराधा स्रोतक संरक्षण करि, आ रामानुग्रह अपन जीवनक अन्तमे सुधार स्वीकारि तीन अलग नैतिक निर्णयक उदाहरण बनैत छथि।

समय-विन्यासमे नामक पुनर्लेखन वर्तमानक क्रिया, २०२४क मृत्यु एक निश्चित घटनाकाल, आ कोसीक माटिमे १९३४-२००८-२०२४क संचरित चिह्न प्राकृतिक दीर्घकाल उपस्थित करैत अछि। मूल उपन्यासक इतिहासक दिनांक सभ कथा भीतर प्रयुक्त अछि; एकरा स्वतन्त्र शोध-सिद्ध इतिहास मानबाक पहिने बाहरी दस्तावेजी मिलान आवश्यक। कथा अपन प्रमाण-व्यवस्था देखबैत अछि, वास्तविक ऐतिहासिक सत्यापनक विकल्प नहि बनैत।

भारतीय अल्पोक्ति आ ध्वनिक दृष्टिसँ छियालीसम अध्यायक रिक्त स्थान, सैंतालीसमक 'पछिला बरखा...'क अधलिखल पाँति, आ अड़तालीसमक अविराम गद्य तीनू अलग प्रकारक निःशब्दता रचैत अछि। पहिलमे शब्दक न्यूनता, दोसरमे मृत्युजन्य अपूर्णता, तेसरमे विरामहीन शब्दक भीतर अंतिम अर्थक अनुपस्थिति। विरोधी भाषिक युक्तिसभ एकहि रचनाक अन्तिम सम्बन्ध सुरक्षित करैत अछि।

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रमे लेखकक विधा-स्थानान्तरण महत्त्वपूर्ण अछि— बहि, तृतीय-पुरुष कथन, प्रकृति-कथन। नव्य न्यायगत दृष्टिमे ई तीन कथ्य अलग प्रमाणविषय अछि, तँ पाँजिक कथनक सीमा नदीक काव्यात्मक सार्वभौमिकतासँ बदलल नहि जा सकैत। विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धतिमे नदी, विस्थापित टोल, पँजीकार परिवार आ प्रवासी नातिनक जीवन-काल ओहि-ओहि स्रोतक संग पढल जाएत।

एहि दशम बैचक उपलब्धि सम्पूर्ण प्रश्नक समाधानक दम्भ नहि, बल्कि आवश्यक सीमित संशोधनक पछाति जीवित अनिश्चितताक स्वीकार अछि।

कथा नाम लिखबाक नैतिक काज सम्पन्न करैत अछि, मुदा मृत पँजीकारक बदला नव सर्वज्ञ पँजीकार स्थापित नहि करैत । नदी बहैत रहैत अछि; पोथी बचल अछि; भिन्न पीढ़ीक ककरो ओकरा फेर खोलबाक सम्भावना एखनहुँ खुलल अछि ।

सम्पूर्ण उपन्यासक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

१. अभिलेखक द्वैध : जल आ पाँजि

‘जल-पाँजि’क ४८ अध्यायक केन्द्रमे दू एहन व्यवस्था अछि जकर गतिक नियम अलग अछि: कोसीक जल सीमासभकेँ व्यवहारमे बदलैत रहैत अछि, आ पाँजि वंशक नामक सम्बन्धकेँ लिखित क्रममे बाँधबाक प्रयत्न करैत अछि। कुसहाक १८ अगस्त २००८क सटीक घड़ी-दर-घड़ी दैनिकी, १९३४क मेटल वंश-पाँति, १९५०-६०क दशकक विकास-अभिलेख, २०१५क सीमा-पार प्रसङ्ग, २०२०क महामारीक यात्रा आ २०२४क मृत्यु—ई सभ अलग युगक अनुभव एकाधारमे उपस्थित अछि। मुदा उपन्यास ई सबकेँ साधारण कालानुक्रमे नहि, अभिलेख-संग्रहक परत रूपमे पढ़बैत अछि।

जल अतीतक चिह्नकेँ बहा लऽ जाइत, गादमे दबबैत आ कखनो कछेर पर फेर अनैत अछि। पाँजि जे लिखल अछि ओकरा स्थिर मानय चाहैत अछि, किन्तु ओकर लेखनक भीतर सामाजिक पक्षधरता, अज्ञान, मेटल अक्षर आ अधिकारक असमानता अछि। एहि द्वैधक कारण शीर्षक केवल प्रतीक नहि; ई रचनाक तथ्य-निर्माण-पद्धतिक मूल तनाव अछि।

२. रामानुग्रहक दैनिकी आ आत्मसमीक्षाक रूप

रामानुग्रह मिश्रक प्रथम-पुरुष कथा अपन सीमाक असाधारण सतर्कता रखैत अछि। पहिल अध्यायमे ‘ऊपर’ शब्द अनेक भूगोल—नदी, पटना, अभियन्ताक कार्यालय आ आदेशक शृंखला—जनबैत अछि। फोनक अधूर वाक्य ओ अधूर वाक्यें लिखैत छथि। आगाँ भीजल गट्टर पबिते वस्तुक गिनती, स्रोतक श्रेणी आ अनुमानक सीमा निर्धारित करैत छथि। एहि प्रकार दैनिकी निश्चेष्ट पारिवारिक संस्मरण नहि, अपन कथनकेँ स्वयं प्रश्न करबाक निरन्तर अभ्यास बनल अछि।

तथापि ई कथावाचक निर्वैयक्तिक न्यायालय नहि। पारिवारिक मान, ब्राह्मण वंश, परदादाक लिखावट, फुलझरीक मेटल अस्तित्व आ मोहनक विभागीय कथन हुनकर अपन जीवनकेँ छुबैत अछि। अध्याय ३क सात नियम अपन कुलक प्रसङ्गमे सभसँ कठिन परीक्षा पबैत अछि। विश्वसनीय कथावाचक होयबाक अर्थ ओ सब देखैत छथि नहि; अर्थ ई जे ओ कखन नहि जानैत छथि, से स्पष्ट करैत छथि।

३. पात्र, सामाजिक अधिकार आ सम्बन्धक प्रमाण

रामानुग्रहक समकक्ष स्वयं सामाजिक स्मृति नहि, ओकर लिखित-सामाजिक साक्ष्यसभ अछि। फुलझरी अनेक वर्षक वंश-पाँतिसँ अनुपस्थित छलीह; सुगनीक माता-नाम बाहरी निजी विवरणमे जीवित अछि; बिन्देश्वर आ लक्ष्मी धरि परिवारक क्रम घरक कागजमे बचल रहल। लक्ष्मी संक्षिप्त प्रश्न 'हमरा की भेटत?' द्वारा ब्राह्मण घरक देरिसँ पहुँचल सुधारकेँ सामाजिक लाभ वा क्षतिपूर्तिक रूपमे स्वतः मानि लेबाक विरोध करैत छथि। एतय पात्रक स्वाधीनता मुख्य अभिलेखमे प्रवेश पाबि गेलाक बादो स्वतंत्र रहैत अछि। अनुराधा विदेशी चिकित्सा-श्रम, आर्थिक अनुबन्ध, स्वर-सन्देश, डिजिटल नक्शा, स्वास्थ्य-नियम आ पारिवारिक पाठक नवल सम्बन्ध जोड़ैत छथि। ओ दादाक लेख पढ़ि सुनबैत छथि, लक्ष्मीक कागजक छायाचित्र लेल अनुमति लैत छथि आ मृत्यु-पछाति पोथीक अस्थायी सँभार स्वीकारैत छथि; मुदा परम्परागत पंजीकारक पद अथवा सम्पत्तिक स्वामी स्वयं घोषित नहि करैत छथि। मोहनक अनुचित मापन-संबन्धी स्वीकार ओकर नैतिक जटिलता खोलैत अछि, किन्तु ओ स्वीकृति मात्रासँ कुसहा तटबन्धक टूटनक विशिष्ट कारण सिद्ध नहि होइत।

४. ४८ अध्यायक बहुविध रचनाविधान

उपन्यासक दीर्घ विन्यास एकहि कथन-स्वर पर आश्रित नहि। रामानुग्रहक दिनांकित डायरी, साक्षीसभक कथन, अभिलेखक नकल, अनुराधाक मोबाइल स्वर-सन्देश, वस्तु-पञ्जी, नक्शा, घरेलू संवाद, नदीक आठ आत्मवाणी आ अन्तिम संक्षिप्त पुनर्लेखन-प्रविष्टि—ई सभसँ बहुखण्डीय आख्यान बनैत अछि। अष्ट ‘कोसी’ खण्डसभ नदीक भौतिक कालकें व्यक्तिक दिनांकित समयक समानान्तर रखैत अछि। अड़तालीसम खण्डमे नदीक अविराम वाक्य-प्रवाह समापनक निश्चितताकें अस्वीकार करैत अछि।

कालानुक्रमिक उलटबदल, विशेषतः २०१६क खाली घरक पाछाँ २०१५क काठमाण्डू-मधेसक प्रसङ्ग, कथा संरचनाक सचेत चयन अछि। अभिलेखमे खोज करनिहार प्रायः क्रमसँ नहि, भेटल स्रोतक पाछाँ-पाछाँ चलैत अछि। एहि कारण पूर्व घटना अगिला अध्यायमे खुलि सकैत अछि; मुदा पाठक लेल काल-क्रमक जाँचक आवश्यकता बढ़ैत अछि।

५. भारतीय काव्यशास्त्रसँ पुनर्पाठ

रस-दृष्टिसँ उपन्यासक करुणा बाढिक दृश्यमात्रसँ नहि, नाम कटबाक अपमान, प्रमाणहीन अस्थि, अपन देहक थकान आ मृत्युक पछाति अधलिखल डायरीसँ बनैत अछि। ध्वनि-जगतमे भीजल पन्नाक गन्ध, सिलाइ-मशीनक रुकब, फोनक चुप्पी, कुंजीक ठाम आ आतस-काँच बारम्बार उभरैत अछि। वक्रोक्तिक महत्त्व ओहि ठाम बढ़ैत अछि जतय ‘सुरक्षित’ शब्दक नीचाँ लाल रेखा अछि आ अन्तमे ‘पोथी एखनहुँ रहल’ कहला परो ओकर भवितव्य अनिश्चित अछि।

औचित्यक कसौटी पर सर्वाधिक सफल प्रयोग छियालीसम अध्यायक पाँति-रूपान्तरण अछि। कथाकार जतेक दीर्घ प्रमाण-संग्रह कएने छथि, तकर समाधान एक लघु अभिलेखमे संक्षिप्त करैत छथि। तथापि नदीक आठ बेर

आवृत्त पदावली कतहु काव्यात्मक विस्तारक अति-आवर्तन जेकाँ लागत; ई रचनाक सीमा देखब आवश्यक, बिना ओकर समेकित अर्थ घटौने।

६. पाश्चात्य आख्यानशास्त्र आ नैतिक प्रश्न

पाश्चात्य आख्यानशास्त्रमे एहि कृतिक विशेषता दस्तावेजी आख्यानक समक्ष अविश्वासपूर्ण स्रोत-अनुशासन अछि। कथा दस्तावेजकेँ सम्पूर्ण वस्तुनिष्ठ सत्य नहि मानैत; ओ देखबैत अछि जे दस्तावेज लिखनिहारक इच्छा, संस्थागत कोष्ट, जातिगत पदानुक्रम आ बादक मेटल चिह्नक अधीन अछि। एहि कारण पात्रसभ पाठक समक्ष दत्तक सूचना नहि, विरोधी साक्ष्य लऽ कऽ अबैत छथि। कथावाचक द्वारा अपन अनुमानक सीमा उद्घाटित करनाइ एतय विश्वसनीयताक मूल कसौटी अछि।

कथामे ककरो नाम मुख्य पँजिमे प्रविष्ट करब आ ओकर जीवन सुधारि देब एक नहि। लक्ष्मीक मूल कागज हुनक घरमे रहबाक निर्णय, अनुराधाक अधिकार नहि माँगबाक निर्णय, आ मृत्यु-पछातिक अस्थायी संरक्षण संदेहकेँ नैतिक दायित्वसँ पृथक नहि करैत। उपन्यास प्रश्न करैत अछि जे अभिलेख-रक्षक जे नाम हटौलनि अथवा बचाबि नहि सकलनि, तकर सुधारक सीमा कतय धरि अछि।

७. नव्य न्याय : प्रमाण, संशय, अनुपलब्धि

नव्य न्यायगत आलोचना यहाँ कथा पर बाहरसँ आरोपित कृत्रिम सूत्र नहि, ओकर भीतरी परीक्षण-विधि सँ निकलैत अछि। ‘हम सुनल’ आ ‘हम देखल’ अलग प्रमाण-वाक्य; मूल पन्ना आ ओकर छायाचित्र अलग वस्तु; ‘अपठित’ अक्षरक अवस्था, ‘असिद्ध’ सम्बन्धक निर्णय; सामाजिक स्वीकृति आ दैहिक पितृत्व भिन्न प्रतिज्ञा। एहि भेदसमूहक लेल प्रत्यक्ष, शब्द-प्रमाण आ अनुमानक सम्बन्ध जाँचल जा सकैत अछि। अस्थिक प्राप्ति सँ मृतकक निश्चित नामक

अनुमान व्याप्ति बिना निष्कर्ष होयत; मोहनक मापन-स्वीकार सँ तटबन्धक निश्चित भंग-कारण सिद्ध मानब सेहो हेत्वाभासक सम्भावना रखैत अछि।

किछु विशेष अभाव—जैसे पिता-नामक अपठनीयता अथवा मूल पाँजिमे फुलझरीक नाम नहि भेटब—स्वयं नकारात्मक सूचना देत अछि, मुदा सूचना-सीमा भीतर। ‘जे लिखल नहि गेल’ एखन धरि नहि लिखल सम्बन्धक अभाव अछि; सम्बन्ध स्वयं कखनो अस्तित्वमे नहि छल, ई निष्कर्ष नहि। एहि नकारात्मक साक्ष्यक नैतिक बोध रचनाकें विशेष गम्भीर बनबैत अछि।

८. विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पद्धति

विदेह समानान्तर ऐतिहासिक पठनमे कोसीक गतिशील भूगोल, १९३४क विस्थापन-स्मृति, १९५०-६०क बान्ह-नक्शा, २००८क कुसहा, २०१५क काठमाण्डू-मधेस, २०२०क महामारी आ २०२४क अभिलेख-सँभार अलग-अलग समसामयिक तथा अतीतगत धरातल अछि। लेखक एहन समयसभकें पारिवारिक पोथीक माध्यमँ जोड़ैत छथि, मुदा कथा भीतरक सार्वजनिक घटनाक विवरण स्वतन्त्र दस्तावेजी इतिहासक स्वतः प्रमाण नहि मानल जायत। वास्तविक ऐतिहासिक दावा करबाक लेल स्वतन्त्र मूल स्रोतसँ मिलान आवश्यक।

एहि पद्धतिमे सामाजिक संस्थासभक समानान्तर विकास महत्वपूर्ण अछि। मिथिलाक पँजी, मुसहर टोलक निजी कागज, जल-संसाधन विभागक मापन-पुस्तिका, नेपाली सीमा-पार वंश-सन्दर्भ, प्रवासक वेतन-पर्ची, अस्पतालक निबन्धन आ मृत्यु प्रमाणपत्र—प्रत्येक अपन कार्यक्षेत्रक सत्य बनबैत अछि। एक संस्थाक ‘रिक्त’ कखनहुँ दोसर घरक जीबित स्मृतिक नकार नहि।

९. संरचनात्मक सफलता आ आलोचनात्मक सीमा

उपन्यासक मुख्य सफलता एतय अछि जे ‘भेटल वस्तु’ कें तत्काल कथानकक अन्तिम उत्तर नहि बनाओल गेल। गट्टरक भीजल पन्ना, पुरान सर्वे-नक्शा, मौखिक साक्षी, परिजनक स्वीकार, टोलक कागज आ नदीक भौतिक चिह्न—

सभ अपन-अपन सीमा रखैत अछि। पाठककें एहि असमान प्रमाणसभक बीच सक्रिय विवेक सँ पढ़य पड़ैत अछि। 'नाम लिखब'क नौ पाँतिक शक्ति एहि दीर्घ अन्वेषणक उपर टिकल अछि।

सीमाक चर्चा समान आवश्यक अछि। किछु विस्तृत वस्तु-सूची आ प्रक्रिया-वर्णन कथात्मक गति कम करैत अछि; स्वर-सन्देश किछु ठाम अनुभवक स्वतःस्फूर्ततासँ अधिक व्यवस्थित विचार-वाक्य जेकाँ लागैत अछि; नदीक अविराम गद्यक पुनरावृत्ति पाठकीय ध्यानक विशेष अपेक्षा करैत अछि। सामाजिक पदानुक्रमक अनुपस्थित लोकसभक अनेक जीवन पाठक केवल बाहरी कागज सँ जानैत अछि; फुलझरीक अपन प्रत्यक्ष वाणी उपलब्ध नहि। एहि अभावकें लेखकक सचेत प्रमाण-संयम मानि पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा ऐतिहासिक स्त्री-पात्रक अन्तर्दृष्टिक सीमित स्थान आलोचनाक वैध प्रश्न सेहो अछि।

१०. समेकित निर्णय

'जल-पाँजि' मूलतः त्रासदीक बाद एकटा सहज न्याय-विजयक कथा नहि। ई प्रमाण बनबाक सामाजिक प्रक्रिया, संस्था द्वारा नामक स्वीकृति-अस्वीकृति, प्राकृतिक विनाशक दीर्घकाल आ जीवित स्मृतिक अधिकार विषयक मैथिली उपन्यास अछि। ४८ अध्यायक विन्यासमे अंतिम प्राप्ति सीमित मुदा वास्तविक अछि—फुलझरीक नाम मुख्य वंश-पाँतिमे फेर लिखल गेल।

जगेसरक पितृत्व असिद्ध, अन्याय पूर्णरूपेँ अमेटल, स्वामित्व अनिर्णीत, नदी चालू। एहि त्रुटिहीन सर्वसमाधानक अस्वीकृतिमे उपन्यासक नैतिक गरिमा अछि।

रामानुग्रहक अन्तिम आधा वाक्य पर कियो नवल शब्द नहि जोड़ैत; अनुराधा पोथीकें मूलक बगलमे रखैत छथि; लक्ष्मी अपन घरक मूल कागज सँभारैत छथि; कोसीक अन्तिम आवाज मनुष्यक निर्णयक बाहर बहैत अछि। लेखकक कलात्मक निष्कर्ष ई जे पाँति ठीक करब आवश्यक अछि, मुदा जीवन पाँतिक

बाहर सेहो चलैत अछि । एहि बिन्दु पर कथा पाठककें पूर्णता नहि,
उत्तरदायित्व सौँपैत अछि ।

ग्रन्थाधार

ठाकुर, गजेन्द्र । जल-पाँजि । मूल मैथिली उपन्यास । मूल मुद्रण-सज्जित
संस्करणक अधिकार-सूचना: © गजेन्द्र ठाकुर/प्रीति ठाकुर, २०१३/२०२६ ।

जल-पाँजि — आलोचनात्मक अध्ययन

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड १५

कोसीक बदलैत धार आ मिथिलाक वंश-पाँजि
एकहि कथामे स्मृति, अभिलेख आ अधिकारक
अलग-अलग सत्यक परीक्षा करैत अछि।

रामानुग्रह मिश्रक दैनिकी, मोहनक विभागीय
कागज, अनुराधाक स्वर-सन्देश आ फुलझरीक
मेटायल नाम—ई सभ प्रश्न उठबैत अछि जे
केकर जीवन इतिहासमे लिखल जाएत
आ केकर नाम बाहर रहि जाएत।

एहि खण्डमे मूल उपन्यासक ४८ अध्यायक
स्वतंत्र विस्तृत समीक्षा, दस अन्तराध्यायिक
तुलनात्मक अध्ययन आ सम्पूर्ण कृतिक
समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन प्रस्तुत अछि।



विदेह

videha.co.in



विदेह — गिटहब

[videha-ejournal.github.io](https://github.com/videha-ejournal)